



شماره

مضمون

ون

| | |
|---------|--|
| 1..... | 1. سريزه |
| 10..... | 2. د جنت په اړه ځينې قرآني آيتونه |
| 20..... | 3. د جنت په اړه نبوي احاديث |
| 31..... | 4. نكتې |
| 41..... | 5. معلوم جنتيان |
| 41..... | 6. عشرة مبشرة |
| 43..... | 7. حضرت جعفر بن ابي طالب |
| 46..... | 8. حضرت حمزة |
| 47..... | 9. حضرت عبد الله بن سلام |
| 49..... | 10. حضرت زيد بن حارثه |
| 49..... | 11. د غزوة مؤتة درى قائدين |
| 51..... | 12. يو تور سړى |
| 51..... | 13. حضرت عمرو بن الجموح |
| 54..... | 14. عكاشة بن محصن الأسدي |
| 54..... | 15. حضرت زيد بن عمرو بن نفيل |
| 54..... | 16. الغميصاء (د حضرت انس بن مالك مور) |
| 55..... | 17. حسنين |
| 56..... | 18. حضرت بلال |
| 57..... | 19. الأصيرم عمرو بن ثابت |
| 59..... | 20. حضرت حارثة بن النعمان |
| 59..... | 21. آل ياسر |
| 60..... | 22. حضرت ابو الدحداح |
| 61..... | 23. حضرت ورقة بن نوفل |
| 62..... | 24. صحابه بالعموم |
| 63..... | 25. تر قيامت وړاندې جنت ته ننوتلي |
| 65..... | 26. د جنت نومونه |
| 65..... | 27. جنت |
| 65..... | 28. دار السلام (د امن كور) |
| 65..... | 29. دار الخلد (د هميشه پاتې كېدلو كور) |
| 66..... | 30. دار المقامة (د پاتې كېدلو ځاى) |
| 67..... | 31. جنة المأوى (د سكون او قرار ځاى) |
| 67..... | 32. جنات عدن (د دوام او هميشه والي جنتونه) |
| 67..... | 33. دار الحيوان (د ژوند ځاى) |
| 68..... | 34. الفردوس (باغ) |
| 68..... | 35. جنات النعيم (د نعمتونو جنتونه) |
| 68..... | 36. المقام الامين (د امن ځاى) |

| | |
|-----|--|
| 37. | مقعد صدق (د رشتيا د ناستي ځای)..... 69 |
| 38. | د جنت مرتبي 69 |
| 39. | د جنت تر ټولو ښکته مرتبه..... 77 |
| 40. | د جنت بوی 80 |
| 41. | د جنت دروازي 83 |
| 42. | د جنت کيلي 87 |
| 43. | د جنتيانو استقبال..... 88 |
| 44. | جنت ته ننوتل..... 91 |
| 45. | جنت ته به اول څوک ځي ؟ 92 |
| 46. | وخت په جنت کې..... 95 |
| 47. | د جنت نعمتونه..... 97 |
| 48. | د جنت تعمير 102 |
| 49. | د جنت تر ټولو لوی نعمت..... 103 |
| 50. | د جنتيانو خوراک..... 105 |
| 51. | د جنت ونې او ميوې..... 109 |
| 52. | د طوبی ونه 115 |
| 53. | د جنتيانو څښاک..... 116 |
| 54. | جنتي شراب..... 119 |
| 55. | جنتي عسل (شهد)..... 119 |
| 56. | جنتي شودي 119 |
| 57. | د جنت نهرونه 120 |
| 58. | نهر الکوثر..... 126 |
| 59. | حوض کوثر ته به اول څوک ورځي؟..... 128 |
| 60. | نهر البیدخ..... 128 |
| 61. | نهر بارق 129 |
| 62. | د جنت چيني 130 |
| 63. | جنتي چينه عين الکافور..... 132 |
| 64. | جنتي چينه عين التسنيم..... 132 |
| 65. | جنتي چينه عين السلسبيل..... 133 |
| 66. | جنتي چينه عين زنجبيل..... 134 |
| 67. | په جنت کې مارغان او حيوانات..... 134 |
| 68. | د جنت کورونه 136 |
| 69. | د جنتيانو کوټي..... 138 |
| 70. | د جنتيانو ځيمي..... 141 |
| 71. | د جنت فرشونه او تختونه..... 142 |
| 72. | د جنت لوبښي..... 144 |
| 73. | د جنت جامي..... 146 |
| 74. | د جنت د جامو رنگ..... 149 |

| | | |
|-----|---------------------------------------|-----|
| 150 | ولي شين رنگ؟ | 75 |
| 151 | په جنت کې اول جامه | 76 |
| 152 | د جنت خادماني | 77 |
| 153 | د جنت مجلسونه | 78 |
| 154 | جنتيان به څنگه خبرې به کوي؟ | 79 |
| 156 | د جنتيانو ارمانونه | 80 |
| 157 | د جنت حورې | 81 |
| 160 | د جنت بيبياني | 82 |
| 162 | د جنتيانو ماشومان | 83 |
| 166 | د جنتيانو له دوزخيانو سره خبرې | 84 |
| 168 | جنتيان به په جنت کې همېشه وي | 85 |
| 173 | جنت ته به څوک ځي؟ | 86 |
| 175 | ايمان او نيك عمل کونکي | 87 |
| 176 | اطاعت کوونکي | 88 |
| 177 | هغه کسان چې پرهيزگاران وي | 89 |
| 181 | د الله په دين باندې ټينگ پاتې کيدونکي | 90 |
| 181 | عاجزي کوونکي | 91 |
| 182 | په آيتونو کې غور کوونکي | 92 |
| 183 | مونځ کوونکي | 93 |
| 186 | د الله له عذابو ډارېدونکي | 94 |
| 187 | له لويو گناهونو ځان ساتونکي | 95 |
| 187 | مشوره کوونکي | 96 |
| 188 | د بدو په ځواب کې ښه کول | 97 |
| 189 | ريښتينی | 98 |
| 191 | زکات ورکونکي | 99 |
| 192 | هغه کس چې له شرک نه ځان ساتي | 100 |
| 193 | بښنه کوونکي | 101 |
| 193 | نيک عمل | 102 |
| 195 | روژه نيوونکي | 103 |
| 197 | درواغ نه ويونکي | 104 |
| 198 | جهاد کوونکي | 105 |
| 200 | خپل نفس ساتونکي | 106 |
| 200 | د الله د حدونو ساتونکي | 107 |
| 201 | په خپله گواهي درېدونکي | 108 |
| 203 | د کفارو سره دوستي نه کوونکي | 109 |
| 204 | شهيد | 110 |
| 206 | هغه چې زنا نه کوي | 111 |
| 208 | اسراف نه کوونکي | 112 |

| | | |
|----------|---|------|
| 209..... | مهاجر | 113. |
| 210..... | توبه ايستونكي | 114. |
| 211..... | قناعت كونكي | 115. |
| 212..... | دعا كونكي | 116. |
| 213..... | په سحر کې بشنه غوښتونكي | 117. |
| 214..... | نفس مطمئنه | 118. |
| 215..... | صبر كوونكي | 119. |
| 218..... | وړيو ته خوراك وركوونكي | 120. |
| 219..... | ډېر ذكر كوونكي | 121. |
| 220..... | نذر پوره كونكي | 122. |
| 220..... | عبادت كونكي | 123. |
| 222..... | آمر بالمعروف ناهي عن المنكر | 124. |
| 224..... | مهاجرين او انصار | 125. |
| 225..... | توكل كونكي | 126. |
| 226..... | د الله د رضا لپاره مصرف كوونكي | 127. |
| 229..... | هغه كس چې كبر نه كوي | 128. |
| 229..... | د الله ډېر حمد ويونكي | 129. |
| 230..... | په زمكه كې فساد نه كوونكي | 130. |
| 230..... | ډېرې نيكې كونكي | 131. |
| 231..... | امانت او وعده ساتونكي | 132. |
| 233..... | د ديني طالب | 133. |
| 233..... | د جومات جوړونكي | 134. |
| 234..... | د هر اوداسه نه وروسته مونځ كوونكي | 135. |
| 235..... | له جگړې ، درواغو او بد اخلاقي ځان ساتونكي | 136. |
| 235..... | په جمع مونځ كوونكي | 137. |
| 235..... | ډېرې سجدې كوونكي | 138. |
| 236..... | ښه حج كوونكي | 139. |
| 236..... | آية الكرسي تلاوت كوونكي | 140. |
| 237..... | سيد الاستغفار ويونكي | 141. |
| 238..... | په ورځ كې ۱۲ ركعتنه سنت كوونكي | 142. |
| 238..... | له اوداسه نه وروسته دعاء كوونكي | 143. |
| 238..... | د اولاد په جدایي صبر كوونكي | 144. |
| 240..... | د يتيم كفالت كوونكي | 145. |
| 240..... | د بيمار پوښتنه كوونكي | 146. |
| 241..... | له هر مانځه نه وروسته تسبیح ويونكي | 147. |
| 242..... | په ړوندوالي صبر كوونكي | 148. |
| 243..... | غريب ته مهلت وركوونكي | 149. |
| 243..... | په تجارت كې اساني كوونكي | 150. |

| | | |
|------|---|-----|
| 151. | سورة اخلاص زيات ويونكى..... | 243 |
| 152. | له لاري ضرر لري كوونكى..... | 245 |
| 153. | دخپلو جينكو پالونكى..... | 245 |
| 154. | سلام خپرونكى او له مسلمانانو سره مينه كوونكى..... | 245 |
| 155. | د خاوند اطاعت كونكي ښځه..... | 246 |
| 156. | له خلكو څخه سوال نه كوونكى..... | 247 |
| 157. | د مور پلار سره ښه كوونكى..... | 247 |
| 158. | د ښه زړه لرونكى..... | 248 |
| 159. | له حيواناتو سره نيكې كوونكى..... | 250 |
| 160. | د سحر او ماسخوتن مونځ كوونكى..... | 250 |
| 161. | د فرج او ژبې ساتونكى..... | 251 |
| 162. | سبحان الله و بحمده ويونكى..... | 251 |
| 163. | نيك عملونه كوونكى..... | 252 |
| 164. | د الله لپاره مينه كوونكى..... | 253 |
| 165. | د بازار دعاء ويونكى..... | 254 |
| 166. | د مانځه په صفونو كې خاليگاه ډكوونكى..... | 254 |
| 167. | د خاښت په وخت ۱۲ ركعته مونځ كوونكى..... | 255 |
| 168. | ماخذونه..... | 256 |

الحمد لله رب العالمين، اللهم صلّ على محمد وآله وسلم وبارك، اللهم إنّنا نسألك من الخير كله عاجله وأجله ما علمنا منه وما لم نعلم، ونعوذ بك من الشر كله عاجله وأجله ما علمنا منه وما لم نعلم، اللهم إنّنا نعوذ بك من فتنة القول والعمل، آمين اللهم آمين، أمّا بعد:

سريزه

جنت هغه لوی اجر او عظیم ثواب دی چې الله خپلو دوستانو ته او هغه کسانو ته تیار کړی چې په دنیا کې د اسلامي تعلیماتو مطابق ژوند وکوي د جنت نعمتونه داسې نعمتونه دي چې هېڅ ډول نقص پکې نه وي او نه پکې څه ډول کمزوري وي داسې نعمتونه دي چې انسانانو نه په دنیا کې لیدلي، نه یې اورېدلي دي او نه د چا په زړه کې ورتېر شوي دي په دنیا کې یې الله او د هغه رسول مونږ ته صرف په هغه اندازه ذکر کړی دی چې مونږ ورباندې پوهیږو او د هغه نعمتونو حقیقي ذکر او بیان په دنیا کې هېڅ الفاظ نلري او انساني عقل په دنیا کې د هغه نعمتونو د ادراک نه عاجز دی په یو حدیث قدسي کې الله فرمایي: **أَعَدَدْتُ لِعِبَادِي الصَّالِحِينَ مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ، وَلَا أَذُنٌ سَمِعَتْ، وَلَا خَطَرٌ عَلَى قَلْبٍ** بشر (ترجمة: ما د نیکانو بندگانو لپاره داسې نعمتونه تیار کړي دي چې نه سترگو لیدلي دي نه غوړونو اورېدلي دي او نه د کوم انسان په زړه کې ورت تېر شوي دي) ددې حدیث نه وروسته رسول الله ﷺ وفرمایل که پدې اړه ستاسې خوښه وي دا آیت تلاوت کړئ: **فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءُ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ**¹.

ترجمة: پس نه دی معلوم هېڅ نفس ته (نه فرېښتي

او نه نبي ته) هغه شی چې پټ کړل شوی دی دوی ته له یخوالي د سترگو نه د پاره د جزاء د هغه عمل چې وو دوی چې کاوه به یې (پټ) .

په دنیا کې چې څومره نعمتونه دي هغه د جنت د ادنی ترین نعمت سره بالکل د مقایسې وړ نه دي لکه وروسته به هم راشي چې په دنیا کې که څوک د ټولې دنیا واکدار شي او په دنیا کې چې څومره قیمتي شیان دي د هغې ټولو مالک شي او دا ټول د دنیا شیان او نعمتونه د خپل ځان لپاره وکاروي او استعمال کړي ددې هرڅه سره په دنیا کې د یو ادنی جنتي سره د یو ادنی نعمت په اندازه سهولت ځان ته نشي برابرولی ددې امله خو حضرت سهل بن سعد الساعدي فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي : موضع سوط في الجنة خير من الدنيا وما فيها .¹

ترجمة : په جنت کې د یوې ذرې په اندازه ځای تر ټولې دنیا او هغه څه نه غوره دی چې په دنیا کې دي .

ددې امله خو چې څوک جنت ته ننوزي دا په رښتیا سره کامیاب شول او همدا رښتینې کامیابي ده الله فرمایي : كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ .²

ترجمة : هر یو نفس ځکونکی د (خوند) د مرګ دی او بېشکه هم دا خبره ده چې پوره به درکړل شي تاسې ته اجر و نه ستاسې په ورځ د قیامت کې نو هرڅوک چې لرې کړل شو له اوره (د دوزخ) او داخل کړل شو جنت ته نو په تحقیق مراد ئې وموند (بریالی شو) .

¹ صحیح البخاري

² سورة آل عمران آية ١٨٥

په بل ځای کې الله فرمایي : تَلَكْ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ¹

ترجمة : دا (د یتیمانو ، میراثونو ، وصیت او د دین تېر شوي حکمونه) حکمونه د الله دي او هرڅوک چې ومنې حکم د الله او د رسول د ده نو داخل به کړي الله دغه (اطاعت کونکي په هسې) جنتونو کې چې بهیري له لاندې د (مانیو او ونو) د هغو ویالې همېشه به وي (دوی) په دې (جنتونو) کې او دا (ننوتل جنت ته) کامیابي لو یه ده .

په بل ځای کې الله فرمایي : وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ.²

ترجمة : وعده کړېده الله له نارینه وو مؤمنانو او له ښځو مؤمناتو سره د جنتونو چې بهیري له لاندې (د مانیو او ونو) د هغو (څلور قسمه) ویالې تل به وي دوی په دغو (جنتونو) کې او (وعده کړې ده الله) د ځایونو پاکو (چې ثابت دي) په جنتونو د تل اوسېدلو کې او رضاء له (جانبه) د الله ډېره لویه ده (له جنتونو او نعمتونو او نورو څخه) دغه (رضاء د الله) هم دغه بری دی ډېر لوی.

په دنیا کې ژوند د مختلفو حالتونو سره مخامخ کیږي کله پکې نیک بختي او کله پکې بد بختي وي ، کله پکې خوشحالي او کله پکې خفگان وي کله پکې بیماری او کله صحت وي ، کله پکې د کامیابي خوشحالي او کله پکې د ناکامي غم وي

¹ سورة النساء آية ۱۳

² سورة التوبة آية ۷۲

پدې دنيا کې له ټولو اړخونو انسان نه خوشحاليږي خامخا له يو طرف نه پریشاني او وېره موجوده وي الله ددې دنيا په اړه فرمايي :
وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ .¹

ترجمة : او نه دی ژوندون لږ خسیس د دنیا مگر پنگه د غولېدو ده (چې فايده یې لږ او فنا ئي زر ده) .

په بل ځای کې الله فرمايي : وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيَّاحُ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا (45) الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا (46) .²

ترجمة : او وښيه بيان كړه دغو (خلقو) ته مثال د دې ژوندون لږ خسیس په تازگي او سرعت زوال كې) په مثل د هغو اوبو چې نازلې كړي دي مونږ هغه اوبه له (طرفه د) آسمانه نو گڼي يو بل سره گډ وې شي په سبب د دې (اوبو) سره زرغونه د زمكې نو صبا ته وگرځي (دغه زرغونه) وچه كلكه ماته ماته چې آلوږوي ئې بادونه او دی الله پر هرڅيز باندې (چې اراده وفرمايي) توانا قادر (چې ځينې د هغو انشاء او افنا دي) مال (د دنيا) او زامن (چې پكې اخروي مفاد نه وي) زينت (رونق) ښائست د دې ژوندون لږ خسیس دی او (په اعتبار د جزاء) باقي پاتې كېدونكي نيك عملونه خير غوره دي په نزد د رب ستا له جهته د ثوابه او (خير) غوره دی له جهته د اميد.

ددې وجې نه خو رسول الله ﷺ هم د دنيا تعريف داسې كړی چې دا د يو مؤمن لپاره د بنديځاني حيثيت لري چې لدې نه بهر ورته ښه ژوند موجود

¹ سورة آل عمران آية ۱۸۵

² سورة كهف

دی او د کافر لپاره دا د جنت حیثیت لري چې لدې نه بهر شي نو د هر ډول عذابونو به ورته مخه شي حضرت ابو هريره فرمایي رسول الله ﷺ فرمایيل : **الدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ** .¹

ترجمة : دنیا د مؤمن بندیخانه او د کافر جنت دی .

حضرت علي ته یوه ورځ چا وویل : د دنیا په اړه څه راته ووايه ده مبارک ورته وفرمایيل : **وَمَا أَصِفُ لَكَ مِنْ دَارٍ مَنْ صَحَّ فِيهَا أَمِنْ ، وَمَنْ سَقَمَ فِيهَا نَدِمَ ، وَمَنْ افْتَقَرَ فِيهَا حَزَنَ ، وَمَنْ اسْتَغْنَى فِيهَا فُتِنَ ، حَلَالُهَا حِسَابٌ ، وَحَرَامُهَا عَذَابٌ ؟** .²

ترجمة : زه به تاته د هغه دار په اړه څه ووايم چې په هغه کې څوک جوړ شي نو په امن کې شي او چې پکې بیمار شي نو پشېمان شي چې پکې غریب شي نو خفه شي چې پکې مالدار شي نو په فتنه کې واقع شي دلته چې څومره حلال شيان دي ددې به حساب ورکول کیږي او چې څومره حرام شيان دي ددې په بدل کې به بنده ته عذاب ورکول کیږي .

پدې دنیا کې هوشیار انسان هغه دی چې دا دنیا په صحیح معنی کې وپېژني او په کومو خلکو چې دا دنیا تیريږي او هغوی لدې دنیا نه ځي د هغوی نه باید هوشیار سړی عبرت واخلي او په دنیا کې داسې څه وکوي چې دده د آخرت لپاره په کار شي او داسې څه وکوي چې په نتیجه کې یې تر مرگ وروسته ابدی او دائمی ژوند بشکلی او ښائسته شي نو رښتونی هوشیار هماغه انسان دی چې په زړه یې لوی غم یوازې د آخرت غم وي حضرت انس بن مالک فرمایي رسول الله صص فرمایيل : **مَنْ**

¹ رواه مسلم

² جواهر العلم لابن عبد البر

كَانَتْ الْآخِرَةُ هَمَّهُ ، جَعَلَ اللَّهُ غِنَاهُ فِي قَلْبِهِ ، وَجَمَعَ لَهُ شَمْلَهُ ، وَأَتَتْهُ الدُّنْيَا وَهِيَ رَاغِمَةٌ ، وَمَنْ كَانَتْ الدُّنْيَا هَمَّهُ ، جَعَلَ اللَّهُ فَقْرَهُ بَيْنَ عَيْنَيْهِ ، وَفَرَّقَ عَلَيْهِ شَمْلَهُ ، وَلَمْ يَأْتِهِ مِنَ الدُّنْيَا إِلَّا مَا قُدِّرَ لَهُ .¹

ترجمه : د چا چې مقصد او نیت آخرت وي الله به د هغه په زړه کې غنا ور واچوي او د هغه تیت خپاره کارونه به ورته را ټول کړي او د نیا به پداسې حالت کې ده ته راشي چې ذلیل به وي او د چا چې قصد او نیت دنیا وي الله به فقر د هغه د سترگو په وړاندې کیږدي او د هغه کارونه به ورته خپاره کړي او له دنیا نه به هغه څه ورکول کیږي چې کوم ده ته مقرر وي .

یعني فقر به دده د سترگو په وړاندې وي چې هر وخت به دی ترېنه ډارېږي او هر وخت به دا محسوس کوي چې دی خلکو ته اړ او محتاج دی او دده کارونه به نور هم ورته خپاره واره کړي چې ده ته به د خپلو کارونو را ټولول سخت او مشکل وي او چې څومره کوښښ وکوي ایل به له دنیا نه هغه برخه پورته کوي چې ده ته مقرره کړل شوې وي .

په دنیا کې چې څومره نعمتونه دي څومره د لذت شیان دي دا ټول موقت دي دا ټول فاني کېدونکي دي دلته هېڅ شی هم د همېشه لپاره نه پاتې کیږي او دلته چې څومره د قدر وړ شی دی هغه هم ناقص وي حضرت علی حضرت عمار ته فرمایل : لا تحزن علی الدنيا فإن الدنيا ستة أشياء: مأكول ومشروب وملبوس ومشموم ومركوب ومنكوح، فأحسن طعامها العسل وهو بزقة ذبابة، وأكثر شرابها الماء يستوي فيه جميع الحيوان، وأفضل ملبوسها الديباج وهو نسج دودة، وأفضل المشموم المسك وهو دم فأرة، وأفضل المركوب الفرس وعليها يقتل الرجال،

وأما المنكوح فالنساء وهو مبال في مبال .¹

ترجمة : په دنيا باندي مه خفه کيږه (که د پکې څه شی له لاسه وتل او یا پکې څه نقصان درته رسېدو) ځکه دنيا شپږ شيان دي خوراکي شيان دي ، د څښلو شيان دي ، د آغوستلو شيان دي ، د بوی کولو شيان دي ، سپرلی دي ، او هغه دي چې په نکاح کيږي .

- په خوراکونو کې يې غوره خوراک شهد دي او هغه په حقيقت کې د مچۍ نارې دي .
- او ډېر څښل کېدونکي شی يې اوبه دي په هغې کې ټول حيوانات سره برابر دي .
- په جامو کې يې غوره جامه وربښم دي هغه د يو چينجي محصول دی .
- د بوی کولو په شيانو کې غوره شی يې مشک دي هغه د يو حيوان وينه ده .
- او د سپرلی په شيانو کې يې غوره شی آس دی او همدا دی چې د خلکو د وژلو لپاره کارول کيږي .
- او هغه چې په نکاح کيږي هغه خو ښځې دي او ښځې خو غم دی .

او په رښتيا راحت او لذت خو هغه دی چې يو مسلمان ته به له مرګ نه وروسته ورکول کيږي او ورسته له هغه به ورکول کيږي چې په جنت کې خپل لمړی قدم کيږدي الله فرمايي : **وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَا قَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ (38) يَا قَوْمِ إِنَّمَا هَذِهِ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ (39)** .²

ترجمة : او وويل هغه (سړي) چې ايمان ئې راوړی وو اې قومه زما متابعت وکړئ زما چې وښيم تاسې

¹ تفسير القرطبي

² سورة غافر

ته لاره د هدايت (او صواب) اي قومه زما بېشكه هم دا خبره ده چې دغه ژوندون لږ خسيس يوه متاع (فايده) لږ ده او بېشكه آخرت هم هغه دي كور د قرارې (بې زواله) .

په دنيا كې كه لذتونه دي او كه تكليفونه دي د آخرت د نعمتونو او تكليفونو په نسبت دا هېڅ هم نه دي حضرت انس بن مالك فرمايي:

رسول الله ﷺ فرمايل : يُؤْتَى بِأَنْعَمِ أَهْلِ الدُّنْيَا ، مِنْ أَهْلِ النَّارِ ، يَوْمَ الْقِيَامَةِ ، فَيُصْبَغُ فِي النَّارِ صَبْعَةً ، ثُمَّ يُقَالُ لَهُ : يَا ابْنَ آدَمَ ، هَلْ رَأَيْتَ خَيْرًا قَطُّ ؟ هَلْ مَرَّ بِكَ نَعِيمٌ قَطُّ ؟ فَيَقُولُ : لَا ، وَاللَّهِ ، يَا رَبِّ ، وَيُؤْتَى بِأَشَدِّ النَّاسِ فِي الدُّنْيَا ، مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ ، فَيُصْبَغُ فِي الْجَنَّةِ صَبْعَةً ، فَيُقَالُ لَهُ : يَا ابْنَ آدَمَ ، هَلْ رَأَيْتَ بُؤْسًا قَطُّ ؟ هَلْ مَرَّ بِكَ شِدَّةٌ قَطُّ ؟ فَيَقُولُ : لَا ، وَاللَّهِ ، يَا رَبِّ ، مَا مَرَّ بِي بُؤْسٌ قَطُّ ، وَلَا رَأَيْتُ شِدَّةً قَطُّ .¹

ترجمة : د قيامت په ورځ به هغه كس راوستل شي چې په دنيا كې ښه نعمتونه وركړل شوي وو او ښه د راحت ژوند يې وو لکن په آخرت كې د هغه كسانو له جملې څخه وي چې اور ته به يې ورتلل وي په اور كې به يوه غوټه وركړل شي بيا به ورڅخه پوښتنه وشي اي د آدم زويه تا په دنيا كې څه خیر ليدلی وو؟ تا كوم نعمت ليدلی وو؟ دا بنده به ورته ووايي نه والله يا ربه او بيا به داسې كس راوستل شي چې په دنيا كې يې ډېر سخت او په تكليفونو كې ژوند تېر كړو لکن په آخرت كې د اهل الجنة څخه وي په جنت كې به يوه لحظه ور ننه ايستل شي بيا به ورڅخه پوښتنه وشي اي بني آدمه په دنيا كې د كله هم څه تكليف ليدلی وو؟ كله درباندي سختي تېره شوېده؟ دی به ورته وایي نه والله يا ربه په ما باندې هېڅ سختي نه ده تېره شوې او نه مې څه سختي ليدلې ده .

يعني هغه کس چې په دنيا کې ښه نعمتونه ورسره وو او ښه ژوند يې وو لکن د اهل النار څخه وو چې د اور يوه لحظه وگوري نو د دنيا ټولې مزې او راحتونو به ورڅخه هېر شي او هغه کس چې په دنيا کې يې تکليفې ژوند وو لکن په آخرت کې له اهل الجنة څخه دی چې په آخرت کې د جنت يوه لحظه وويني نو د دنيا ټول تکليفونه به ورڅخه هېر شي .

حضرت احمد بن حنبل ته په مجلس کې يو کس حاضر شو ورته يې وويل : اى ابا عبد الله زه تاته له خراسان څخه راغلم او لتا څخه د يوې مسئلې پوښتنه کول غواړم هغه ورته وويل : پوښتنه د وکوه ... هغه کس وويل : بنده د راحت خوند څه وخت څکلى شي؟ حضرت احمد بن حنبل ورته وويل : کله چې په جنت کې اول قدم کيږدي .¹

نو ددې امله په دنيا کې چې هر مسلمان وي هغه بايد په زړه کې شوق ولري چې جنت ته ولاړ شي او د جنت سره د يو انسان شوق هغه وخت پيدا کيږي چې انسان له هغه شيانو څخه خبر شي چې په جنت کې د جنتيانو لپاره تيار کړل شوي دي او د همدې مقصد لپاره ستاسې دا کتاب ستاسې تر لاسونو پورې در رسېدلى دی پدې کتاب کې به مونږ د جنت له صفاتو ، په جنت کې له نعمتونو او جنت ته د تللو په لارو او عملونو باندې خبرې وکړو سره ددې چې د جنت د نعمتونو په اړه خو الله فرمايلي دي چې په جنت کې به داسې نعمتونه وي چې نه سترگو ليدلي ، نه غوړونو اوږېدلي او نه د کوم بشر په ذهن کې ورت تېر شوي وي لکن بيا هم د احاديثو او قرآني آيتونو په رڼا کې به پدې کتاب کې کوښښ وشي تر لوستونکي پورې د جنت په اړه څه خبرې ور ورسوي .

د جنت په اړه ځينې قرآني آيتونه

د جنت د نعمتونو ذکر په قرآن کریم او په احادیثو کې په ډېرو ځایونو کې شوی دی چې د ټولو له را ټولولو نه یې زما دا وړوکی کتاب په سل هاوو ځله عاجز دی خو زه بیا هم مشت نمونه خروار ستاسې په وړاندې کېښودل غواړم الله د جنت د نعمتونو په اړه فرمایي : **وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ (10) أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ (11) فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ (12) ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ (13) وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ (14) عَلَى سُرُرٍ مَوْضُونَةٍ (15) مُتَكِنِينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ (16) يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُخَلَّدُونَ (17) بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ (18) لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ (19) وَفَاكِهَةٍ مِمَّا يَتَخَيَّرُونَ (20) وَلَحْمِ طَيْرٍ مِمَّا يَشْتَهُونَ (21) وَحُورٌ عِينٌ (22) كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ (23) جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (24) لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا (25) إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا (26).**¹

ترجمة : او رومبي کېدونکي (حسناتو ته) هم دوی رومبي کېدونکي دي (جنت ته) هم دوی نژدې کرل شوي دي (الله ته) په جنتونو د نعمتونو کې به وي لوی به ډله به وي له اولینو رومبنيو څخه او لږ دي له آخرینو وروستنیو څخه ناست به وي (جنتیان) په تختونو او بدلیو شویو چړاو کرل شویو په زرو جواهرو باندې چې تکیه وهونکي به وي (جنتیان) په هغو (تختونو) باندې مخامخ کېناستونکي یو بل ته گرځي به په دوی باندې (د پاره د خدمت) هلکان تل پاتې کېدونکي (په هلکوالي سره) په گلاسونو او په کوزو سره او په کاسو لوبښو سره له صافو پاکو شرابو بهېدونکيو څخه چې نه به سر خورېږي له دغو (شرابو) او نه به ورڅخه څښونکي بې هوښه کیږي او (گرځي به په دوی باندې هلکان په) میوو له هغه راز (قسم) چې ئې خوښوي (جنتیان) او غوښو د مرغانو سره له هغه ډوله (قسمه) چې زړونه ئې غواړي او

(گرځي به په دغو جنتيانو باندې) حورې پيمخې غټې سترگې په شان د ملغلرو ساتليو شويو په پوښونو کې جزاء ورکول دي په هغو چې وو دوی چې کول به يې (له نيکيو په دنيا کې) نه به اوري دوی په دغه (جنت کې) چټي (بېکاره) خبرې او نه د گناه خبرې مگر اوري يوه خبره سلام سلام (يعنې تل به سلام اچوي جنتيان يو په بل باندې په جنت کې)

په همدې سورة کې الله مخکې فرمايي : وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ (27) فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ (28) وَطَلْحٍ مَّنْضُودٍ (29) وَظِلٍّ مَّمْشُودٍ (30) وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ (31) وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ (32) لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ (33) وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ (34) إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنِشَاءً (35) فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا (36) عُرْبًا أَنْثَرَاءً (37) لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ (38) ثَلَاثَةٌ مِنْ الْأُولَى (39) وَثَلَاثَةٌ مِنْ الْآخِرِينَ (40).¹

ترجمة : او ملگري ياران د ښي لاس څومره ښه دي ملگري ياران د ښي لاس په بېرو بې اغزيو کې به وي او په کيلو له بيخه تر سره ډکو کرل شويو کې به وي او په سيوريو اوږدو کړيو شويو همېشه وو کې به وي او په اوبو بهېدونکيو توئېدونکيو همېشه وو کې به وي او په مېوو ډېرو کې به وي چې نه به قطع کولی کيږي په هېڅ وقت او نه به منع کولی کيږي په هېڅ عذر سره او په فرشونو اوچتو کرل شويو کې به وي (په پالنگونو باندې) بېشکه مونږ نوي پيدا کړي دي دغه حورې په يوه ښه پيدا کولو سره نو گرځولي مو دي دوی پېغلې عاشقاني (پر جنتيانو خاوندانو خپلو) همزولي (په خپل مابين کې) د پاره د ملگرو يارانو د ښي لاس (اصحاب اليمين به) لويه ډله وي له اولينو او رومبنيو خلقو څخه او لويه ډله به وي له آخرينو وروستنيو خلقو نه.

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَئِكَ رَفِيقًا.¹

ترجمة: او هرڅوک چې حکم ومني د الله او د رسول الله ﷺ نو دغه کسان به له هغو سره وي (په جنت کې) چې انعام کړی دی الله پر دوی باندې چې انبياء دي او صديقان دي او شهيدان دي او صالحان دي او ښه دي دغه کسان له جهته د رفاقته (چې ښه ملګري دي).

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّى إِذَا جَاؤُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ . وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ . وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ .²

ترجمة: او بهول کيږي به هغه کسان چې وېرېدل به دوی له ربه خپله طرف د جنت ته ډلې ډلې تر هغه پورې چې راشي دوی جنت ته حال دا چې پرانيستلی شوې به وي دروازې د دغه (جنت) او وبه وايي دوی ته خزانچیان (متصرفان) د جنت سلام د وي پر تاسې پاک یی تاسې (له گناهونو) پس ننوځئ جنت ته په دې حال کې چې همېشه اوسېدونکي اوسئ (په ده کې) او وبه وايي دغه (جنتیان) ټول ثناء صفت خاص الله ته دي هغه (الله) چې رښتیا ئې کړه له مونږ سره وعده خپله او میراث ئې راکړه مونږ ته زمکه (د جنت) چې ځای نیسو له جنته هر ځای چې خوښ شي زمونږ پس ښه دی اجر د (نېک) عمل کوونکیو او ویني به ته (اې محمده ﷺ) فرښتي طواف کوونکې چاپېر له عرشه چې تسبیح به وايي دوی له حمده ثنا د رب د دوی سره او حکم به وکړل شي په منځ د خلقو

¹ سورة النساء آية ٦٩

² سورة الزمر آية ٧٣-٧٥

کې په حق سره او وبه ویل شي چې ټوله ثناء ده
خاص الله لره ته چې رب پالونکی د عالمیانو دی.

وَنَرَعَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غَلٍّ تَجْرِي مِنَ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي
هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنَّ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَتُودُوا
أَنْ تِلْكَ الْجَنَّةُ أَوْرَثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ .¹

ترجمة : او وبه باسو مونږ هغه چې په سینو د
دغو (جنتیانو) کې دي له کینو څخه بهیږي به له
لاندې د (مانیو او ونو د) دوی ویالې او وائي
به دغه (جنتیان) گردې (ټولې) ثناوې او
احسانات خالص الله لره دي هغه (الله) چې برابر ئې
کړو مونږ د (مقام) ته او نه وو مونږ پخپله چې
موندلې مو وی دا لاره که نه وو هدایت کړی مونږ
ته الله په تحقیق راغلي وو رسولان د رب په حقه
سره او اواز به وکړل شي دغو (جنتیانو) ته
داسې چې دغه جنت په میراث درکړل شوی دی تاسې
ته په سبب د هغه چې وئ تاسې چې کول به مو (له
نېکیو په دنیا کې) .

وَجُودُهُ يَوْمَئِذٍ نَّاصِرَةٌ (22) إِلَى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ (23) .²

ترجمة : ځینې مخونه (یعنې د مؤمنانو به) په
دغې ورځې (د قیامت) کې ښائسته تازه روښانه وي
خاص ذات د رب خپل ته به کتونکي وي.

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ فِيهَا أَنْوَاجٌ مِّنْ مَّطَهَّرَةٍ ۖ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا .³

ترجمة : او هغه کسان چې ایمان ئې راوړی دی او
کړي ئې ښه (عملونه) زر به ننه باسو مونږ
دوی په (هغو) جنتونو کې چې بهیږي له لاندې د

¹ سورة الاعراف آية ٤٣

² سورة القيامة

³ سورة النساء آية ٥٧

(مانيو او ونو) د دوی ويالې همېشه وي به دوی په دغو (جنتونو) کې تل (بې انتها او بې انقطاع) وي به دوی ته په دې جنتونو کې ښځې پاکې کړل شوې (له ټولو نا پاکيو څخه) او ننه به باسو مونږ دوی په گڼو سيورو (په دائمي راحت کې) .

الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ.

1

ترجمة : هغه کسان چې قبضوي ارواح د دوی ملائکې په دې حال کې چې پاک دي دغه (متقين له شرکه او معصيته) وايي به دغه (ملائک دوی ته چې د الله) سلام دې وي پر تاسې باندې ننوزئ جنت ته په سبب د هغو نيکيو چې وئ تاسو چې عمل به مو کاوه (په دنياکې) .

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِعَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ . جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ . سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ .²

ترجمة : او هغه کسان چې صبر کوي لپاره د طلب د رضا د رب خپل (په مالي او جاني مصائبو يا د شرعي يا د جهاد په تکاليفو) او قائموي (سم اداء کوي له ټولو حقوقو په ترتيب سره) مونږ او نفقه کوي (لگوي په لاره د الله کې) ځينې له هغه (حلالو اموالو) نه چې ورکړي دي مونږ دوی ته هم په پټه او هم په ښکاره (خفيتمه او ظاهراً) او دفع کوي دوی په نيکي سره بدي دغه کسان موصوف په دغو صفاتو شته دوی ته (ښه) عاقبت د دار (د آخرت چې) جنتونه دي د تل اوسېدلو چې ننوزي به دوی په هغو کې او (ننوزي

1 سورة النحل آية ٣٢

2 سورة الرعد آية ٢٢-٢٤

به پکې بل) اولادې د دوی (اگر که عمل ئې د هغو په درجه نه وي) او فرشتې به ور ننوږي پر دوی (سره له تحائفو او زيري او رضوان) له هرې دروازې (مانیو د دوی ته او ورته به وایي چې) سلامتیا د وي پر تاسې په سبب د صبر کولو ستاسې (په طاعت او مصیبت او له معصيته) نو ښه عاقبت د دار (د آخرت عاقبت د تاسې دی) .

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَى نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ.¹

ترجمة: هر څه هغه کسان چې ایمان ئې راوړی دی او کړي ئې دي ښه (عملونه) پس شته دوی لره جنتونه د هستوګنې په طریقه د مېلمستیا په سبب د هغو عملونو چې وو دوی چې کول به یې (په د نیا کې) .

وَحُورٌ عِينٌ . كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ . جَزَاءُ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ.²

ترجمة: او په جنت کې به حورې وي غټ سترګې داسې به ساتل شوې وي لکه په پوښ کې ملغلرې دا به دوی ته د هغه عملونو جزاء ورکول کیږي چې دوی کول (په دنیا کې) .

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِنْكُمْ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُودُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقَتِلُوا لِأَكْفُرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَدْخَلْنَاهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ.³

ترجمة: پس قبولې کړې دوی لره (دا دعاوې) رب د دوی (په دې شان چې) بېشکه زه نه ضائع کوم عمل د هېڅ عمل کوونکي له تاسې نه نارینه وي (دا عمل کونکي) یا ښځه وي (ځکه چې) ځینې ستاسې دي له ځینو نورو (او ماته په مکافات کې

¹ سورة السَّجْدَةِ آية ١٩

² سورة الْوَاقِعَةِ آية ٢٢-٢٤

³ سورة آل عمران آية ١٩٥

ټول سره يو يئ) او هغه کسان چې هجرت کړی دی دوی (له پاره د دين) او ايستلی شوي دي دوی له کورونو خپلو (د الله په لاره کې) او ضرر رسولی شوی دی دوی ته په لاره زما کې او جنگونه ئې کړي دي (له کفارو سره) او وژل شوي دي (په غزا کې) نو خامخا به لرې کړم له دوی نه گناهونه د دوی او خامخا به داخل کړم دوی په جنتونو کې چې بهيري له لاندې د (مانيو او ونو د) هغو ويالې (جزا د نيکيو به ورکړو مونږ دوی ته) په جزا ورکولو (نيکو) سره له نږدې د الله او الله په نږدې د ده دی ښه ثواب (نېکه جزا) .

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنْتَى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا .¹

ترجمة: او هر هغه څوک چې عمل وکړي له (ځينو) نيکو کارونو له نارينه وو او له ښځو حال دا چې دی مؤمن وي نو دغه (نيکو کاران) داخل به شي په جنت کې او ظلم به ونشي په دوی (په اندازه) د نقير (هم يعني پر دوی په هېڅ شي کې هېڅ ظلم نه کيږي) .

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنْتَى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيَاةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ .²

ترجمة: هر چا چې وکړ نېک (عمل) له نارينه وو څخه يا له ښځو څخه حال دا چې دی مؤمن وي نو خامخا ژوندون به ورکړو هغه ته ژوندن پاکيزه او خامخا جزا به ورکړو دوی ته اجر د دوی په ډېر ښه د هغو (نيکيو) سره چې وو دوی (په دنيا کې) چې کول به يې.

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنْتَى وَهُوَ

¹ سورة النساء آية ١٢٤

² سورة النحل آية ٩٧

مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ.¹

ترجمة : هرڅوک چې وکړي بد کار پس جزا نه ورکوله کړي (هغه ته) مگر په قدر د هم هغې بدي او هرڅوک چې کړي نیک کار له نارینه وو وي یا له ښځو وي حال دا چې دی مؤمن وي پس دغه (نیکان مؤمنان) ننه به وزي په جنت کې رزق به ورکول کیږي (دوی ته) په دغه جنت کې به حساب نه شي.

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَعِيمٍ . فَاكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ . كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ . مُتَّكِئِينَ عَلَى سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ وَزَوَّجَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ.²

ترجمة : بېشکه وېرېدونکي (له الله ځان ساتونکي له معاصيو) په جنتونو کې به وي او په نعمتونو کې به وي مېوې خوړونکي خوشاليدونکي به وي په هغو (شيانو) چې ورکړي دي دوی ته رب د دوی او ساتلي دي دوی رب د دوی له عذاب د دوزخ خورئ او څښئ ښه هضمېدونکي په بدل د هغو (ښو اعمالو) چې وئ تاسې چې کول به مو (په دنیا کې) حال دا چې تکیه کوونکي به ناست وي دوی پر تختونو باندې چې برابر اېښود شوي وي صف صف او په نکاح به ورکړو دوی لره حورې ښې ښائسته غټ سترگې.

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ . لِّسَعِيهَا رَاضِيَةٌ . فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ . لَا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً . فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ . فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ . وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ . وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ . وَزَوَّجَاهُ مَبْنُوثَةٌ .³

ترجمة : ځینې مخونه به په دغې ورځې کې ښائسته او تازه وي پخپل کوښښ باندې (چې ئې کړی وي په

1 سورة غافر آية ٤٠

2 سورة الطور

3 سورة الغاشية آية ٨-١٦

دنیا کې) راضي خوشحال به وي (په آخرت کې) په جنت لوړ شاندار کې به وي نه به آوړې په هغه جنت کې کومه چټي بېکاره خبره په دغه (جنت) کې چینه ده جاري بهېدونکې په دغه جنت کې دي تختونه (د پاره د کېناستلو د جنتیانو) لوړ او عاليشان او جامونه دي کېښودل شوي (په اندازه د څښونکيو خپلو) او بالښتونه دي کېښودل شوي په درجه څنګ په څنګ (جنتيانو ته) او فرشونه دي فاخره غوړول شوي .

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ . وَأَمْدَدْنَاهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ . يُتَنَزَّاعُونَ فِيهَا كَأَسَا لَا لَعْوَ فِيهَا وَلَا تَأْنِيهِمْ . وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ لَوْلُؤُا مَكْنُونُونَ.¹

ترجمة: او هغه کسان چې ايمان ئې راوړی دی او متابعت کړی وي د دوی اولادونو د دوی په ايمان سره نو پيوست به کړو مونږ په دوی پورې اولاد د دوی او کم به نه کړو مونږ دغو (پلرونو) لره له (جزاء د) عملونو د دوی هېڅ شی هر سړی به په هغه عمل چې کړی ئې وي گرو آخته وي (که نېک وي يا بد) او مدد به وکړو مونږ له دوی سره په ورکولو د مېوو (په هر وقت کې) او دغوښو له هغه څيز چې د دوی زړه ئې غواړي يوله بله به اخلي دوی په دغه (جنت) کې پيالې د شرابو چې نه وي چټي (بيکاره) ويل په هغې کې او نه نسبت کول د گناه يو بل ته او چاپېر به گرځي (د پاره د خدمت) پر دوی باندې غلامان د دوی چې داسې به وي لکه په پوښ کې پټې ملغلرې ساتل شوې .

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ. 2

¹ سورة الطور آية ۲۱-۲۴

² سورة السجدة آية ۱۷

ترجمة: پس نه دی معلوم هېڅ نفس ته (نه فرستې او نه نبي ته) هغه شی چې پټ کړل شوي دي دوی ته له یخوالي د سترگو نه د پاره د جزاء د هغه عمل چې وو دوی چې کاوه به یې (پټ) .

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ . رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ . وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ.¹

ترجمة: هغه کسان (له ملائکو) چې پورته اخلي عرش او هم هغه (فرستې) چې چار چاپېرې دي د عرش تسبیح وایي سره د حمده ثناء د رب د دوی او ایمان ئې راوړی دی په دغه (الله) او مغفرت غواړي (له الله نه) هغو کسانو ته چې ایمان ئې راوړی دی (نو وایي چې) اې ربه زمونږ رسېدلی ئې ته هر څیز ته له جهته د رحمته بخشش او علمه پس بشنه وکړه هغو کسانو ته چې توبه یې ایستلې ده او متابعت ئې کړی دی د لارې ستا او وساته دوی له عذابه د دوزخ نه (او هم وایي به) اې ربه زمونږ او ننه باسه دوی په جنتونو د همېشه هستوګنې کې هغه چې وعده کړې ده تا له دوی سره او څوک چې نېک شوي وي له پلرونو د دوی او (له) ښځو د دوی او (له) اولادو د دوی بېشکه چې ته هم ته ئې ښه غالب قوي (په انفاذ د احکامو) ښه حکمت والا (چې هر کار په تدبیر او مصلحت سره کوې) او وساته دوی له بدیو ځنې او هرڅوک چې وساتې ته له بدیو څخه په دغه ورځ د قیامت کې نو په تحقیق رحمت دې وکړ پرې او دغه (ساتل ستا له عذابه) هم دغه دی بری ډېر لوی .

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۖ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ .¹

ترجمة: گرځولی کیږي به (د غلمانو له خوا) پر دغو جنتیانو کاسې ګلاسونه له سرو زرو څخه او (طلايي) صراحی ګانې او (وي به دوی ته) په دغه (جنت) کې هغه شیان چې خواش کوي د هغوی نفسونه (د دوی) او چې خوند اخلي سترګې (د دوی ترې) .

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ . فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ . حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ . فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ . لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌ . فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ . مُتَكَبِّرِينَ عَلَى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ .²

ترجمة: وي به په دغو (ټولو جنتونو) کې حورې پيمخې نیکې ښائسته پس په کوم یوه نعمت د نعمتونو د رب ستاسې دروغ وایي (او منکریري ترې ای انسانانو او پېریانو بلکه نشي کېدی) حورې به وي پټې کرل شوې په خیمو کې پس په کوم یوه نعمت د نعمتونو د رب ستاسې دروغ وایي (او منکریري ترې ای انسانانو او پېریانو بلکه نشي کېدی) چې نه به وي مسه کړي دوی لره نه انسان او نه پيري پخوا له دغو (جنتیانو خاوندانو خپلو) پس په کوم یوه نعمت د نعمتونو د رب ستاسې دروغ وایي (او منکریري ترې ای انسانانو او پېریانو بلکه نشي کېدی) تکیه کوونکي به وي دوی پر بالشتونو شین رنګو باندې او په فرشونو نفیسو عمده وو ښائسته وو باندې .

د جنت په اړه نبوي احادیث

حضرت عبد الله بن مسعود فرمایي رسول الله ﷺ

¹ سورة الزخرف آية ۷۱

² سورة الرحمن آية ۷۰-۷۶

فرمايل : اِنِّي لَا اَعْلَمُ اَخَرَ اَهْلِ النَّارِ خُرُوجًا مِنْهَا وَآخَرَ اَهْلِ الْجَنَّةِ دُخُولًا الْجَنَّةِ رَجُلٌ يَخْرُجُ مِنَ النَّارِ حَيًّا فَيَقُولُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ لَهُ : اذْهَبْ فَادْخُلِ الْجَنَّةَ ، فَيَأْتِيهَا فَيُخَبِّلُ اِلَيْهِ اَنَّهَا مَلَأَى فَيَرْجِعُ فَيَقُولُ يَا رَبِّ وَجَدْتُهَا مَلَأَى فَيَقُولُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ لَهُ : اذْهَبْ فَادْخُلِ الْجَنَّةَ ، فَيَأْتِيهَا فَيُخَبِّلُ اِلَيْهِ اَنَّهَا مَلَأَى فَيَرْجِعُ فَيَقُولُ يَا رَبِّ وَجَدْتُهَا مَلَأَى فَيَقُولُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ لَهُ : اذْهَبْ فَادْخُلِ الْجَنَّةَ فَإِنَّ لَكَ مِثْلَ الدُّنْيَا وَعَشْرَةَ امْتَالِهَا أَوْ إِنَّ لَكَ مِثْلَ عَشْرَةِ امْتَالِ الدُّنْيَا ، فَيَقُولُ اَتَسْخَرُ بِي أَوْ تَضْحَكُ بِي وَأَنْتَ الْمَلِكُ ، قَالَ : فَلَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضَحِكَ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ فَكَانَ يَقُولُ ذَلِكَ أَذْنَى أَهْلِ الْجَنَّةِ مَنْزِلَةً .¹

ترجمة : بېشکه زه هغه کس پېژنم چې تر ټولو آخر به له اور نه راوړي او جنت ته به ننوړي يو سړی به وي چې له اور نه به په خاپوړي سره راوړي الله به ورته ووايي څه ورشه جنت ته ننوزه هغه به ورته راشي هغه ته به ډک ښکاره شي بېرته به وگرځي وبه وایي یا ربه هغه خو ډک دی الله به ورته ووايي څه لار شه جنت ته ننوزه هغه ته به ډک ښکاره شي بېرته به را وگرځي وبه وایي یا ربه هغه خو ډک دی الله به ورته ووايي څه ورشه جنت ته ننوزه بېشکه ستا لپاره په جنت کې لکه دنیا او لس چنده نور لکه دنیا دومره ځای دی بېشکه تاته په جنت کې د دنیا لس چنده ځای دی دی به ورته ووايي ته په ما پورې ټوکې کوې ته په ما پورې خاندې او ته بادشاه یې؟ حضرت عبد الله بن مسعود فرمایي ما رسول الله ﷺ ولید چې پدې وخت کې یې داسې خندل چې نواجد غاښونه یې ښکاره کېدل او بیا یې فرمایل : دا په جنت کې تر ټولو ښکته مرتبه دا ده .

حضرت ابو سعید الخدری او حضرت ابو هریره فرمایي رسول الله ﷺ فرمایل : يُنَادِي مُنَادٍ : إِنَّ لَكُمْ تَصَحُّوا فَلَا تَسْقَمُوا أَبَدًا ، وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَحْيُوا فَلَا تَمُوتُوا أَبَدًا ، وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَشْبُوا فَلَا تَهْرَمُوا أَبَدًا ، وَإِنَّ لَكُمْ أَنْ تَنْعَمُوا فَلَا تَبْتَسِسُوا أَبَدًا ، فَذَلِكَ قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ : (وَنُودُوا أَنْ

تَلَكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ¹.

ترجمة : يو اواز كوونكى به اواز وكوي جنتيانو ته به ووايي بېشكه تاسې به جوړ شئ بيا به كله هم بيمار نه شئ او تاسې ته به پدې كې ژوند دركړل شي بيا به تاسې كله هم مړه نه شئ تاسې به پدې جنت كې خوانان شئ بيا به كله هم زاړه نه شئ تاسې ته به پدې كې نعمتونه دركړل شي بيا به كله هم تذك او خفه نه شئ او همدا مضمون د الله پدې آيت كې ذكر شوى دى چې الله فرمايي دوى ته به په جنت كې اواز وكول شي چې دا جنت تاسې ته دركړل شو په هغه څه چې تاسې به كول .

حضرت ابو هريره فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل :
لَنْ يُدْخَلَ أَحَدًا عَمَلُهُ الْجَنَّةَ (جنت ته هېڅوك هم په خپل عمل نشي ننوتلى) صحابه وو ورته وويل : حتى ته هم نه يا رسول الله ﷺ! رسول الله ﷺ وفرمايل : لا، ولا أنا، إِلَّا أَنْ يَتَغَمَّدَنِي اللَّهُ بِفَضْلٍ وَرَحْمَةٍ، فَسَدَّدُوا وَقَارِبُوا، وَلَا يَتَمَنَّيَنَّ أَحَدُكُمْ الْمَوْتَ: إِمَّا مُحْسِنًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يَزِدَّادَ خَيْرًا، وَإِمَّا مُسِيئًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يَسْتَعْتَبَ².

ترجمة : حتى زه هم نه مگر دا چې الله مې په خپل فضل او رحمت كې پټ كړي نو تاسې كلك شئ او نېك عملونه وكوئ هېڅوك د د مرگ تمنا نه كوي كه يو انسان نېك وي نو نيكي به يې په ژوند كې زياته شي او كه چېرته بد عمله وي كېداى شي توبه وباسي .

حضرت ابو هريره فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل :
مَنْ خَافَ أَدْلَجَ، وَمَنْ أَدْلَجَ بَلَغَ الْمَنْزِلَ، أَلَا إِنَّ سِلْعَةَ اللَّهِ غَالِيَةً، أَلَا إِنَّ سِلْعَةَ اللَّهِ

¹ رواه الامام احمد

² رواه البخاري

ترجمة : هغه څوک چې و ډار شي (چې د شا نه به څه خطر پسې راشي) نو هغه په خپل رفتار کې خپل ټول قوت استعمالوي او په تيزو تلوو کې کوبښ کوي او څوک چې په خپل سفر کې زيات کوبښ وکوي هغه منزل ته رسيري خبر دار د الله سودا ډېره قيمته ده او د الله سودا جنت ده .

حضرت انس فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : أنا أكثر الناس تبعاً يوم القيامة، وأنا أول من يقرع باب الجنة.²

ترجمة : د قيامت په ورځ به زما ډېر تابعداران وي او زه به اول هغه کس وم چې د جنت دروازه به ټکوي .

حضرت ابو هريره فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : من يدخل الجنة ينعم، لا يبأس، لا تبلى ثيابه، ولا يفنى شبابه .³

ترجمة : هغه څوک چې جنت ته ننوزي په هغه باندې به انعام كيږي هغه به نه خفه كيږي د هغه جامې به نه زريږي د هغه ځواني به نه ختميري .

حضرت ابو هريره فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : إن في الجنة شجرة يستظل الراكب في ظلها مائة سنة و اقروا إن شئتم وَظِلٌّ مَّثُودٌ و لِقَاب قَوْسٍ أَحَدُكُمْ من الجنة خير مما طلعت عليه الشمس أو تغرب .⁴

ترجمة : بېشکه په جنت کې يوه ونه ده يو کس چې

¹ سنن الترمذي
² رواه مسلم
³ رواه مسلم
⁴ رواه البخاري

په آس سپور وي ددې ونې په سيوري کې سل کاله سفر کوي که مو خوښه وي پدې اړه د ا آيت تلاوت کړئ الله فرمايي په جنت کې به اوږد سيوري وي او په جنت کې ستاسې د يوې ليندې په اندازه زمکه تر ټولو هغه شيانو غوره ده چې لمر ورباندې خيږي او غورځيږي .

حضرت ابو سعيد الخدري فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : إن الله عز وجل يقول لأهل الجنة: يا أهل الجنة. فيقولون: لبيك ربنا وسعديك والخير في يديك. فيقول: هل رضيتم؟ فيقولون: وما لنا لا نرضى يا ربنا وقد أعطيتنا ما لم تعط أحدًا من خلقك؟ فيقول: ألا أعطيكم أفضل من ذلك؟ فيقولون: يا رب! وأي شيء أفضل من ذلك؟ فيقول: أحل عليكم رضواني فلا أسخط عليكم بعده أبدًا. ¹

ترجمة : الله به د جنت خلکو ته اواز وکوي اې د جنت خلکو ! هغوی به ورته ووايي مونږ تاته په اطاعت ولاړ يو ستا د حکم متابعت کوو او خير ستا په لاسونو کې دی الله به ورته ووايي : آيا تاسې رضا شوئ؟ هغوی به ورته ووايي مونږ به ولې نه رضا کيږو اې زمونږ ربه تا مونږ ته هغه څه راکړي دي چې په بندگانو کې د بل چا ته نه دي ورکړي الله به ورته ووايي : زه ددېنه غوره شی درکړم؟ دوی به ورته ووايي : او ددېنه غوره شی به څه شی وي زمونږ ربه! الله به ورته ووايي زه به په تاسې باندې خپله رضا نازله کړم او ددېنه وروسته به کله هم زه په تاسې باندې نه په قهر کيږم .

حضرت ابو سعيد الخدري فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : إن أهل الجنة ليتراءون أهل الغرف من فوقهم كما تتراءون الكوكب الدري الغائر من الأفق من المشرق أو المغرب لتفاضل ما بينهم .

ترجمة : بېشکه جنتيان به اهل الغرف ته داسې

ښکاره کيږي لکه ځلانده ستوری چې په افق کې د مشرق او مغرب نه ښکاره کيږي دا ددې امله چې دا پورته ښکاره کېدونکي جنتیان به تر ښکته نه غوره وي صحابه وو ورته وویل یا رسول الله ﷺ دا ددې امله چې دا به د انبیاوو منزله وي چې بل څوک ورته نشي رسېدلی؟ رسول الله ﷺ وفرمایل: بلی والذی نفسی بیده، رجال آمنوا بالله وصدقوا المرسلین.¹

ترجمة : نه ورته رسېدلی شي زما د قسم په هغه ذات وي چې زما نفس یې په لاس کې دی هغه کسان چې په الله یې ایمان راوړی وي او د مرسلینو تصدیق یې کړی وي .

حضرت ابو هريره فرمایي رسول الله ﷺ فرمایل :
أَوَّلُ رُؤْمَرَةٍ تَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةُ الْبَدْرِ وَالَّذِينَ عَلَى أَثَارِهِمْ كَأَحْسَنِ كَوْكَبٍ دُرِّيٍّ فِي السَّمَاءِ إِضَاءَةً قُلُوبُهُمْ عَلَى قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ لَا تَبَاغُضَ بَيْنَهُمْ وَلَا تَحَاسِدَ لِكُلِّ امْرَأٍ زَوْجَتَانِ مِنَ الْحُورِ الْعِينِ يُرَى مَخْ سَوْقُهُنَّ مِنْ وَرَاءِ الْعَظَمِ وَاللَّحْمِ.

ترجمة : بېشکه اوله ډله چې جنت ته ننوزي د سپوږمۍ په شکل به وي چې د بدر په شپه کې (په هغه شپه کې چې سپوږمۍ پکې پوره وي) او بیا د هغې پسې چې کوم خلک وي هغوی به لکه ځلانده ستوري داسې وي په اسمان کې د رڼا له لوري زړونه به یې لکه د یو سري زړه داسې وي نه به یو له بله سره دښمني کوي او نه به له یو بل سره کینه کوي په دوی کې د هر سري لپاره داسې دوه بیبیانې دي چې د هغې ماغزه د غوښې او هډوکي د ننه ښکاره کيږي .

حضرت عمران بن حصین فرمایي رسول الله ﷺ فرمایل اطلعت في الجنة فرأيت أكثر أهلها الفقراء، واطلعت

في النار فرأيت أكثر أهلها النساء.¹

ترجمة : ما په جنت کې وکتل اکثر اهل يې فقيران وو او ما چې اور ته ور وکتل اکثر اهل يې هلته ښځې وې .

حضرت انس بن مالک فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : يخرج من النار من قال: لا إله إلا الله، وكان في قلبه من الخير ما يزن شعيرة، ثم يخرج من النار من قال: لا إله إلا الله، وكان في قلبه ما يزن برة، ثم يخرج من النار من قال: لا إله إلا الله وكان في قلبه من الخير ما يزن الذرة .²

ترجمة : د دوزخ نه به هغه کس را وويستل شي چې لا اله الا الله يې ويلي وي او په زړه کې يې دومره خير وي لکه وربشه بيا به د دوزخ نه هغه را وويستل شي چې لا اله الا الله يې ويلي وي او په زړه کې يې دومره خير وي لکه د غنم دانه او بيا به له دوزخ نه هغه کسان را وويستل شي چې لا اله الا الله يې ويلي وي او په زړه کې يې دومره خير وي لکه د يوې ذرې (دا ټول به جنت ته ننه ايستل شي) .

حضرت عبد الله بن عباس فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : عُرِضَتْ عَلَيَّ الْأُمَمُ فَجَعَلَ النَّبِيُّ وَالنَّبِيَّانِ يَمْرُونَ مَعَهُمُ الرَّهْطُ وَالنَّبِيُّ لَيْسَ مَعَهُ أَحَدٌ حَتَّى رُفِعَ لِي سَوَادٌ عَظِيمٌ قُلْتُ مَا هَذَا؟ أَمَّتِي هَذِهِ؟ قِيلَ بَلْ هَذَا مُوسَى وَقَوْمُهُ، قِيلَ انْظُرْ إِلَى الْأَفُقِ فَإِذَا سَوَادٌ يَمْلَأُ الْأَفُقَ ثُمَّ قِيلَ لِي انْظُرْ هَا هُنَا وَهَذَا هُنَا فِي آفَاقِ السَّمَاءِ فَإِذَا سَوَادٌ قَدْ مَلَأَ الْأَفُقَ قِيلَ هَذِهِ أُمَّتُكَ وَيَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ هُوَ لَا سَبْعُونَ أَلْفًا بِغَيْرِ حِسَابٍ الحديث .³

ترجمة : ماته به (د قيامت په ورځ) امتونه را ښکاره شي داسې نبي او يا نبیان به وي چې يوه

¹ رواه البخاري

² رواه البخاري

³ رواه البخاري

ډله خلك به ورسره وي هغه به يې تابعداري كونكي امتيان وي او داسې نبي به هم وي چې يوازې به را روان وي هېڅوك به ورسره نه وي تردې چې ماته يوه ډله خلك را ښكاره شي زه پوښتنه وكوم چې دا څوك دي؟ دا زما امت دي؟ ماته به وويل شي دا حضرت موسى او د هغه قوم دي بيا به ماته وويل شي چې د اسمان كنارو ته وگوره چې يوه داسې ډله خلك به وي چې ډېر زيات به وي د اسمان كنارې به ورباندې ډكې ښكاره كيږي ماته به وويل شي چې دېخوا ته وگوره دېخوا ته وگوره بيا به ماته وويل شي دا ستا امت دي او له دوى نه به جنت ته اويا زره بې حسابته داخليري.

يوه ورځ رسول الله ﷺ صحابه وو ته ويل : **أَتَرْضَوْنَ أَنْ تَكُونُوا رُبْعَ أَهْلِ الْجَنَّةِ؟** (آيا تاسې پدې خوښ ياست چې په جنت كې څلورمه برخه ستاسې څخه وي؟) صحابه وو ورته وويل : هو يا رسول الله ﷺ بيا رسول الله ﷺ وويل : **أَتَرْضَوْنَ أَنْ تَكُونُوا ثُلُثَ أَهْلِ الْجَنَّةِ؟** (تاسې پدې خوښ ياست چې په جنت كې دريمه برخه ستاسې څخه وي؟) صحابه وو ورته وويل هو يا رسول الله ﷺ بيا رسول الله ﷺ وفرمايل : **وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ إِنِّي لَأَرْجُو أَنْ تَكُونُوا نِصْفَ أَهْلِ الْجَنَّةِ؛ وَذَلِكَ أَنَّ الْجَنَّةَ لَا يَدْخُلُهَا إِلَّا نَفْسٌ مُسْلِمَةٌ وَمَا أَنْتُمْ فِي أَهْلِ الشِّرْكِ إِلَّا كَالشَّعْرَةِ الْبَيْضَاءِ فِي جِلْدِ الثَّوْرِ الْأَسْوَدِ أَوْ كَالشَّعْرَةِ السَّوْدَاءِ فِي جِلْدِ الثَّوْرِ الْأَحْمَرِ .**¹

ترجمه : زما د په هغه ذات باندې قسم وي چې زما نفس د هغه په لاس كې دى زه ددې اميد كوم چې د جنت نيم اهل ستاسې څخه وي ځكه جنت ته صرف مسلمانان ننوزي او تاسې په شرك كې داسې ياست لكه د تور حيوان په څرمن كې سپين وېښته او يا لكه د سره حيوان په څرمن كې تور وېښته

رسول الله ﷺ فرمایي : أَهْلُ الْجَنَّةِ عَشْرُونَ وَمِائَةً صَفًّا ثَمَانُونَ مِنْهَا مِنْ هَذِهِ الْأُمَّةِ وَأَرْبَعُونَ مِنْ سَائِرِ الْأُمَمِ .¹

ترجمة : جنتیان به یو سل او شل صفونه وي اتیا صفه به ددې امت نه وي او څلوېښت به د نورو ټولو امتونو څخه وي .

حضرت ابو سعید الخدری فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي : إِنَّ أَدْنَى أَهْلِ الْجَنَّةِ مَنْزِلَةً رَجُلٌ صَرَفَ اللَّهُ وَجْهَهُ عَنِ النَّارِ قَبْلَ الْجَنَّةِ، وَمَثَلُ لَهُ شَجَرَةٌ ذَاتُ ظِلٍّ فَقَالَ: أَيُّ رَبِّ قَدَّمَنِي إِلَى هَذِهِ الشَّجَرَةِ أَكُونُ فِي ظِلِّهَا. ثُمَّ يَدْخُلُ بَيْتَهُ فَتَدْخُلُ عَلَيْهِ زَوْجَتَاهُ مِنَ الْحُورِ الْعِينِ، فَنَقُولَانِ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَاكَ لَنَا وَأَحْيَانَا لَكَ»، قَالَ: «فَيَقُولُ: مَا أُعْطِيَ أَحَدٌ مِثْلَ مَا أُعْطِيَ».²

ترجمة : بېشکه په جنت کې تر ټولو نه په مرتبه کې ښکته به هغه سړی وي چې الله د هغه مخ د اور نه د جنت خوا ته واړوي او هلته یوه ونه ورته ښکاره شي دی به ووايي ای ربه ما دې ونې ته ور نېږدې کړه چې ددې په سیوري کې کېنم بیا به الله ده ته اجازه ورکړي دی به په جنت کې خپل کور ته ننوزي او د حورو نه به یې دوه بیبيانې ده ته ور ننوزي ورته به ووايي حمد ثناء ده هغه ذات لره چې ته یې زمونږ لپاره ژوندی کړی یې او مونږ یې ستا لپاره ژوندی کړی یو دی به له ځان سره وایي دا څومره نعمتونه چې ماته راکړل شوي دي بل هېچا ته هم نه دي ورکړل شوي .

رسول الله ﷺ فرمایي : خُيِّرْتُ بَيْنَ أَنْ يَدْخُلَ نِصْفُ أُمَّتِي الْجَنَّةَ وَبَيْنَ الشَّفَاعَةِ فَاخْتَرْتُ الشَّفَاعَةَ، لَأَنْهَا أَعَمُّ وَأَكْثَرُ أَتْرُونَهَا لِلْمُتَّقِينَ؟ لَا؛ وَلَكِنَهَا لِلْمُذْنِبِينَ

¹ سنن الترمذي

² رواه مسلم

المتلوئين الخطائين .¹

ترجمة : ماته اختيار راکړل شو چې زه خوښ کړم دا چې زما نيم امت د جنت ته ننوزي او که دا چې ماته به د شفاعت حق راکول کيږي ما شفاعت خوښ کړو ځکه دا عام دی او پدې سره زه خپل زيات امتيان جنت ته ننه ايستلی شم تاسې څه فکر کوئ چې زما شفاعت به د متقيانو لپاره وي؟ نه دا به د گناه کارانو او خطا کارانو لپاره وي .

د حضرت ابي هريره څخه روايت دی هغه فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : **إِنَّ اللَّهَ خَلَقَ الرَّحْمَةَ يَوْمَ خَلَقَهَا مِائَةً رَحْمَةً فَأَمْسَكَ عَنْدَهُ تِسْعًا وَتِسْعِينَ رَحْمَةً، وَأَرْسَلَ فِي خَلْقِهِ كُلِّهِمْ رَحْمَةً وَاحِدَةً؛ فَلَوْ يَعْلَمُ الْكَافِرُ بِكُلِّ الَّذِي عِنْدَ اللَّهِ مِنَ الرَّحْمَةِ لَمْ يَبْسُ مِنْ الْجَنَّةِ، وَلَوْ يَعْلَمُ الْمُؤْمِنُ بِكُلِّ الَّذِي عِنْدَ اللَّهِ مِنَ الْعَذَابِ لَمْ يَأْمَنْ مِنَ النَّارِ.**²

ترجمة : بېشکه الله رحمت پيدا کړو په هغه ورځ باندي الله سل رحمتونه پيدا کړل بيا يې ۹۹ له ځان سره حصار کړل او يو يې ټولې دنيا ته را وليږلو که کافر پدې پوه شي چې د الله سره څومره رحمت دی بيا به له جنت نه نا اميده نه شي او که مؤمن په هغه عذاب باندي خبر شي چې د الله سره دی کله به هم د دوزخ څخه په امن کې نه شي .

رسول الله ﷺ فرمايي : **إِنَّ اللَّهَ يُدْنِي الْمُؤْمِنَ فَيَضَعُ عَلَيْهِ كَنَفَهُ -أَي سِتْرَهُ- وَيَسْتُرُهُ فَيَقُولُ: أَتَعْرِفُ ذَنْبَ كَذَا؟ أَتَعْرِفُ ذَنْبَ كَذَا؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ، أَيْ رَبِّ. حَتَّى إِذَا قَرَّرَهُ بِذُنُوبِهِ وَرَأَى فِي نَفْسِهِ أَنَّهُ هَلَكَ؛ قَالَ: سَتَرْتُهَا عَلَيْكَ فِي الدُّنْيَا وَأَنَا أَغْوِيهَا لَكَ الْيَوْمَ، فَيُعْطَى كِتَابَ حَسَنَاتِهِ.**³

¹ سنن الترمذي

² رواه البخاري

³ رواه البخاري

ترجمة : الله به د قيامت په ورځ په يوه بنده باندې خپله پرده ور خپره کړي او هغه به پټ کړي او بيا به ورته ووايي فلانی گناه د ياده ده ؟ هغه به ورته ووايي هو ربه ياده مې ده تردې چې په ټولو گناهونو باندې به ورڅخه اقرار واخلي او دا بنده به له خپل ځان سره ووايي چې دی هلاک شو بيا به الله ورته ووايي چې دا گناهونه مې درته په دنيا کې پټ کړي وو او اوس يې درته بشم بيا به يې د خپلو نيکيو کتاب په لاس کې ورکړي .

حضرت ابو سعيد الخدري فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : **يَخْلُصُ الْمُؤْمِنُونَ مِنَ النَّارِ فَيُحْبَسُونَ عَلَى قَنْطَرَةٍ بَيْنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ، فَيَقْصُ لِبَعْضِهِمْ مِنْ بَعْضِ مَظَالِمِ كَانَتْ بَيْنَهُمْ فِي الدُّنْيَا، حَتَّى إِذَا هُذِبُوا وَنُقُوا أَذِنَ لَهُمْ فِي دُخُولِ الْجَنَّةِ قَوْلَ الَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لِأَحَدِهِمْ أَهْدَى بِمَنْزِلِهِ فِي الْجَنَّةِ مِنْهُ بِمَنْزِلِهِ كَانَ فِي الدُّنْيَا.**¹

ترجمة : مؤمنان به د اور نه را خلاص شي د جنت او دوزخ په مينځ کې به حصار کړل شي ترڅو د يو بل نه د خپلو حقونو بدل واخلي تردې چې دوی به ټول له حقونو خلاص شي او پاک به شي بيا به ورته اجازه وشي چې جنت ته د ننوزي زما د قسم په هغه ذات وي چې د محمد نفس د هغه په لاس کې دی په دوی کې به يو په جنت کې په خپل کور کې په دنيا کې د خپل کور نه ښه بلد وي .

حضرت معاذ بن جبل فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : **يَدْخُلُ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ جُرَدًا مُرَدًّا مُكْحَلِينَ أَبْنَاءَ ثَلَاثِينَ أَوْ ثَلَاثٍ وَثَلَاثِينَ سَنَةً.**²

ترجمة : جنتيان به جنت ته ننوزي پداسې حال کې چې په بدن به يې وېشته نه وي او ږېرې به يې لا نه وې را پورته شوي دېرش او يا درې دېرش کلن

¹ رواه البخاري

² سنن الترمذي

به وي .

حضرت صهيب فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل إِذَا دَخَلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ قَالَ: يَقُولُ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: تُرِيدُونَ شَيْئًا أَزِيدُكُمْ فَيَقُولُونَ أَلَمْ تُبَيِّضْ وُجُوهَنَا أَلَمْ تُدْخِلْنَا الْجَنَّةَ وَتُنْجِنَا مِنَ النَّارِ؟»، قَالَ: «فَيَكْشِفُ الْحَجَابَ، فَمَا أُعْطُوا شَيْئًا أَحَبَّ إِلَيْهِمْ مِنَ النَّظَرِ إِلَى رَبِّهِمْ عَزَّ وَجَلَّ وَهِيَ الزِّيَادَةُ» ثُمَّ تَلَا هَذِهِ الْآيَةَ: لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ.¹

ترجمة : كله چي جنتيان جنت ته ننوزي الله به ورته ووايي خه شی غواړئ چي درته زیات یې کړم ؟ دوی به ورته ووايي ولې تا زمونږ مخونه سپین کړي نه دي ولې تا مونږ جنت ته نه یو را ننه ایستلي او له اور نه د نجات نه دی راکړی؟ پدې وخت کې به الله د خپل او د بندگانو په مینځ کې حجاب پورته کړي نو جنتیانو ته به تر اوسه پورې د الله د دیدن نه غوره شی نه وي ورکړل شوي او همدا په نعمتونو کې زیادت دی بیا یې دا آیت تلاوت کړو چې الله فرمایي هغه کسان چې نیکان دي هغوی لره نیکی ده او زیادت دی او د دوی مخونو ته به نه رسیږي خواري او ذلت او همدا خاوندان د جنت دي دوی به پدې جنت کې همېشه وي .

پدې اړه احادیث ډېر زیات دی زه یې دلته د خپل کتاب د اندازې په نظر کې له نیولو سره بس کوم .

نکتي

په لاندې ټکو کې د جنت په اړه څو نکتي ستاسې په وړاندې ایږدم .

۱. یو عالم فرمایي ما جنت او دوزخ لیدلي دي چا ترې پوښتنه وکوله څنگه د لیدلي دي؟ ده ورته وویل ما د رسول الله ﷺ په سترگو لیدلي دي ځکه رسول الله ﷺ لیدلي او هغه ماته بیان کړي دي دي دا ماته همداسې یقین راکوي لکه زه یې چې په خپلو سترگو ووينم .

۲. د آخرت جنت د دنیا د جنت نه وروسته وي په دنیا کې دا یو ډول جنت دی چې انسان د الله په ذکر او د الله په اطاعت باندې مصروف وي ځکه د زړه خوشحالي له الله سره ده او زړه چې ترڅو د الله سره وي هغه ډېر خوشحال وي لدې خوشحالي سره بیا په دنیا کې هېڅ نعمتونه برابرېدلی نشي .

۳. هغه څوک چې پدې دنیا کې له الله سره نا اشنا وي نو په قبر او آخرت کې به دا نا اشنا والی نور هم زیات وي او هغه څوک چې د الله سره په دنیا کې خوشحال وي هغه به په قبر او آخرت کې تردې هم زیات خوشحال وي.

۴. مونځ داسې عمل دی لکه د الله سره خبرې کول په مانځه کې داخلېدل داسې دي لکه د الله په مجلس کې شریکېدل الله په خپل مجلس کې داخلېدل تر پاکي پورې تړلي دي ترڅو چې ځان پاک نه کړي د مانځه اجازه ورته نشته په همدې ډول الله جنت ته ننوتل هم تړلي تر پاکدامني او پاکي پورې ترڅو یو انسان پاک او نېک نه وي جنت ته نشي تللی.

۵. هغه کسان چې جنتیان وي هغوی هېڅرته هم نه ډارېږي اوکله چې د هغوی روح له بدن څخه وزي نو ملک الموت ورته د زیري په ډول وايي **اخرجي إلى مغفرة من الله ورضوان** (را اوزه د الله بښنې او رضا ته) او په آخرت کې به ورته ملائکې زېری ورکوي

ورته به وایي : **أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ** (دا چې مه ډارېږئ مه خفه کېږئ د هغه جنت زېری قبول کړئ چې لتاسې سره یې وعده کېده) .

۶. په یو حدیث کې رسول الله ﷺ فرمایي کله چې په تاسې کې څوک مړ شي هغه ته دده هستوګنځی په سحر او ماښام کې ور ښکاره کول کیږي که جنتي وي نو جنت او که دوزخي وي نو دوزخ به ور ښکاره کول کیږي او ورته به ویل کیږي دا ستا هستوګنځی دی او دا ښکاره کول تر هغه وخته پورې وي ترڅو د الله په حکم مړي له قبرونو څخه را پورته کړل شي .¹

۷. رسول الله ﷺ فرمایي : کله چې ستاسې څه وروڼه په أحد کې شهیدان شول الله د هغوی ارواح د شنو مارغانو په ګډو کې کېښودل هغوی د جنت نهرونو ته ورځي او د جنت میوې خورې .²

۸. رسول الله ﷺ فرمایي : کله چې مؤمنان له پل صراط نه د جنت لوري ته ور تېر شي نو هلته حصار شي ترڅو په دوی کې چې د چا په یو بل باندې حقونه وي هغه بدلې سره واخلي بیا به زړونه له کینو ، دښمنیو څخه خلاص شي او پداسې حال کې به دوی جنت ته لاړ شي چې په مکمل حال باندې وي ځکه خو الله فرمایي : **وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غِلٍّ** (مونږ به د دوی له زړونو کینه وباسو) پدې کې د یو مسلمان لپاره لوی درس موجود دی چې ترڅو دده په زړه کې یوه ذره کینه وي دی به جنت ته نشي تللی نو ښه نه ده چې په هغه وخت کې یې الله له زړه څخه وباسي انسان یې اوس ورته له خپل زړه وباسي؟

¹ صحیح البخاري

² صحیح مسلم

۹. جنتیان چې جنت ته ننوزي په یوه ونه به تېرېږي چې د هغې په بیخ کې دوه چینې وي له اولې نه به جنتیان څښاک وکوي پدې څښاک سره به د دوی گډې صفا شي او هېڅ ډول بيماري او گند به پکې پاتې نشي او له بلې نه ولامبي بیا به ورباندې تازگي او نعمتونه ښکاره شي بیا به نه خیرن کیږي او نه به بدلیږي .

۱۰. جنتیان به په ډلو ډلو سره جنت ته ننوزي هرڅوک به له خپلو ملگرو سره په ډله کې خوشحال وي او داسې په خدا او خوشحالي به ځي لکه په دنیا کې به چې دوی په کوم نېک کار کې سره را ټولېدل او سره خوشحال به وو .

۱۱. دوی به یو یو جنت ته نه ځي بلکه ډلې ډلې به ځي پدې توگه به یې یو په بل باندې زړه هم تکیه وي او یو د بل سره به خپلې خوشحاليانې شریکوي چې دا د یو انسان په خوشحالیانو کې لا زیادت راوړي .

۱۲. په جنتیانو کې به ځینې داسې بختور خلک وي چې بغیر د حساب نه به ور ننوزي ځینې به داسې وي چې حساب به ورسره وشي خو بیا به یې نیکی زیاتې شي او جنت ته به لاړ شي ځینې یې داسې وي چې د دوزخ مستحق به شي خو بیا به په سفارش او شفاعت سره جنت ته لاړ شي او ځینې به یې داسې وي چې یو ځل به اور ته هم لاړ شي بېرته به په شفاعت سره ورڅخه را بهر کړل شي .

۱۳. جنتیان چې کله جنت ته لاړ شي دروازې به بندې وي او رسول الله ﷺ به راشي د هغه لپاره به دروازې خلاصې شي دا بهتري او د شفاعت کبری فضیلت الله رسول الله ﷺ ته ورکړی دی .

۱۴. د جنت آته دروازې دي چې د بنده لپاره دا

کله په هغه وخت کې خلاصیږي چې ښه اودس وکوي او یا یې اولادونه وفات شي دی ورباندې صبر وکوي او پدې دروازو کې یوه د روژه لرونکو دروازه ده صرف د دوی لپاره خلاصه شي کله چې دوی ننوزي بېرته بنده شي .

۱۵. د جنت په دروازو کې د مانځه ، صدقې ، جهاد دروازې هم دي نو چې کله مونځ کوونکی جنت ته نېږدې شي د مانځه له دروازې به ورته اواز وشي یا عبد الله کله چې ډېره صدقه کوونکی جنت ته راشي نو د صدقې له دروازې به ورته اواز وشي او کله چې مجاهد جنت ته نېږدې راشي نو د جهاد له دروازې به ورته اواز وشي ای عبد الله او د الله په مؤمنانو بندگانو کې به ډېر داسې بختوران هم وي چې د هغوی په مخ د جنت آته دروازې خلاصې وي چې له کومې نه یې خوښه وي ننوزي به .

۱۶. رسول الله ﷺ په یو حدیث کې د جنت د دروازو په اړه فرمایلي دي چې ددې د دوو پلو په مینځ کې دومره فاصله ده لکه د مکې او هجر (نومي ځای) په مینځ کې او یا لکه د مکې او بصرې په مینځ کې ډېره د کمال خبره دلته داده چې په هغه وخت کې داسې اسباب موجود نه وو لکه اوس خو چې اوس خلکو د نویو اسبابو له مخې تحقیق کړی دی د مکې او د هجر په مینځ کې بعینه هغه فاصله ده کومه چې د مکې او بصرې په مینځ کېده چې ۱۲۷۳ کیلو متره ده .

۱۷. د جنت دروازې به تړل شوې وي هلته به چې خلک ورځي د ننوتلو لپاره به اجازه غواړي چاته چې د جنت دروازه خلاصه شي هغه به ننوزي او دا بیا نه تړل کیږي او هېڅوک به اجازه هم نشي ور ننوتلی او جهنم چې څرنگه د عذاب او د سپکاوي ځای دی هلته به ورتلو کې د اجازه ضرورت نشته

بلکه هلته چې هرڅوک ورځي هغه به دې ورتلو ته مجبور کړل شوي وي د هغې دروازې به خلاصې وي چې کله دوزخیان ور ننوزي بیا به بندې شي بیا به کله هم ورته خلاصې نه شي .

۱۸ الله د جنتونو په اړه فرمایي : **جَنَّاتٍ عَدْنٍ مَّفْتَحَةٌ لَهُمُ الْأَبْوَابُ (50)** (یعني د هغوی لپاره همېشني جنتونه دي چې دروازې یې د دوی لپاره خلاصې دي) دا آیت ښکاره کوي چې په جنت کې به د امن او سکون څخه ډک ژوند وي هېڅوک به د هېڅ شي څخه نه ډارېږي د قیمتي باغونو دروازې به خلاصې وي هر وخت به دوی کولی شي له خپلو باغونو مزه او لذت واخلي داسې به نه وي لکه د دنیا سیستم چې لږ قیمتي باغ یا ځای وي په هغه به څوکیدار او پهره دار ولاړ وي او ورسره به له هر لوري خطر وي .

۱۹ حضرت سالم بن عبد الله بن عمر په خوب کې ولیدل چې دی جنت ته ورشي هلته ورته ټولې دروازې خلاصې وي صرف یوه دروازه وي چې بنده وي ده له چا څخه پوښتنه وکوله چې دا دروازه ولې بنده ده؟ ده ته وویل شول دا د جهاد دروازه ده او تا تر اوسه پورې جهاد کړی نه دی څنگه چې را وېښ شو روان شو آس یې واخیستو .

۲۰ دا امت اگر که په وخت کې تر ټولو ورستی پیدا شوی دی لکن په قیامت کې به اول همدا امت وي چې محشر ته به رسیږي اول به له دوی سره حساب کیږي اول به د دوی په اړه فیصله کیږي او اول به دوی جنت ته ننوزي .

۲۱ مخکې یو حدیث تېر شو حضرت ابو هریره فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي : **أَوَّلُ زُمْرَةٍ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ عَلَى أَصْوَى كَوْكَبٍ دُرِّيٍّ فِي السَّمَاءِ ، لِكُلِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ زَوْجَتَانِ ثَنَنَانِ ، يُرَى مَخِّ سَاقِهَا مِنْ وَرَاءِ الثِّيَابِ ، وَالَّذِي نَفْسِي**

بِيَدِهِ مَا فِي الْجَنَّةِ أَغْرَبُ .

ترجمة : اوله ډله چې جنت ته ننوزي مخونه به يې لکه سپوږمۍ داسې وي په هغه شپه چې پوره وي بيا هغه کسان چې ورپسې ورځي هغه داسې وي لکه په اسمان کې ډېر ځلاند ستوری د هر سړي لپاره به دوه ښځې وي هغه به داسې وي چې په پنډۍ کې يې ماغزه د جامو د ننه ښکاره کيږي زما د قسم وي په هغه ذات چې زما نفس د هغه په لاس کې دی په جنت کې مجرد کس نشته .

۲۲. د جنت د دروازو په اړه مخکې هم تېر شول چې دا به ډېرې لويې وي د هغې لوی والی په يو بل حديث کې ښه ښکاره کيږي چې جنت ته به اويا زره کسان په يو ځای پداسې توگه ننوزي چې يو به د بل شا ته نه وي اول او آخر به يې په يو ځای ننوزي پداسې حال کې چې لاسونه به يې سره نيولي وي .

۲۳ کله چې دوه کسان دواړه د جنت مستحق شي غريب جنتي به تر مالدار غريب نه پنځه سوه کاله وړاندې ور ننوزي په يو حديث کې ورته اربعين خريفاً (څلوېښت د مني موسمونه) ياد کړل شوي دي يعنې څلوېښت کاله خو دا فرق به په غربت او مالداري کې وي هغه کس چې په دنيا کې ښه مسلمان وو او ډېر غريب وو دا به پنځه سوه کاله وړاندې له هغه کس نه ننوزي چې په دنيا کې ښه مسلمان او ډېر مالدار وو په همدې توگه به د دوی په مينځ کې فرق وي .

۲۴ جنتيان چې جنت ته ننوزي ښې خبرې به کوي ، نه به يې په ژبه بد الفاظ وي نه به بدې خبرې کوي زړونه به يې پاک وي بدنونه به يې پاک وي هلته په جنت کې به هېڅ بې کاره او چټي خبره نه آوري .

۲۵ رسول الله ﷺ په یو حدیث کې فرمایي د جنتیانو اوله ډله چې جنت ته ځي مخونه به یې لکه د سپوږمي داسې وي نه به دوی هلته نارې تف کوي ، نه به پکې گندگي کوي ، او نه به دوی هلته پوزې پاکوي د هغوی لوشې او اسباب به ټول د سرو او سپینو زرو وي .

۲۶ جنتیان چې کله جنت ته لاړ شي د دوی په زړونو کې به صفایي وي د هر یو لپاره به دوی بیبیانې وي چې د هغوی ماغزه په غوښه او هډوکي کې د ننه ښکاره کیږي هلته به جنتیان په هېڅ خبره اختلاف نه کوي د ټولو زړونه به داسې وي لکه د یو سړي زړه .

۲۷ د جنتیانو به عطرو او خوشبویي ته هېڅ ضرورت نه وي د هغوی خولې به د ښو عطرو نه ښه بوی کوي او دوی چې د جنت څومره نعمتونه خوري د دوی په گډو کې به ترپنه گندگي نه جوړیږي همدا خوله به یې په ځواب کې راځي .

۲۸ جنتیان چې هرشی استعمالوي صرف د لذت او مزې لپاره کنه هلته به نه څه ډول لوږه وي ، نه به تنده وي او نه به نور کوم شي ته ضرورت وي او دوی ته به داسې نعمتونه ورکول کیږي لکه په دنیا کې چې وو لکن په کامله توګه .

۲۹ ابن جوزي فرمایي : په دنیا کې چې څومره نعمتونه او عذابونه دي دا د آخرت د نعمتونو او عذابونو نمونې دي ترڅو بندگان یې یوه نمونه دلته وګوري او د آخرت لپاره ځان تیار وساتي .

۳۰ حضرت موسی له الله نه پوښتنه وکوله چې په جنت کې تر ټولو ښکته مرتبه به د چا وي؟ ځواب ورته راغلو چې یو کس به وي الله به ورته ووايي

جنت ته ننوزه دی به ووايي څنگه ننوزم خلک ټول خپلو ځایونو ته تللي دي (يعني اوس خو په جنت کې ځای نشته) الله به ورته ووايي ته پدې نه يې خوښ چې تاته د دومره ځای درکړل شي لکه په دنيا کې چې يو بادشاه ته ورکړل شوی وو.

دی به ورته ووايي : بس رضا شوم .

۳۱ کله چې جنتيان جنت ته ننوزي په جنت کې به د ښو خوراکونو په واسطه د دوی مېلمستيا وشي کله چې له رسول الله ﷺ نه پوښتنه وشوه چې د دوی اول خوراک به څه وي رسول الله ﷺ ورته وويل کبد الحوت (د ماهي ځيگر) بيا د رسول الله ﷺ نه پوښتنه وشوه چې پدې پسې به بيا څه شی ورکول کيږي؟ رسول الله ﷺ ورته وويل : د جنت له غوايانو به غوايي ورته حلال کړل شي .

۳۲ الله د جنت د اندازې په اړه فرمايي : **عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ** (پلونوالی يې لکه د اسمانونو او زمکې دومره به وي) چې عرض يې دومره وي نو طول به يې څومره وي؟ نو هغه کس چې په جنت کې د مرتبې په لحاظ تر ټولو ښکته وي هغه ته دومره ساحه په جنت کې ورکوله کيږي لکه دنيا او لس چنده نور چې ورسره وي نو د هغه کس په اړه به څه وي چې هغه په جنت کې د لوړې مرتبې خاوند وي .

۳۳ په جنت کې ډېرې مرتبې دي امام ضحاک فرمايي الله فرمايي : **لَهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ** (د الله ه سره د دوی لپاره درجې دي) په جنتيانو کې به يو جنتي ته دا ښکاره کيږي چې دده نه ښکته څومره نورې مرتبې دي او دا به ورته نه ښکاره کيږي چې دده د پاسه هم کومه مرتبه او منزله شته ددې لپاره چې دی غمجن نشي او لوړو مرتبو

ته د رسېدلو ارمان يې په زړه باندې پاتې نشي .

۳۴ د بخاري شريف يو حديث دی هلته رسول الله ﷺ فرمايل : څوک چې په جنت کې د د دومره ځای مالک وي لکه د يوې ذرې نو دا ځای ورته له ټولې دنيا او د هغه څه نه چې په دنيا کې دي غوره دی .

۳۵ ابن تيمية فرمايي په جنت کې دا لوړې مرتبې په مصيبتونو تکليفونو سره انسان ته راسيري امام ابن رجب فرمايي د شپې مونځ کول په جنت کې د لوړو مرتبو سبب کيږي الله فرمايي : **وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ عَسَىٰ أَنْ يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا** (۱ او د شپې تهجد کوه دا به ستا لپاره نفل وي ترڅو د الله مقام محمود ته ورسوي) .

۳۶ په يو حديث کې رسول الله ﷺ فرمايي : په جنت کې سل درجې دي الله مجاهدينو ته تيارې کړي دي او د هرې درجې په مينځ کې تر بلې پورې دومره فرق دی لکه د اسمان او زمکې تر مينځ .

۳۷ د مسند امام احمد بن حنبل په يو حديث کې دي چې د قرآن کریم حافظ ته به ويل کيږي چې لوله تلاوت کوه او په يوه يوه مرتبه پورته کېږه او کله چې د قرآن کریم آخري آيت ولوستل شي دده مقام به په هغه ځای کې وي .

۳۸ مخکې دا خبره تېره شوه چې رسول الله ﷺ فرمايل : په تاسې کې هېڅوک هم په خپل عمل سره جنت ته نشي ننوتلی جنت ته به ټول خلک د الله په فضل سره ننوزي خو هلته به د عملونو تقسيم ورته د دوی د عملونو په بنياد کيږي او ددې آيت معنی هم داده چې الله فرمايي : **وَتُؤَدُّوا أَنْ تِلْكَمُ**

الْجَنَّةُ أَوْ رِثْمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ (او دوی ته به اواز وکول شي چې دا هغه جنت دی چې تاسې ته ستاسې د عملونو په بدل کې درکړل شوی دی) .

۳۹ په جنت کې تر ټولو لوړه مرتبه الوسيلة نوميږي له رسول الله ﷺ نه پوښتنه وشوه چې دا الوسيلة څه شی دي؟ رسول الله ﷺ وفرمايل : په جنت کې لوړه مرتبه ده هغې ته صرف يو کس رسيږي زما تمه ده چې هغه به زه وم د هغې نه پورته بله مرتبه نشته دې درجې ته وسيله ويل کيږي ځکه دا تر ټولو نه عرش ته نېږدې او قريبه ده او ددې امله په ټولو درجو کې مبارکه ، معظمه او د نور او شرافت نه ډکه درجه ده .

۴۰ حضرت عبد الرحمن بن زيد بن اسلم فرمايي په جنت کې چې څرنگه درجې دي داسې په دوزخ کې هم درجې شته خو په جنت کې چې درجه څومره ښه کيږي هغه پورته کيږي او په دوزخ کې چې څومره سختيږي هغه ښکته ځي په جنت کې تر ټولو لوړ کس به تر ټولو نه په ښو نعمتونو کې وي او په دوزخ کې تر ټولو ښکته کس به تر ټولو نه په سخت عذاب کې وي .

معلوم جنتيان

په دنيا کې ځينې داسې نېک بخت او بختور خلک هم وو چې د هغوی په جنتي کېدو باندې تر قيامت مخکې دليل راغلی دی رښتيا چې بختور وو الله د د هغوی مرتبې لوړې کړي زه يې پدې وړوکي کتاب کې ستاسې لپاره نومونه صرف ددې لپاره مخکې اېږدم چې زما کتاب به ورسره مبارک او بختور شي ځينې هغه کسان په لاندې ډول دي :

عشرة مبشرة

عشرة مبشرة لس كسان وو چي رسول الله ﷺ په مختلفو رواياتو كې ورته جنت ياد كړى دى غوره صحابه دي د دوى په اړه رسول الله ﷺ فرمايي : **أَبُو بَكْرٍ فِي الْجَنَّةِ ، وَعُمَرُ فِي الْجَنَّةِ ، وَعُثْمَانُ فِي الْجَنَّةِ ، وَعَلِيٌّ فِي الْجَنَّةِ ، وَطَلْحَةُ فِي الْجَنَّةِ ، وَالزُّبَيْرُ فِي الْجَنَّةِ ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ فِي الْجَنَّةِ ، وَسَعْدُ وَسَعِيدُ فِي الْجَنَّةِ ، وَأَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ فِي الْجَنَّةِ .**

پدې حديث كې ټول لس كسان ياد كړل شوي دي :

1. أبو بكر الصديق عبد الله بن أبي قحافة القرشي
2. عمر بن الخطاب بن نفيل العدوي القرشي
3. عثمان بن عفان بن أبي العاص الأموي القرشي
4. علي بن أبي طالب بن عبد المطلب الهاشمي القرشي
5. الزبير بن العوام بن خويلد الأسدي القرشي
6. طلحة بن عبيد الله بن عثمان التيمي القرشي
7. عبد الرحمن بن عوف بن عبد عوف الزهري القرشي
8. سعيد بن أبي وقاص بن وهيب الزهري القرشي
9. أبو عبيدة بن الجراح عامر بن عبد الله بن الجراح القرشي
10. سعيد بن زيد بن عمرو العدوي القرشي

حضرت جعفر بن ابی طالب

د حضرت رسول الله ﷺ د تره زوی وو دده په اړه ډېر معلومات او په غزوة موة کې دده د شهادت واقع او د اسلام په شروع کې دده قرباني حبشي ته هجرت د نجاشي بادشاه په وړاندې د حق وينا او نورې ډېرې خبرې زمونږ (د اسلامي تاريخ له پاڼو څخه نهمه برخه) کې تیر شوي دي په ډېر غیرت او میړانه سره شهید شو د نومړي کتاب څخه صرف دده د شهادت واقع تاسې ته دریادوم د هجرت په آتم کال رسول الله ﷺ حضرت حارث بن عمیر الازدي ملک بصري ته شام ته د خپل استازي په توګه ور ولېږلو او خط یې ورکړو چې په هغه کې یې دی اسلام ته را غوښتلی وو هغه په ډېر کبر سره د رسول الله ﷺ استازی شهید کړو او د استازي وژل په اوس وخت کې هم بد عمل دی او په هغه وخت کې هم ډېر د شرم نه ډک جرم ګڼل کېدو رسول الله ﷺ ته چې دا خبر را ورسېدو نو زیات غصه شو او خلکو ته یې اعلان وکولو چې را ټول شي د رومیانو سره جنگ ته تلل دي نو ۳۰۰۰ کسان جنگ ته را ټول شول اګست/سپتمبر 629 م - جمادی الأولى د هجرت آتم کال وو رسول الله ﷺ د دوی په سر باندې زید بن حارثه امیر کړو او بیا یې ورته وویل که چېرته دا شهید شو بیا به حضرت جعفر بن ابی طالب ستاسې امیر وي او که هغه شهید شو بیا به حضرت عبد الله بن رواحة ستاسې امیر وي .

د جُمعي ورځ وه چې دوی روان شول د مجاهدينو خپلوان ورسره را وتلي وو ټولو ورته دعا ګانې کولې چې الله مو په خیر فاتحین او صابرين خپلو کورونو ته را ورسوه .

دوی لارل د شام یو کلي معان ته ورسېدل دوی ته خبر راغلو چې رومیان جنگ ته په ډېر لوی تعداد کې راوتلي دي چې یو لک کسان رومیان دي او یو لک کسان ورسره نور د قبائلو نه را ټول شوي دي صحابه کېناستل مشوره یې کوله چې څه وکوو؟ مونږ خو دا فکر نه کاوه چې زمونږ د ۳۰۰۰ کسانو مجاهدینو مقابله به د دوو لکو کسانو سره کیږي ځینو پکې ویل چې رسول الله ﷺ ته به خط ولېږو او ورته به ووايو چې زمونږ دشمن خو دوه لکه کسان دي یا خو به په مونږ پسې نور کسان راولېږي او یا خو به مونږ ته څه امر وکوي په هغه امر به عمل وکوو چې هرڅه وو .

حضرت عبد الله بن رواحه پاڅېدو خبرې یې شروع کړې او ویې ویل : ای خلکو تاسې ددې لپاره راوتلي یاست چې که الله مو شهادت نصیب کړي والله مونږ دخلکو سره په عدد باندې جنگ نه کوو مونږ د خلکو سره صرف پدې مبارک دین جنگ کوو چې الله مونږ ته ورباندې عزت راکړی دی راځي چې ور وړاندې شو الله به په دوه ښو شيانو کې یو مونږ ته راکوي یا شهادت او یا کامیابي خلکو وویل والله ابن رواحه رښتیا وویل او ددې خبرې سره ټول په یوه جذبه ور وړاندې شول چې بلقاء سیمې ته ورسېدل د هرقل فوځونه څه رومیان او څه عرب هم نېږدې کلي ته چې مشارف یې ورته ویل را ورسېدل مسلمانان پدې وخت کې د موته په نوم کلي ته وړاندې شول په اوس وخت کې ورته کرک وایي مسلمانانو خپل فوځ تیار کړو په میمنه (د فوځ په ښي طرف) باندې یې قطبة بن قتادة مقرر کړو په میسره (د فوځ په چپ طرف) یې عبایة بن ملک یو انصاري مجاهد مقرر کړو صفونه سره وړاندې شول او سخت جنگ شروع شو چې صرف د زخمیانو فریاد د تورو او د مسلمانانو د تکبیر اوازونه پورته کېدل د زمکې نه تور گرد پورته شو فوځونه ډېر په سخته سره مخامخ شول

چې د مسلمانانو لمړی امير حضرت زید بن حارثه د شهادت لور مقام ته ورسېدو حضرت جعفر را ټوپ کړل او بیرغ یې پورته کړو د مسلمانانو فوځیانو په مخه کې وو جنگ ډېر سخت وو ښی لاس یې چا ووهلو ترې پرې ئې کړو ده بیرغ په چپ لاس کې ونيولو او هغه یې زمکې ته پرې نه ښودو چپ لاس یې ترې ووهلو د پاتې بدن او سر په واسطه یې د اسلام بیرغ پورته کړو او زمکې ته یې پرې نه ښودو تردې چې شهید شو پدې وخت کې یې عمر ۳۳ کاله وو عبد الله بن عمر فرمایي په غزوة مؤتة کې زه له دوی سره وم کله چې جنگ پای ته ورسېدو نو جعفر بن ابی طالب ورک وو مونږ پسې گرځېدو چې پیدا مو کړو په بدن مبارک یې څه د پاسه (۹۰) زخمونه وو د تورې نیزې او داسې نور رسول الله ﷺ یې چې په شهادت خبر شو ډېر زیات ورباندې خفه شو کور ته یې ورغلو د جعفر ماشومان یې را ټول کړل هغوی یې په مینه ځان ته نږدې کړل او ښکل یې کړل بیا یې د دوی او د ددوی د پلار په حق کې د خیر دعا وکوله دی مبارکهماغلته د شهادت په ځای کې خاورو ته و سپارل شو اوس یې هم په قبر باندې ښکلی مزار جوړ کړی دی په کرک نومي ځای کې د مزار په نوم ښار گوټي کې دی په اردن کې د عمان ښار په جنوب کې په ۱۴۰ کېلو متری کې واقع دی .

حضرت ابو هريره فرمایي رسول الله ﷺ فرمايل :
رَأَيْتُ جَعْفَرَ بْنَ أَبِي طَالِبٍ مَلَكًا يَطِيرُ مَعَ الْمَلَائِكَةِ بِنَاحِينَ ^۱

ترجمة : ما جعفر بن ابی طالب د فرشتې په شکل کې ولیدو د ملائکو سره آلتولو .

حضرت حمزة

سید الشهداء حضرت حمزة بن عبد المطلب د رسول الله ﷺ مبارک تره وو په پوره میرانه او غیرت سره یې په سختو حالتونو کې د رسول الله ﷺ مرسته کړې وه پوره تفصیل ، قصه او د ژوند حالات یې مخکې تېر شوي دي په اُحد کې الله ورته شهادت نصیب کړو حضرت ابن عباس فرمایي رسول الله ﷺ فرمایل : دَخَلْتُ الْجَنَّةَ الْبَارِحَةَ فَنَظَرْتُ فِيهَا فَإِذَا جَعْفَرٌ يَطِيرُ مَعَ الْمَلَائِكَةِ ، وَإِذَا حَمْزَةُ مُتَكِيٌّ عَلَى سَرِيرٍ .¹

ترجمة : تېره شپه زه جنت ته ننوتلم پکې ومې کتل ومي لیدل چې جعفر له ملائکو سره آوولو او حمزة په تخت باندې ناست وو تکیه یې کړې وه .

حضرت عبد الله بن محمد بن عقیل فرمایي ما له حضرت جابر بن عبد الله څخه واورېدل چې هغه فرمایل :

فَقَدَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ أَحُدٍ حَمْزَةَ حِينَ فَأَاءَ النَّاسِ مِنَ الْقِتَالِ ، قَالَ : فَقَالَ رَجُلٌ : رَأَيْتُهُ عِنْدَ تِلْكَ الشَّجَرَةِ ، وَهُوَ يَقُولُ : أَنَا أَسَدُ اللَّهِ ، وَأَسَدُ رَسُولِهِ ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَبْرَأُ إِلَيْكَ مِمَّا جَاءَ بِهِ هَؤُلَاءِ لِأَبِي سُفْيَانَ وَأَصْحَابِهِ ، وَأَعْتَذِرُ إِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ هَؤُلَاءِ مِنْ أَنْهَزَامِهِمْ ، فَسَارَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ نَحْوَهُ ، فَلَمَّا رَأَى جَبْهَتَهُ بَكَى ، وَلَمَّا رَأَى مَا مُثِّلَ بِهِ شَهَقَ ، ثُمَّ قَالَ : أَلَا كَفَنَ ؟ فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ فَرَمَى بِثَوْبٍ ، قَالَ جَابِرٌ : فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : سَيِّدُ الشُّهَدَاءِ عِنْدَ اللَّهِ تَعَالَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَمْزَةُ .²

ترجمة : د اُحد په ورځ چې کله جنگ ختم شو له رسول الله ﷺ څخه حضرت حمزة ورک وو یو کس وویل ما هغه ولیدو د هغه ونې سره وو او ویل یې زه د الله او د هغه د رسول زمری یم او ویل یې اې

¹ المستدرک

² رواه الحاكم في المستدرک

الله زه بيزاره يم تاته له هغه څه نه چې دې خلکو ابو سفیان او د هغه ملګرو راوړي دي او زه تاته عذر وړاندې کوم له هغه څه نه چې دې خلکو وکول له شکست نه ... رسول الله ﷺ هغه لوري ته ورغلو چې هغه کس ورته ياد کړی وو کله يې چې د هغه مبارک په تندي باندې سترګې ولګېدلې په ژړا شو کله يې چې هغه څه وليدل چې دده د شکل مبارک سره شوي وو (پوزه او غوړونه ترېنه پرې کړل شوي وو) نو بد اثر يې پرې وکولو بيا يې وويل : دا په کفن نه شو؟ يو کس له انصارو څخه پاڅېدو خپله جامه يې ور واچوله حضرت جابر بن عبد الله فرمايي بيا رسول الله ﷺ وفرمايل : د قيامت په ورځ به د شهيدانو سردار د الله په وړاندې حضرت حمزة وي .

حضرت عبد الله بن سلام

حضرت عبد الله بن سلام تر اسلام وړاندې يهودي وو د بني قينقاع له يهودو څخه وو حضرت انس فرمايي دى رسول الله ﷺ ته راغلو ورته ويل يې : زه درڅخه د څو خبرو پوښتنه کوم د هغه ځواب صرف نبي ورکولى شي د قيامت اوله نښه څه ده؟ جنتيان به اول په جنت کې څه خوري؟ ماشوم کله پلار ته او کله مور ته ولې په شکل کې ورته کيږي؟ رسول الله ﷺ ورته وويل : لږ وړاندې جبريل ددې خبرو خبر ماته راکړى دى د قيامت اوله نښه يو اور دى چې له مشرق نه به را پورته شي خلک به مغرب خوا ته وشړي اول چې جنتيان په جنت کې څه شى خوري هغه به د ماهي د جیګر سره زيادتي برخه وي او د ماشوم د شکل خبره داسې ده چې کله د سړي اوبه زر ورسپري نو د ماشوم شکل هغه ته ورشي او که د مور اوبه زر ورسپري نو د ماشوم شکل هغې ته لار شي .

ددې خبرو د آورېدو سره حضرت عبد الله بن سلام وويل : زه ددې گواهي وركوم چې ته د الله رسول يې او په اسلام مشرف شو .

هونيار او عالم سړی وو علمي بحر وو تر اسلام وړاندې يې هم په يهودو کې د رهبر حيثيت درلود او کله چې مسلمان شو رسول الله ﷺ ورسره ډېره زياته مينه کوله او دده هم ورسره ډېره زياته مينه وه حضرت عبد الله بن عباس فرمايي دا آيت دده په اړه نازل شوی دی لَيْسُوا سَوَاءً مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَائِمَةٌ (دوی ټول يو شان نه دي له اهل کتابو ځنې داسې امت هم شته چې قائم وي)¹

حضرت زيد بن عميرة فرمايي : اَنَّ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ لَمَّا حَضَرَتْهُ الْوَفَاةُ ، قَالُوا : يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَوْصِنَا ، قَالَ : أَجْلِسُونِي ، ثُمَّ قَالَ : إِنَّ الْعَمَلَ وَالْإِيمَانَ مِثْلَانِهُمَا مِنَ التَّمَسُّهِمَا وَجَدَهُمَا ، وَالْعِلْمُ وَالْإِيمَانُ مَكَانَهُمَا مِنَ التَّمَسُّهِمَا وَجَدَهُمَا ، فَالْتَمِسُوا الْعِلْمَ عِنْدَ أَرْبَعَةٍ : عِنْدَ عُوَيْرِ أَبِي الدَّرْدَاءِ ، وَعِنْدَ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ ، وَعِنْدَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ ، وَعِنْدَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ الَّذِي كَانَ يَهُودِيًّا فَاسْلَمَ ، فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ ، يَقُولُ : إِنَّهُ عَاشِرُ عَشْرَةٍ فِي الْجَنَّةِ²

ترجمة : كله چېد حضرت معاذ بن جبل د وفات وخت وشو حاضرينو ورته وويل اي ابا عبد الرحمن مونږ ته نصحت وكوه هغه مبارك وويل : ما كينوى بيا يې وويل : بېشكه د عمل او د ايمان ځايونه دي چا چې لتون وكولو پيدا به يې كړي د علم او ايمان ځايونه دي چا چې يې طلب وكولو پيدا به يې كړي د علم د څلورو كسانو سره وغواړئ د حضرت عومير ابى الدرداء ، حضرت سلمان الفارسي، عبد الله بن مسعود او حضرت عبد الله بن سلام سره هغه چې په اول کې يهودي وو بيا يې

¹ سورة آل عمران

² صحيح ابن حبان

اسلام قبول کرو ما له رسول الله ﷺ څخه آوريدلي دي چې هغه ﷺ فرمايل : دا په جنت كي د لسو كسانو لسم دى .

حضرت معاذ بن جبل فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : **عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ عَاشِرُ عَشْرَةٍ فِي الْجَنَّةِ** .¹

ترجمة : حضرت عبد الله بن سلام په جنت كي د لسو كسانو لسم دى (په جنت كي له لسو كسانو څخه يو دى) .

حضرت زيد بن حارثه

د حضرت ابن بريده څخه روايت دى هغه له خپل پلار نه روايت كوي چې رسول الله ﷺ وفرمايل : **دَخَلْتُ الْبَارِحَةَ الْجَنَّةَ فَإِذَا أَنَا بِجَارِيَةٍ ، فَقُلْتُ : لِمَنْ أَنْتِ يَا جَارِيَةُ ؟ قَالَتْ : لِزَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ، فَبَشَّرَهُ بِهَا حِينَ أَصْبَحَ** .²

ترجمة : د شپي زه جنت ته ننوتلم هلته مې يوه جاريه وليده پوښتنه مې ترې وكوله اې جاريې ته د چا يې؟ هغې راته وويل زه د زيد بن حارثه يم كله چې صباء شو نو هغه ته يې پدې باندې زېرى وركړو .

د غزوة مؤتة درى قاندين

د غزوة مؤتة قصه مخكې هم تېره شوه هغه له روميانو سره د صحابه وو د لښكر مخامخ كېدل وو ډېره سخته جگړه وه تفصيلي قصه يې زمونږ (د اسلامي تاريخ له پاڼو څخه) سلسله كي تېره شوېده په هغې غزوة كي دريو قاندينو چې د

¹ صحيح مسند الشاميين

² الاحاد و المثاني

صحابه وو د لشکر مشري يې کوله ډېر په ميرانه سره جنگ وکولو او په ميرانه سره د شهادت لور مقام ته ورسېدل د هغوی لپاره هم رسول الله ﷺ د جنت زيری ورکړی دی هغوی چې کله د غزوة په ځای کې په شهادت ورسېدل رسول الله ﷺ ته يې د معجزې په ډول خبر په مدينه منوره کې ورکړل شو هغه ﷺ چې د هغوی د شهادت خبره صحابه وو ته کوله ويې فرمايل : **أَخَذَ الرَّأْيَةُ زَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ، فَقَاتَلَ بِهَا حَتَّى قُتِلَ شَهِيدًا، ثُمَّ أَخَذَهَا جَعْفَرٌ، فَقَاتَلَ بِهَا حَتَّى قُتِلَ شَهِيدًا.** ثُمَّ صَمَتَ النَّبِيُّ ﷺ، حَتَّى تَغَيَّرَتْ وَجُوهُ الْأَنْصَارِ، وَظَنُّوا أَنَّهُ كَانَ فِي عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَوَاحَةَ بَعْضٌ مَّا يَكْرَهُونَ، قَالَ: "ثُمَّ أَخَذَهَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَوَاحَةَ، فَقَاتَلَ بِهَا حَتَّى قُتِلَ شَهِيدًا"، ثُمَّ قَالَ: "لَقَدْ رُفِعُوا لِي فِي الْجَنَّةِ فِيمَا يَرَى النَّائِمُ عَلَى سُرُرٍ مِنْ ذَهَبٍ، فَرَأَيْتُ فِي سَرِيرِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَوَاحَةَ اِزْوَارًا عَنْ سَرِيرِي صَاحِبِيهِ، فَقُلْتُ: بِمَ هَذَا؟ فَقِيلَ لِي: مَضِيًا، وَتَرَدَّدَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَوَاحَةَ بَعْضُ التَّرَدُّدِ، وَمَضَى." ¹

ترجمة : په اول کې د مسلمانانو بيرغ حضرت زيد بن حارثه واخيست هغه جنگ وکولو تردې چې شهيد شو بيا هغه بيرغ جعفر واخيستو تردې چې شهيد شو بيا رسول الله ﷺ چې شو د انصارو د مخونو رنگونه متغير شول دوی گمان وکولو چې رسول الله ﷺ چې شو په حضرت عبد الله بن رواحه کې به داسې څه وي چې د دوی نه خوښيږي بيا رسول الله ﷺ وفرمايل : بيا بيرغ حضرت عبد الله بن رواحه واخيستو هغه جنگ وکولو تردې چې هغه هم شهيد شو بيا يې وويل : دوی زما د پاره په جنت کې پورته را ښکاره شول لکه انسان چې خوب ويني د سرو زرو په تختونو باندې وو ما وليدل چې د حضرت عبد الله بن رواحه په تخت کې يو څه کور والی وو د نورو دوو ملگرو څخه ما پوښتنه وکوله دا ولې دی؟ ماته وويل شول چې هغوی په مخه لارل او حضرت عبد الله بن رواحه يو څه تردد

وکولو بیا لارو .

یو تور سری

دا بختور چې لا یې رسول الله ﷺ ته او مسلمانانو ته خپل نوم هم ور ونه ښودو الله ورته لوړ بخت ورکړو په یوه غزوة کې په شهادت ورسېدو حضرت انس فرمایي : اَنَّ رَجُلًا أَسْوَدَ أَتَى النَّبِيَّ ﷺ ، فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ ، إِنِّي رَجُلٌ أَسْوَدٌ ، مُنْتِنُ الرِّيحِ ، قَبِيحُ الْوَجْهِ ، لَا مَالَ لِي ، فَإِنْ أَنَا قَاتَلْتُ هَؤُلَاءِ حَتَّى أُقْتَلَ ، فَأَيْنَ أَنَا ؟ قَالَ : فِي الْجَنَّةِ ، فَقَاتَلَ حَتَّى قُتِلَ ، فَأَتَاهُ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ : قَدْ بَيَّضَ اللَّهُ وَجْهَكَ ، وَطَيَّبَ رِيحَكَ ، وَأَكْثَرَ مَالَكَ ، وَقَالَ لِهَذَا أَوْ لِعَبْرَةٍ : لَقَدْ رَأَيْتُ رَوْجَتَهُ مِنَ الْحُورِ الْعِينِ ، نَازَعَتْهُ جَبَّةٌ لَهُ مِنْ صُوفٍ ، تَدْخُلُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ جُبَّتِهِ .

ترجمه : یو تورکس راغلو رسول الله ﷺ ته یې وویل یا رسول الله ﷺ زه یو تور سری یم بد بوی مې دی بد مخ مې دی (بد رنگ یم) مال هم نلرم که چېرته زه جنګ وکوم تردې چې ووژل شم زه به چېرته وم؟ رسول الله ﷺ ورته وفرمایل : په جنت کې هغه کس ددې خبرې سره په جنګ ور شریک شو تردې چې ووژل شو د شهادت نه وروسته یې رسول الله ﷺ ورته راغلو ورته یې وویل : الله ستا مخ سپین کړو ، ستا بوی یې ښه کړو ، ستا مال یې زیات کړو او دده په حق کې او که د بل چا په حق کې یې دا هم وویل چې ما دده له حورو نه دده ښځه ولیده چې دده د وړیو له چپنې سره یې چیر کاوه دده د چپنې او دده د بدن په مینځ کې یې ځان ورننه ایستل غوښتل .

حضرت عمرو بن الجموح

واقعہ او قصہ یی د احد د غذا په تفصیل کې
 زمونږ (د اسلامي تاریخ له پاڼو څخه) کې تېره
 شوېده دا مبارک په پښه باندې ګوډ وو څلور
 زامن یی وو چې د رسول الله ﷺ رښتیني فوځیان وو
 او په هر میدان کې به د رسول الله ﷺ سره حاضر
 وو کله چې د احد د غذا اواز وشو او رسول الله ﷺ
 د احد خوا ته روان شو ده ته یی زامنو وویل
 بېشکه الله ته معاف کړی یی ته یی معذور ګڼلی یی
 که ته په کور کې ناست وی مونږ بس وو چې د
 رسول الله ﷺ سره لاړ شو هسې هم الله په تا باندې
 جهاد نه دی فرض کړی ده چې دا خبرې واورېدې
 رسول الله ﷺ ته راغلو ورته یی وویل: یا رسول الله
 ﷺ دا زما زامن ما لدې منع کوي چې زه لتا
 سره لاړ شم والله زه شهادت غواړم او ددې ګوډې پښې
 سره جنت ته لاړ شم رسول الله ﷺ ورته وویل: اَمَّا أَنْتَ
 فَقَدْ وَضَعَ اللَّهُ عَنْكَ الْجِهَادَ (الله لتا څخه د جهاد حکم وضع
 کړی دی یعنې په تا یی نه دی فرض کړی ته د خپل
 ګوډ والي له امله معذور یی) بیا یی زامنو ته
 وویل: تاسې ته څه تکلیف دی که دا پریږدئ
 کېدای شي الله ورته شهادت ورکړي زامنو هم ورته
 وویل که ته وتل غواړې نو راځه لاړ شه د احد
 میدان ته صرف د شهادت په امید لاړو په جګ کې
 یی لکه د جوړ سړي داسې برخه واخیسته او الله
 ورته شهادت ورکړو .

د حضرت ابی قتاده نه روایت دی هغه فرمایي:
 أَتَى عَمْرُو بْنُ الْجُمُوحِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَرَأَيْتَ إِنْ قَاتَلْتُ
 فِي سَبِيلِ اللَّهِ حَتَّى أَقْتَلَ أَمْشِي بِرَجُلِي هَذِهِ صَاحِبَةٌ فِي الْجَنَّةِ؟ وَكَانَتْ رَجُلُهُ
 عَرَجَاءً، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: نَعَمْ، فَقَتَلُوا يَوْمَ أُحُدٍ هُوَ وَابْنُ أَخِيهِ، وَمَوْلَى لَهُمْ،
 فَمَرَّ عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَقَالَ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْكَ تَمْشِي بِرَجُلِكَ هَذِهِ صَاحِبَةٌ فِي

الْجَنَّةِ، فَأَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِهِمَا وَبِمَوْلَاهُمَا فَجُعِلُوا فِي قَبْرِ وَاحِدٍ .¹

ترجمة : حضرت عمرو بن الجموح رسول الله ﷺ ته راغلو ورته يې وويل يا رسول الله ﷺ ستا څه نظر دی که زه د الله په لاره کې جهاد وکوم تردې چې ووژل شم او په جنت کې به زه ددې پښې سره لار شم چې دا جوړه وي؟ او پښه يې گوډه وه رسول الله ﷺ ورته وويل : هو د أحد په ورځ يو دی او يو دده وراره او يو ددوی ازاد کړل شوی غلام شهيدان شول رسول الله ﷺ يې په خوا کې تېرېدو ويې فرمايل : لکه زه چې همدا اوس ده ته گورم پدې پښه پداسې حالت کې چې جوړه وي په جنت کې گرځي رسول الله ﷺ امر وکولو دی او هغه د دوی ازاد غلام يې په يوه قبر کې دفن کړل .

حضرت جابر فرمايي : جَاءَ عَمْرُو بْنُ الْجَمُوحِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ ، فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ ، مَنْ قُتِلَ الْيَوْمَ دَخَلَ الْجَنَّةَ ؟ قَالَ : نَعَمْ . قَالَ : فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ ، لَا أَرْجِعُ إِلَى أَهْلِي حَتَّى أَدْخُلَ الْجَنَّةَ ، فَقَالَ لَهُ عَمْرُو بْنُ الْخَطَّابِ : يَا عَمْرُو ، لَا تَأَلَّ عَلَى اللَّهِ ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : مَهْلًا يَا عَمْرُو ، فَإِنَّ مِنْهُمْ مَنْ لَوْ أَفْسَمَ عَلَى اللَّهِ لِأَبْرَهُ : مِنْهُمْ عَمْرُو بْنُ الْجَمُوحِ ، يَخُوضُ فِي الْجَنَّةِ بِعَرَجَتِهِ .²

ترجمة : حضرت عمرو بن الجموح رسول الله ﷺ ته د احد په ورځ راغلو ورته يې وويل : يا رسول الله ﷺ څوک چې نن شهيدان شي هغه به جنت ته ځي؟ رسول الله ﷺ ورته وويل : هو ... ده وويل : زما د په هغه ذات قسم وي چې زما نفس يې په لاس کې دی زه تر هغه وخته پورې خپل کور ته نه ور گرځم ترڅو جنت ته داخل نه شم حضرت عمر ورته

¹ غاية المقصد

² صحيح ابن حبان

وويل اي عمرو په الله باندې د كوم شي الزام مه كوه رسول الله ﷺ ورته وويل : صبر وكوه عمره بېشكه له دې خلكو نه ځينې داسې دي كه په الله باندې قسم وكوي الله به يې په خپل قسم كې بري كړي يو د هغوى نه عمر بن الجموح دى په جنت كې د خپلې گوډې پښې سره ننوزي .

عكاشه بن محصن الأسدي

ددې بختور صحابي واقعه د احاديثو په كتابونو كې ډېره مشهوره ده هغه شخصيت دى كله چې رسول الله ﷺ خبره كوله چې زما د امت نه به اويا زره كسان جنت ته بغير د حساب نه داخليري حضرت عكاشه ورته وويل يا رسول الله ﷺ ماته دعاء وكوه چې زه هم له دوى نه شم رسول الله ﷺ ورته وويل : ته له دوى څخه يې .

حضرت زيد بن عمرو بن نفيل

دا هغه كس وو چې تر رسول الله ﷺ مخكې په مكه مكرمه كې د جاهليت په وخت كې پيدا شوى وو او د جاهليت په وخت كې به يې خلك د الله وحدانيت ته ور وغوښتل حضرت عائشه فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : دَخَلْتُ الْجَنَّةَ فَرَأَيْتُ لَزِيدَ بْنِ عَمْرٍو بِنِ ثَفِيلٍ دَرَجَتَيْنِ¹ .

ترجمة : زه جنت ته ننوتلم د زيد بن عمرو بن نفيل لپاره مې دوې درجې وليدې .

الغميصاء (د حضرت انس بن مالك مور)

¹ اخرجه ابن عساكر

دا مبارکه بي بي وه خپل زوی حضرت انس یې په ماشومتوب کې د رسول الله ﷺ خدمت ته وقف کړی وو. حضرت انس بن مالک فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي : دَخَلْتُ الْجَنَّةَ فَسَمِعْتُ حَشْحَشَةً بَيْنَ يَدَيَّ فَإِذَا هِيَ الْغُمَيْصَاءُ بِنْتُ مِلْحَانَ أُمِّ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ .¹

ترجمة : زه جنت ته ننوتلم په خپله مخه کې مې د کومې زنانه د زېوراتو اواز واورېدو چې ومې لیده هغه حضرت الغميصاء بنت ملحان د انس بن مالک مور وه .

په بل حدیث کې حضرت انس بن مالک فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي : دَخَلْتُ الْجَنَّةَ فَسَمِعْتُ حَشْفَةً فَقُلْتُ مَنْ هَذَا قَالُوا هَذِهِ الْغُمَيْصَاءُ بِنْتُ مِلْحَانَ أُمِّ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ .²

ترجمة : زه جنت ته ننوتلم هلته مې اواز واورېدو پوښتنه مې وکوله دا څوک دي دوی راته وویل : دا الغميصاء بنت ملحان ده د انس بن مالک مور .

حسنين

د رسول الله ﷺ گران لمسي حضرت حسن او حضرت حسين چې رسول الله ﷺ ته ډېر زيات گران وو د دوی په اړه رسول الله ﷺ فرمایي : ان ملکا من السماء لم يكن زارني فاستأذن الله في زيارتي فبشرني أن الحسن والحسين سيدا شباب أهل الجنة .³

ترجمة : بېشکه يوه فرشته چې مخکې يې زما

1 مسند امام احمد ابن حنبل

2 صحيح مسلم

3 مجمع الزوائد

زیارت نه وو کړی له الله نه یې زما د زیارت اجازه وغوښته هغه ماته زېری راکړو چې حسن او حسین به د جنت د ځوانانو مشران وي .

حضرت بلال

حضرت بلال چې د هیچا د تعریف اړ نه دی او هرڅوک یې له نوم سره شناخته دي داسې په پاکه توګه او د زړه د اخلاص نه یې ایمان راوړی وو چې د مجبورو او د بل چا د لاس لاندې خلکو ته یې یوه نمونه جوړه کړېده دده په اړه د حضرت بریده څخه روایت دی رسول الله ﷺ فرمایل : سَمِعْتُ حَشْفَةَ أَمَامِي ، فَقُلْتُ : مَنْ هَذَا ؟ فَقَالُوا : بِلَالٌ ، فَأَخْبَرَهُ ، وَقَالَ : بِمَ سَبَقْتَنِي إِلَى الْجَنَّةِ ؟ قَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ ، مَا أَحَدَنْتُ إِلَّا تَوَضَّأْتُ ، وَلَا تَوَضَّأْتُ إِلَّا رَأَيْتُ أَنَّ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ رَكْعَتَيْنِ أَصْلِيَهُمَا قَالَ : بِهَا .¹

ترجمة : (په جنت کې) ما په خپل مخ کې (تر ځان وړاندې) اواز واورېدو ما وویل دا څوک دي؟ دوی راته وویل دا بلال دی بیا یې ددې په اړه خپله حضرت بلال ته هم خبر ورکړو ورته یې وویل : ته په څه سره زما نه جنت ته مخکې ورسېدې؟ حضرت بلال ورته وویل : زه چې کله هم بې اودسه شم نو اودس کوم او کله هم چې اودس وکوم نو دوه رکعتونه مونځ کوم رسول الله ﷺ ورته وویل : په همدې سره .

حضرت جابر فرمایي رسول الله ﷺ فرمایل : أُدْخِلْتُ الْجَنَّةَ ، فَسَمِعْتُ حَشْفَةَ أَمَامِي ، فَقُلْتُ : مَنْ هَذَا ؟ قَالَ جَبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ : هَذَا بِلَالٌ .²

ترجمة : زه جنت ته ننه ایستل شوم او په خپله

¹ الاحاد و المثاني

² صحيح ابن حبان

مخه کي مې اواز واورېدو ما ويل دا څوک دي؟
حضرت جبريل راته وويل دا بلال دی .

د حضرت ابن عباس څخه روايت دی هغه فرمايي :
لَيْلَةً أُسْرِيَ بِنَبِيِّ اللَّهِ ﷺ دَخَلَ الْجَنَّةَ ، فَسَمِعَ وَجَسًا ، فَقَالَ : " يَا جِبْرِيلُ ، مِنْ هَذَا ؟ " . قَالَ : هَذَا بِلَالُ الْمُؤَذِّنُ ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِلنَّاسِ حِينَ جَاءَ : " قَدْ أَفْلَحَ بِلَالٌ ، رَأَيْتُ لَهُ كَذَا وَكَذَا ¹ .

ترجمة : په کومه شپه چې د شپې رسول الله ﷺ بوتلل شو جنت ته ننوتلو هلته يې اواز واورېدو پوښتنه يې وکوله جبريله دا څوک دي هغه ورته وويل : دا بلال مؤذن دی رسول الله ﷺ چې کله راغلو خلکو ته يې وويل : بلال کامياب شو ما داسې داسې وليدو .

الأصيرم عمرو بن ثابت

دا هغه بختور صحابي وو چې تر ډېره وخته پورې به خلکو ورته اسلام وړاندې کولو لکن ده ورڅخه انکار کولو کله چې رسول الله ﷺ له خپلو صحابه وو سره د اُحد ميدان ته روان شو دده زړه ته اسلام لاره ورپيدا کړه او په ايمان مشرف شو په ډېره مېړانه له رسول الله ﷺ سره ميدان ته لاړو او په اُحد کې الله ورته شهادت نصيب کړو حضرت ابو هريره يو وخت په مجلس کې ناست وو حاضر و خلکو ته يې وويل : ماته داسې څوک را وښايي چې هغه جنت ته تللی وي او بالکل يې مونځ نه وي کړی ددې سوال په ځواب کې حاضر خلک چپ پاتې شول بيا يې له ده مبارک څخه پوښتنه وکوله ده وفرمايل : دا حضرت أصيرم بن عبد الأشهل عمرو بن ثابت بن وقش وو دده واقعه داسې وه :

كان يأبى الإسلام على قومه، فلما كان يوم أحد وخرج رسول الله إلى أحد بدا له الإسلام فأسلم، فأخذ سيفه فغدا حتى القوم فدخل في عرض الناس فقاتل حتى أثبتته الجراح، فبينما رجال عبد الأشهل يلتمسون قتلاهم في المعركة إذا هم به، قالوا: والله إن هذا لأصيرم، وما جاء به لقد تركناه وإنه لمنكر لهذا الحديث فسألوه ما جاء به، فقالوا: ما جاء بك يا عمرو أحدثاً على قومك أم رغبة في الإسلام؟ فقال: بل رغبة في الإسلام آمنت بالله ورسوله وأسلمت ثم أخذت سيفي فغدوت مع رسول الله ﷺ فقاتلت حتى أصابني ما أصابني، فلم يلبث أن مات في أيديهم فذكروه لرسول الله ﷺ فقال «إنه من أهل الجنة».¹

ترجمة : ده ته به چې دده د قوم خلكو د اسلام دعوت وركاوه ده به ورځه انكار كاوه كله چې د احد ورځ وه رسول الله ﷺ اُحد ته ووتلو اسلام ورته ښه ښكاره شو نو اسلام يې قبول كړو خپله توره يې را واخيسته په قوم پسې ور ورسېدو د اسلام لپاره يې په جنگ شروع وكوله جنگ يې وكولو تردې چې هغه زخمي شو كله چې دده د قبيلي عبد الاشهل خلك په خپلو كسانو پسې گرځېدل او د جنگ په ميدان كې يې خپل شهيدان كتل په ده باندې ورغلل ويل يې والله دا خو اصيرم دى دا دلته د څه لپاره راغلى دى مونږ خو چې راتلو ده خو ددې خبرې (اسلام) څخه انكار كاوه پوښتنه يې ترې وكوله : د څه لپاره راغلى يې د خپل قوم نه د دفاع لپاره او كه په اسلام كې دې رغبت پيدا شوى وو؟ ده ورته وويل : نه په اسلام كې مې رغبت پيدا شوى وو په الله او د هغه په رسول باندې مې ايمان راوړو بيا مې توره را واخيسته د رسول الله ﷺ سره را ووتلم جنگ مې وكولو چې دا زخم راته ورسېدو ډېر وخت تېر نه شو چې د دوى په لاسونو كې يې ساه وركړه رسول الله ﷺ ته يې د هغه واقعه بيان كړه رسول الله ﷺ وفرمايل هغه جنتي دى .

حضرت حارثة بن النعمان

جليل القدر انصاري خزرجي صحابي دی په بدر، احد، خندق او د رسول الله ﷺ سره په هر میدان کې حاضر وو. حضرت ابن عباس فرمایي یو وخت حارثة بن النعمان په رسول الله ﷺ سره تېریدو رسول الله ﷺ له حضرت جبریل سره خبرې کولې ده ورباندې سلام وانه اچولو حضرت جبریل پوښتنه وکوله چې ده سلام ولې وانه اچولو؟ بیا رسول الله ﷺ له ده څخه پوښتنه وکوله ته چې هلته تېر شوې تا سلام ولې وانه اچولو؟ ده ورته وویل : ما ته ولیدې یو کس سره د خبرې کولې ما نه غوښتل ستاسې خبرې کت کړم رسول الله ﷺ ورته وویل : ولې تا هغه کس ولیدو؟ ده ورته وویل : هو ما ولیدو رسول الله ﷺ ورته ویل : هغه حضرت جبریل وو.

حضرت عائشة فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي : دَخَلْتُ الْجَنَّةَ ، فَسَمِعْتُ فِيهَا قِرَاءَةً ، فَقُلْتُ : مَا هَذِهِ ؟ قَالُوا : حَارِثَةُ بْنُ النُّعْمَانِ ، كَذَّاكُمُ النَّبِيُّ ، كَذَّاكُمُ النَّبِيُّ ، كَذَّاكُمُ النَّبِيُّ ، وَكَانَ بَرًّا بِأُمَّهِ .¹

ترجمة : زه جنت ته ننوتلم هلته مې تلاوت واورېدو ما وویل : دا څه شی دي؟ دوی راته وویل دا حارثة بن النعمان دی داسې نیکي کوئ ، داسې نیکي کوئ ، داسې نیکي کوئ هغه له مور سره ډېره نیکي کوله .

آل یاسر

د حضرت عمار بن یاسر کورنی ده په اسلامي

تاریخ کې مشهور خلک دي د اسلام په شروع کې دا هغه کورنۍ ده چې د کفارو له لاسه یې ډېر ظلمونه ولیدل خو الله په اسلام باندې دومره کلک کړي وو چې مرگ ته تیار وو خو د اسلام څخه یوه زړه هم وانه وښتل د حضرت عمار مور حضرت سمیه په اسلام کې اول شهیده ده د ابی جهل په لاس په شهادت ورسېده همدارنگه د هغې خاوند کله چې دوی په عذاب کې وو رسول الله ﷺ ورته زېری ورکړی وو رسول الله ﷺ ورته فرمایلي وو : صبرا آل یاسر، صبرا آل یاسر، فإن موعدکم الجنة (صبر وکوئ صبر وکوئ آل یاسر بېشکه ستاسې ځای جنت دی) او په یو روایت کې یې ورته ویلي وو : صبرا یا آل یاسر، اللهم اغفر لآل یاسر، وقد فعلت (صبر وکوئ آل یاسر ای الله آل یاسر ته بښنه وکوي او بېشکه تا ورته کړېده)

حضرت ابو الدحداح

جليل القدر انصاري صحابي دی ثابت بن الدحداح، ابو الدحداح، ابو الدحداحة پدې ټولو نومونو یادېدو دا مبارک هغه لور شخصیت وو چې کله د احد په جنگ کې منافقینو اواز ه خپره کړه چې محمد ﷺ شهید شو ده په لور اواز چغه کړه یا معشر الأنصار إن کان محمد قتل، فإن الله حي لا يموت فقاتلوا عن دينکم (یعني ای انصارو که چېرته محمد ﷺ شهید شوی وي الله ژوندی دی هغه نه مړ کیږي د خپل دین څخه جنگ وکوئ) د احد په جنگ کې په ډېر میرانه و جنگېدو په هغه وخت کې خالد بن ولید چې د کفارو له لوري جنگېدو او په اسلام نه وو مشرف شوی په ده یې د نیزې وار وکولو له ده سره په خوا کې چې څومره انصار ملګري وو په شهادت ورسېدل دی مبارک له هغه ټولو زخمونو څخه جوړ شو د هجرت په ۶ کال له بیماری نه وفات شو .

حضرت عبد الله بن مسعود فرمائي لَمَّا نَزَلَتْ: مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا [الحديد آية 11] ، قَالَ أَبُو الدَّحْدَاحِ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يُرِيدُ مِنَّا الْقَرْضَ؟ قَالَ: نَعَمْ، يَا أَبَا الدَّحْدَاحِ، قَالَ: أَرْنِي يَدَكَ، فَنَاقِلُهُ يَدَهُ، فَقَالَ: إِنِّي قَدْ أَقْرِضْتُ رَبِّي حَائِطِي، وَفِي حَائِطِي سِتُّ مِائَةٍ نَخْلَةٍ، ثُمَّ جَاءَ إِلَى الْحَائِطِ فَنَادَى يَا أُمَّ الدَّحْدَاحِ، وَهِيَ فِي الْحَائِطِ، فَقَالَتْ: لَبَّيْكَ، فَقَالَ: أَخْرِجِي فَقَدْ أَقْرِضْنَهُ رَبِّي¹.

ترجمة : كله چي دا آيت نازل شو (خوڪ داسي شته چي الله ته نيك قرض وركري حضرت ابو الدحداح وويل يا رسول الله ﷺ الله له مونږ نه قرض غواړي؟ رسول الله ﷺ ورته وويل : هو يا ابا الدحداح ده ورته وويل زه ستا لاس غواړم رسول الله ﷺ خپل مبارك لاس وركړو ورته يې وويل زه خپل ټول باغ الله ته قرض وركوم او زما په باغ كې شپږ سوه ٦٠٠ خورماوې دي بيا خپل باغ ته راغلو خپلي ښځې ته يې اواز وكولو او هغه په باغ كې وه .. هغې ورته وويل لبيك .. ده ورته وويل : د باغ نه بهر شه دا ما الله ته قرض وركړو .

حضرت ورقه بن نوفل

تاريخي شخصيت وو كله چي په رسول الله ﷺ باندي وحى راغله نه پوهېدو چي دا څه ډول كيفيت دى نو حضرت خديجي دې كس ته ور وستلى وو دا د اكثر اقوالو له مخې عيسايي وو او د انجيل تلاوت به يې كاوه هغه رسول الله ﷺ ته ډېرې خبرې وكولې په رسول الله ﷺ يې ايمان راوړو او تمنا يې ښكاره كړه چي كاش دى تر هغه وخته پورې ژوندى وي چي كله رسول الله ﷺ خپل د نبوت كار خلكو ته ښكاره كوي او دى به د رسول الله ﷺ

مرسته وكوي .

حضرت عائشه فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : لَا تَسُبُّوا
وَرَقَةً فَإِنِّي رَأَيْتُ لَهُ جَنَّةً أَوْ جَنَّتَيْنِ .¹

ترجمة : ورقه ته ښکښل مه کوئ بېشکه ما د هغه
لپاره يو يا دوه جنتونه وليدل .

صحابه بالعموم

دا پورتنی کسان بالخصوص د دوی په اړه روایات
راغلي دي چې هغوی جنتیان دي او هغه کسان چې د
رسول الله ﷺ ملګري یې کړي ده او په هغه باندې
یې ایمان راوړی دی او له هغه سره د تکلیفونو
برداشت کولو ته تیار شوي وو د هغوی لپاره په
عمومو توګه جنت یاد کړل شوی دی الله فرمایي :
وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ .²

ترجمة : او هغه وړاندني اولني (ایمان لرونکي)
له مهاجرینو نه او له انصارو نه او (نور) هغه
کسان چې متابعت کړی دی دوی د (سابقانو) په
احسان (نیکي) سره راضي شوی دی الله له دوی نه
(په قبول د طاعت سره) او راضي شوي دي دوی له
الله نه (په اعطاء د نعمت) او تیار کړی دی (الله)
دوی ته جنتونه چې بهیري لاندې د (ونو او مانیو
د) دوی (خلور قسمه) ویالې چې تل به وي دوی په
هغو کې همېشه ، دغه (رضا او جنت) بری دی ډېر
لوی .

په بل ځای کې الله فرمایي : لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ

¹ المستدرک

² سورة التوبة آية ۱۰۰

الْفَتْحِ وَقَاتَلَ أُولَئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدِ وَقَاتَلُوا وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ .¹

ترجمة : نه دي برابر له تاسي څخه هغه چي لگولي ئي دي (مال خپل په لاره د الله کي) پخوا له فتحې (د حديبيي يا د مکي) څخه او بيا يي جنگ کړی دی (له اعداء الله سره لپاره د اعلاء د کلمة الله) دا لگوونکي د مالونو خپلو په لاره د الله کي او جنگېدونکي پخوا له فتحې (د حديبيي يا دمکي نه) ډېر لوی دی له جهته د درجي مرتبي له هغو کسانو چي لگوي مال خپل په لاره د الله کي وروسته (له فتح مکي نه) او جنگيري (لپاره د اعلاء د کلمة الله) او له دواړو طائفو سره وعده کړې ده الله د نيکي (جنت)

تر قيامت وړاندې جنت ته ننوتلي

جنت ته به هغه وخت خلک ځي کله چي د قيامت په ورځ د خلکو په مينځ کي فيصله وشي جنتيان او دوزخيان سره جدا کړل شي او د هرې ډلې په اړه فيصله وشي بيا به دواړه ډلې په ټولي ټولي سره جنت او دوزخ ته لاړ شي ځيني داسې خلک هم شته چي تر قيامت وړاندې جنت ته ننوتلي وي د مثال په توگه :

شهيدان

شهيدان هم په هغه كسانو كې چې دې چې تر قيامت وړاندې جنت ته ننوزي څنگه چې شهيدان شي مبارك ارواح يې جنتونو ته ځي الله فرمايي : **وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ**.¹

ترجمة : او له سره گمان مه كوئ! (اې محمده يا اې سامعه !) پر هغو كسانو چې وژل شوي دي دوى په لاره د الله (جهاد او طاعت) كې د مړو (مړه نه دي) بلكه ژوندي دي په نزد د رب خپل رزق ورته وركول كيږي (له جنتي خوراكونو او څښاكونو څخه) .

حضرت مسروق فرمايي مونږ د حضرت عبد الله بن مسعود څخه ددې آيت د مطلب په اړه پوښتنه وكوله چې هغوى ته څه ډول رزق وركول كيږي؟ هغه مبارك وفرمايل مونږ هم ددې په اړه له رسول الله ﷺ څخه پوښتنه وكوله رسول الله ﷺ وفرمايل : د شهيدانو ارواح په شنو مارغانو كې وي تر عرش لاندې چراغونه وي په هغې كې كيني او په جنت كې يې چې كوم ځاى ته خوښه شي هلته آلوزي او بيا بېرته هغه چراغونو ته راځي الله ورڅخه پوښتنه كوي تاسې څه شي ته اشتها لري؟ څه شى غواړئ؟ دوى ورته وايي مونږ به نور څه شى وغواړو زموږ چې چېرته خوښه شي په جنت كې هغه ځاى ته ورځو بيا به ورڅخه همدارنگه پوښتنه وشي او بيا به ورڅخه همداسې پوښتنه وشي كله چې دوى پوه شي چې دوى تر هغه وخته نه پرېښودل كيږي چې ترڅو څه شى ونه غواړو دوى به ووايي ربه مونږ غواړو چې زموږ راواچ بېرته زموږ بدنونو ته وگرځول شي ترڅو ستا په لاره كې جهاد وكوو او ستا په لاره كې يو ځل بيا ووژل شو كله

چې ښکاره شي چې د دوی څه نه دي په کار پرې به
ښودل شي .

د جنت نومونه

د جنت لپاره متعدد نومونه دي

جنت

جنت یو عام نوم دی چې د هغه ځای او هغه څه چې
هلته دي د ټولو شیانو لپاره کارول کیږي او
اصل کې ددې لفظ معنی د سر او پردې نه جوړه
شوېده او دا (ج) او (ن) چې په عربي کې په
کومو الفاظو کې کارول شوي وي هغه اکثر پټ وي
لکه جنین (د مور په گډه کې ماشوم) جن
(پېړۍ) او جنت ته جنت ددې امله ویل کیږي چې
دی هم د خلکو د سترگو ، ذهنونو او هرشي نه په
پرده کې دی او پټ دی ځکه د جنت نعمتونه خو
نه چا لیدلي ، نه اورېدلي دي او نه د کوم بشر
په زړه کې ور تاو شوي دي .

دار السلام (د امن کور)

الله په خپله په قرآن کریم کې همدا نوم ورته
ذکر کړی دی الله فرمایي : **لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ** (د
دوی لپاره د دوی د رب سره دار السلام دی) په
بل ځای کې الله فرمایي : **وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى دَارِ السَّلَامِ** (الله
دار السلام ته غوښتنه کوي) جنت ته دارالسلام
ویل کیږي ځکه جنت ټول د امن او سلامتیا ځای دی
دلته چې هرڅوک ورشي هغه بیا د هر ډول خطر،
مصیبت، غم او تکلیف نه په امن کې شي .

دار الخلد (د همېشه پاتې کېدلو کور)

جنت ته دار الخلد هم ويل کيږي ځکه دلته هم هغه کسان چې يو ځل ورننوزي همېشه پاتې کيږي الله د جنتيانو په اړه فرمايي : وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ (يعني دوی به لدې جنت څخه نه ويستل کيږي) .

دار المقامة (د پاتې کيدلو ځای)

جنت ته دار المقامة هم ددې امله وايي چې هلته څوک ورشي هماغلته پاتې کيږي همېشه نه به مړه کيږي او نه به ترېنه بل ځای ته لېږدول کيږي همدلته به پاتې وي الله مونږ ته د جنتيانو يوه مقاله بيانوي چې هغوی به فرمايي : وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ (34) الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ (35) .¹

ترجمة : او وبه وايي (جنتيان په وخت د دخول د جنت کې) ټوله ثناء صفت خاص الله ته دی هغه الله چې بوټي ته (لرې ئې کړ) له مونږ څخه خفگان بېشکه رب زمونږ خامخا ښه بشونکی (د عاصيانو) ښه قدردان (د نيکانو) دی هغه (رب) چې رائي وستو مونږ کور د اقامت (جنت ته) له فضله خپله چې نه رسيږي مونږ ته په دغه (جنت) کې هېڅ مشقت او نه رسيږي مونږ ته په دغه (جنت) کې هېڅ ستوماني خفگان .

جَنَّةُ الْمَأْوَى (د سکون او قرار خای)

جنت ته جنة المأوى ددې امله ويل كيږي چې دلته
كله جنتيان ورشي هلته به سکون او قرار کوي الله
فرمايي : **عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَى** (د سدرة المنتهى سره
جنة الماوى ده)

جنات عدن (د دوام او همېشه والي جنتونه)

ځينې علماء فرمايي چې جنات عدن په جنت کې د
يو ډول جنتونو نوم دی او ځينې علماء فرمايي
چې د ټول جنت صفت دی الله فرمايي : **جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي
وَعَدَ الرَّحْمَنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًا** (61).¹

ترجمة : جنتونه د تل اوسېدلو هغه چې وعده ئې
کړې ده رحمن له بندگانو خپلو سره په غيب
باندې (چې نه ئې دي ليدلي دا جنتونه) بېشکه
شان دادی چې ده وعده د ده (چې جنت دی) خامخا
به راځي ورته اهل يې.

دار الحيوان (د ژوند خای)

جنت ته دار الحيوان هم ويل كيږي ځكه هلته چې
يو ځل څوك ورشي هلته بيا مرگ نشته هلته به
خلک د ټول عمر او همېشه لپاره ژوندي وي او له
خپل ژوند نه به خوند اخلي الله فرمايي : **وَأِنَّ الدَّارَ
الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ** (بېشکه دار الاخرة يعني جنت د
ژوند خای دی)

الفردوس (باغ)

جنت ته فردوس هم ويل کيږي او ځيني علماء فرمايي چې فردوس په جنتونو کې يو غوره او لوړ مقام دی هغه ته ويل کيږي الله فرمايي : **أُولَئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ**.¹

ترجمة : هم دغه (مؤمنان چې پورتنی یاد شوي شپږ نېک صفات ولري) هم دوی دي وارثان (لا ئقان نه نور څوک) هغه (وارثان) چې میراث به اخلي (جنت د) فردوس دوی به په دغه (جنت الفردوس) کې تل پاتې کېدونکي وي.

جنات النعيم (د نعمتونو جنتونه)

جنت ته جنات النعيم هم ويل کيږي ځکه د جنت هرڅه له نعمتونو څخه ډک دي چې هغه هر ډول نعمتونه دي کوم چې خوړل کيږي ، استعمالیږي ، څښل کيږي او داسې نور الله فرمايي : **إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ** (هغه کسان چې ایمان یې راوړی دی او نېک عملونه یې کړي دي د هغوی لپاره جنات النعيم دي) .

المقام الامين (د امن ځای)

جنت ته مقام امين هم ويل کيږي ځکه دا ټول ځای د امن ځای دی څوک هم چې هلته ورشي هلته په امن شي بیا نه ورسره د کوم لوري نه وېره وي او نه د څه خطر احساس کوي الله فرمايي : **أَنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ** (بېشکه مؤمنان به په مقام امين کې وي)

مقعد صدق (د رښتيا د ناستې ځای)

جنت ته مقعد صدق ددې امله ويل كيږي چې دلته هر هغه شی پيدا كيږي چې يو انسان يې د ښه ځای کيनाستلو لپاره ضرورت محسوس کوي الله فرمايي : **إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ * فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِكٍ مُّقْتَدِرٍ .**

ترجمة : بېشکه وېرېدونکي به په جنتونو کې وي او په ويالو کې وي چې څکي له اوبو شرابو، شاتو ، شودو د هغو) په مجلس رښتيا (د جنت) کې په نزد د دباچا لوی قدرت لرونکي (چې هېڅوک يې نشي عاجزولی) .

د جنت مرتبې

په جنت کې مختلفې درجې دي او هغه درجې په دنيا کې د انسانانو په عملونو ورکول كيږي لکه مخکې هم تېر شول چې رسول الله ﷺ وفرمايل چې جنت هېڅوک هم په خپل عمل نشي گټلی څوک چې جنت ته ځي دا ټول د الله په فضل اور حم سره ځي صحابه وو ترې پوښتنه وکوله حتی ته هم؟ رسول الله ﷺ وفرمايل هو زه هم جنت ته د الله په فضل او رحم سره ځم .. نو وروسته ددې چې ټول جنتيان د الله په فضل او رحم سره جنت ته ننوزي هلته په جنت کې به ځينو ته لوړې مرتبې او ځينو ته ښکته ورکول كيږي دا تقسيم به د دوی د عملونو په حساب وي او د الله عدالت چې د انصاف نه ډک دی داسې نه کوي چې يو ځل څوک جنت ته ننوزي بيا به د هغوی د دنيا عملونو ته بالکل نظر نه كيږي بلکه دلته په دنيا کې د چا يو ځل سبحان الله ويل هم د الله په عدالت کې نه ضائع كيږي ددې بدل به انسان ته ورکول كيږي اودا د جنت د مرتبو او درجو ذکر په قرآن کریم کې هم په مختلفو ځايونو کې راغلی دی الله فرمايي :

وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَى .¹

ترجمة : او هرڅوک چې راشي دغه (الله) ته (په قيامت کې) په دې حال کې چې مؤمن وي چې په تحقيق کړي ئې وي ښه (عملونه په دنيا کې) پس دغه مؤمنان چې دي شته دوی ته (درجې) مرتبې ډېرې اوچتې.

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتِلْ أُولَئِكَ أَكْثَرُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدُ وَقَاتِلُوا وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ .²

ترجمة : او څه مانع عذر دی تاسې لره چې نه نفقه کوئ نه لگوئ (مال خپل) په لاره د الله کې او خاص الله لره دی میراث د اسمانونو او د زمکې نه دي برابر له تاسې څخه هغه چې لگولی ئې دي (مال خپل په لاره د الله کې) پخوا له فتحې (د حديبيې يا د مکې) څخه او بيا يې جنگ کړی دی (له اعداء الله سره لپاره د اعلاء د کلمه الله) دا لگوونکي د مالونو خپلو په لاره د الله کې او جنگېدونکي پخوا له فتحې (د حديبيې يا دمکې نه) ډېر لوی دی له جهته د درجې مرتبې له هغو کسانو چې لگوي مال خپل په لاره د الله کې وروسته (له فتح مکې نه) او جنگيوي (لپاره د اعلاء د کلمه الله) او له دواړو طائفو سره وعده کړې ده الله د نيکي (جنت).

لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا (95)

¹ سورة طه آية ٧٥

² سورة الحديد آية ١٠

دَرَجَاتٍ مِنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا (96).¹

ترجمة : نه دي برابر (الله ته) کيناستونکي (په کور کې) له مؤمنانو نه (له جهاده) بي له خاوندانو د عذره او جهاد کوونکي په لاره د الله کې (د دين د ترقي لپاره) په مالونو خپلو سره او په ځانونو خپلو سره فضيلت ورکړی دی الله جهاد کوونکو ته په (لگولو د) مالونو خپلو سره او (په جارولو د) ځانونو خپلو سره پر کيناستونکو باندې (له معذرته) په درجه کې او له ټولو سره (که مجاهد وي که معذور ناست) وعده کړې ده الله د ښې جزا (جنت) او فضيلت ورکړ دی الله جهاد کوونکو ته پر کيناستونکو (له معذرته) په اجر عظيم ډېر لوی سره چې مرتبي دي (لويې چې په عزت او کرامت کې سره متفاوتې دي) له (جانبه د) الله او مغفرت دی او رحمت دی او دی الله ښه ښونکي (د خطياتو) ډېر رحم والا (په انعام د اجر او ثواب سره) .

الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ أَكْثَرُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ .²

ترجمة : هغه کسان چې ايمان ئې راوړی دی (په ټولو مؤمن به شيانو) او هجرت ئې کړی دی او جهاد ئې کړی دی په لاره د الله کې (د دين د ترقي لپاره) په مالونو خپلو (چې په جهاد کې يې لگوي) او په ځانونو خپلو (چې په غذا کې ئې قربانوي) ډېر لوی دی (له نورو نه) له جهته د درجې په نزد د الله او هم دغه (ستایل شوي) کسان هم دوی دي په مراد رسېدونکي.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ وَإِذَا

¹ سورة النساء

² سورة التوبة آية ٢٠

قِيلَ انشُرُوا فَانْشُرُوا يَرْفَعُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ¹ .

ترجمة : اي هغو کسانو چې ايمان ئې راوړی دی (يعني اي مؤمنانو) کله چې وويل شي تاسې ته ځای فراخ کړئ په مجلس کې نو ځای فراخ کړئ چې فراخوالی وکړي الله تاسې لره (په جنت کې) او کله چې وويل شي (تاسې ته) چې پورته شئ! (کوم ښه کار ته لکه مونځ او نور) نو پورته شئ! پورته کوي الله هغه کسان چې ايمان يې راوړی دی له تاسې څخه (په طاعت فرمان برداري د ده) او (خاص پورته کوي) هغه کسان چې ورکړی شوی دی دوی ته علم پوه په درجو مرتبو کې او الله په هغو (کارونو) چې کوئ يې تاسو ښه خبردار دی (نو جزاء به پرې درکړي) .

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا مَدْحُورًا (18) وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا (19) كُلًّا نُمِدُّ هَؤُلَاءِ وَهَؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا (20) انظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَلَِّلْآخِرَةِ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا (21) .²

ترجمة : هرڅوک چې غواړي (په عمل خپل سره) فقط دغه دنيا نو په تلوار به ورکړو مونږ ده ته په دې دنيا کې هومره چې اراده وفرمايو مونږ بيا به وگرځوو مونږ ده ته (عذاب د) دوزخ (په آخرت کې) چې ننوزي به په هغه دوزخ کې ملامت کړل شوی شړل شوی (له رحمته) او هرڅوک چې غواړي آخرت (جنت) او سعی کوي هغه ته سعی لائقه د ده (په طاعت د الله) حال دا چې دی (خالص) مؤمن هم وي نو دغه کسان ده سعی د دوی قبوله (په نزد د الله کې) هر يوه (له دغو طلب گرو د

¹ سورة المجادلة آية ١١

² سورة الاسراء آية ١٨-٢١

دنيا او عقبی) سره مدد کمک کوو مونږ (په روانه ورکړه سره) دغه اولي ډلې سره (چې طالبان د دنيا دي) او د هغه دوهم ټولي سره (چې طالبان د عقبی دي) له ورکولو د رب ستا او نه دي ورکول د رب ستا (په دنيا کې) منع کړل شوي (له هېچا نه) وگوره چې څرنگه فضيلت ورکړی (غوره کړي) دي مونږ ځينې د دوی ته پر ځينو نورو (په رزق او په نورو کې) او خامخا آخرت ډېر لوی دی له جهته د مرتبو او ډېر لوی دی له جهته د بهتر والي (له دنيا نه) .

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ مِّنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ مَّنْ بَعْدَ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنِ اخْتَلَفُوا فَمِنْهُمْ مَّنْ آمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلُوا وَلَكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ .¹

ترجمة : دا ټول رسولان (چې له آدم تر محمده پورې یاد شول) فضيلت ورکړی دی مونږ ځينې د دوی ته پر ځينو نورو ځينې له دوی څخه هغه دي چې کلام کړی دی الله (له دوی سره چې آدم ، موسی او محمد ﷺ دی) او پورته کړي ئې دي ځينو د دوی ته درجې (لکه محمد ﷺ) او ورکړی دی مونږ عیسی زوی د مريمې ته ښکاره معجزې او قوي کړی دی مونږ هغه په روح القدس (جبریل یا انجیل یا اسم اعظم یا عيسوي روح) سره او که اراده کړي وی الله (د ټولو خلکو د هدايت) نو نه به وو کړی جنگ (او اختلاف) هغو کسانو چې وروسته له دې رسولانو څخه وو (د دوی له امتونو څخه) وروسته له هغه چې راغلي دوی ته ښکاره معجزې و ليکن دوی اختلاف سره وکړ نو ځينې له دوی څخه هغه څوک دي چې ثابت پاتې شوي دي په ايمان او ځينې له دوی څخه هغه څوک دي چې کافران شوي او که اراده کړي وای الله (د دوی د هدايت) نو دوی به

نه وو کړی مخالفت ولیکن الله کوي هغه کار چې اراده لري (د چا د هدايت او ضلالت) .

په احاديثو کې هم ددې ذکر راغلی دی چې ځينې مؤمنين تر ځينو نورو غوره دي او په جنت کې به هم همدا په دنيا کې چې ډېر نیک کسان وي دا به په درجه کې تر هغه څخه غوره وي چې هغوی لږ نېک عملونه کړي وي له حضرت ابو هريره څخه روايت دی هغه فرمایي رسول الله ﷺ فرمايل : **الْمُؤْمِنُ الْقَوِيُّ خَيْرٌ وَأَحَبُّ إِلَى اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِ الضَّعِيفِ وَفِي كُلِّ خَيْرٍ اخِرٌ عَلَى مَا يَنْفَعُكَ وَأَسْتَعِينُ بِاللَّهِ وَلَا تَعْجِزُ وَإِنْ أَصَابَكَ شَيْءٌ فَلَا تَقُلْ لَوْ أَنِّي فَعَلْتُ كَانَتْ كَذَا وَكَذَا. وَلَكِنْ قُلْ قَدَرُ اللَّهِ وَمَا شَاءَ فَعَلَ فَإِنَّ لَوْ تَفْتَحُ عَمَلَ الشَّيْطَانِ** .¹

ترجمة : قوی مؤمن غوره دی او الله ته تر ضعیف مؤمن نه گران دی او په هر خیر کې حرص په هغه شي کوه چې تاته فايده کوي د الله نه مرسته وغواړه مه عاجز کیږه که چېرته څه درته ورسېدل داسې مه وایه که چرته مې داسې کړي وای داسې به شوي وای بلکه داسې وایه چې څه د الله خوښه او د هغه تقدیر وي هغه شان کوي ځکه دا لو (که چېرته) ټکی د شیطان عمل را خلاصوي .

د حضرت عمرو بن العاص یو ازاد کړل شوی غلام ابي قیس فرمایي حضرت عمرو بن العاص فرمايل چې هغه له رسول الله ﷺ څخه واورېدل هغه فرمايل : **إِذَا حَكَمَ الْحَاكِمُ فَاجْتَهَدْ ثُمَّ أَصَابَ فَلَهُ أَجْرَانِ ، وَإِذَا حَكَمَ فَاجْتَهَدْ ثُمَّ أَخْطَأَ فَلَهُ أَجْرٌ** .²

ترجمة : کله چې حاکم د یو حکم د شرعي بڼې په را پیدا کولو کې کوښښ وکوي او صحیح یې را پیدا کړه نو دده لپاره دوه اجرونه دي (یو د کوښښ او بل د صحیح حکم) او کله یې چې کوښښ

¹ صحیح مسلم

² صحیح البخاري

وکولو بیا د صحیح حکم په را پیدا کولو کې پاتې راغلو نو دده لپاره یو اجر دی (صرف د کوشن)

نو پدې حدیث کې هم د یو اجر او دوو اجرانو خبره شوېده ښکاره خبره ده چې الله به دې کس ته په جنت کې د یو اجر او د دوو اجرانو مرتبې ورکوي او دا مرتبې الله په ډېره ښه توګه ور تقسیم کولی شي .

حضرت ابو سعید الخدری فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي : **إِنَّ أَهْلَ الْجَنَّةِ يَتَرَاءَوْنَ أَهْلَ الْغُرَفِ مِنْ فَوْقِهِمْ كَمَا يَتَرَاءَوْنَ الْكُوكَبَ الدَّرِّيَّ الْعَابِرَ فِي الْأَفْقِ مِنَ الْمَشْرِقِ أَوِ الْمَغْرِبِ ، لِتَفَاضُلِ مَا بَيْنَهُمْ** . **قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ ، تِلْكَ مَنَازِلُ الْأَنْبِيَاءِ لَا يَبْلُغُهَا غَيْرُهُمْ قَالَ « بَلَى وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ ، رَجُلًا آمَنُوا بِاللَّهِ وَصَدَّقُوا الْمُرْسَلِينَ** .¹

ترجمة : بېشکه جنتیان ښکاره کيږي د کوټو خاوندانو ته د دوی د پاسه لکه ځلاند ستوری چې په افق کې له مشرق او مغرب نه ښکاره کيږي او دا به په جنتیانو کې په یو بل باندې د بهتري په حساب وي صحابه وو ورته وویل : یا رسول الله ﷺ (چې د ځلاند ستورو په ډول ښکاره کيږي) دا به د انبیاوو مرتبې وي چې بل څوک به ورته نه رسيږي؟ رسول الله ﷺ ورته وویل : نه داسې نه ده بلکه ورته رسيږي زما د په هغه ذات باندې قسم وي چې زما نفس یې په لاس کې دی هغه کسان چې په الله یې ایمان راوړی وي او د پیغمبرانو تصدیق یې کړی وي .

امام قرطبي د جنت د کوټو په اړه فرمایي : **واعلم أن هذه الغرف مختلفة في العلو والصفة بحسب اختلاف أصحابها في**

الأعمال، فبعضها أعلى من بعض وارتفاع.¹

ترجمة : پدې پوه شه چې دا کونې به مختلفې وي په لور والي او نورو صفاتو کې لکه خومره چې ددې کونو صاحبان په عملونو کې سره مختلف وو ځينې يې لوړې او پورته وي تر نورو نه .

حضرت ابو هريره فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَصَامَ رَمَضَانَ ، كَانَ حَقًّا عَلَى اللَّهِ أَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ جَاهِدًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ، أَوْ جَلَسَ فِي أَرْضِهِ الَّتِي وُلِدَ فِيهَا . فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفَلَا تُبَشِّرُ النَّاسَ . قَالَ : « إِنَّ فِي الْجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ أَعَدَّهَا اللَّهُ لِلْمُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ، مَا بَيْنَ الدَّرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ، فَإِذَا سَأَلْتُمْ اللَّهَ فَاسْأَلُوهُ الْفَرْدَوْسَ ، فَإِنَّهُ أَوْسَطُ الْجَنَّةِ وَأَعْلَى الْجَنَّةِ ، أَرَأَاهُ فَوْقَهُ عَرْشُ الرَّحْمَنِ ، وَمِنْهُ تَفَجَّرُ أَنْهَارُ الْجَنَّةِ . »²

ترجمة : چا چې په الله او د هغه په رسول باندې ايمان راوړو مونځ يې وکولو او د رمضان روژه يې ونیوله په الله باندې حق لري چې دا به جنت ته نښاسي که د الله په لاره کې جهاد وکوي او که په هغه زمکه کې قرار کيني چې په کومه کې پيدا شوی وو صحابه وو وفرمايل : يا رسول الله ﷺ بيا پدې اړه خلکو ته زېری ورنه کړو؟ رسول الله ﷺ وفرمايل : بېشکه په جنت کې سل درجې دي الله د هغه کسانو لپاره تيارې کړي دي چې د الله په لاره کې جهاد کوي د دوو درجو په مينځ کې دومره فاصله وي لکه د زمکې او اسمان په مينځ کې چې وي کله چې تاسې له الله نه سوال کولو نو د فردوس جنت سوال ترې وکوئ ځکه دا مينځنۍ او اعلى جنت دى ماته د هغه په سر باندې د رحمن عرش ښکاره کيږي او له همدې څخه د جنت نهرونه را بهيږي .

¹ تفسير القرطبي

² صحيح البخاري

علماء کرام فرمایي رسول الله ﷺ وفرمايل چې هغه مينځنی جنت دی يعني دا د جنتونو په مينځ کې واقع دی او دا چې هغه اعلى د جنتونو دی د مرتبې په لحاظ فرمايي .

او د همدې حديث په تشریح کې علماء فرمایي چې پدې حديث کې سل درجې د جنت يوازې د مجاهدينو لپاره ذکر کړل شوي دي او دا نه دي ويل شوي چې په جنت کې به سل درجې وي بلکه نورې هم زیاتې دي .

د جنت تر ټولو ښکته مرتبه

په جنت کې تر ټولو نه چې کومه ښکته او ادنی مرتبه وي هغه هم په سلگونو چنده د ټولې دنیا د بادشاهي نه غوره وي او پدې دنیا کې څوک چې د ټولې دنیا واکمن شي او په دنیا کې چې څومره قیمتي شيان دي دا ټول دده شي او دا ټول د خپل خدمت او خپل سهولت لپاره وقف او مصرف کړي بیا هم په جنت کې د یو ادنی جنتي نعمتونه او ژوند ځان ته نشي برابرولی حضرت ابو هريره فرمایي رسول الله ﷺ فرمايل : **إِنَّ أَدْنَى أَهْلِ الْجَنَّةِ مَنْزِلَةً ، مَنْ يَتَمَنَّى عَلَى اللَّهِ ، فَيَقَالَ لَهُ : ذَلِكَ لَكَ وَمِثْلُهُ مَعَهُ ، وَيُلْقَنُ كَذَا وَكَذَا ، فَيَقَالَ لَهُ : ذَلِكَ لَكَ وَمِثْلُهُ مَعَهُ ، فَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ذَلِكَ لَكَ وَعَشْرَةُ أَمْثَالِهِ .**¹

ترجمة : په جنت کې تر ټولو نه ښکته مرتبې واله به هغه کس وي چې د الله نه څه تمنا وکوي هغه ته به وویل شي دا کوم شی چې تا غوښتي دا به هم درکړل شي او دومره به نور هم درکړل شي او داسې داسې تلقین به ورته وکول شي (چې دا وغواړي) بیا به ورته وویل شي دا به هم درکړل شي او دومره به نور هم درکړل شي بیا حضرت ابو

سعید الخدری و فرمایل رسول الله ﷺ فرمایل
(ورته به وویل شي) دا به تاته درکړل شي او
ددې لس چنده به نور هم درکړل شي .

د حضرت عبید بن عمیر خڅه روایت دی هغه
فرمایي رسول الله ﷺ فرمایل : إِنَّ أَدْنَى أَهْلِ الْجَنَّةِ مَنْزِلَةً ، لَرَجُلٌ
لَهُ دَارٌ مِنْ لَوْلَاةٍ وَاحِدَةٍ ، مِنْهَا عُرْفُهَا وَأَبْوَابُهَا .¹

ترجمة : بېشکه په جنت کې د ادنی مرتبې خاوند
به یو سړی وي چې د هغه به یو کور وي د یوې
ملغلرې د هغه ټولې کوټې او دروازې به له همدې
ملغلرې خڅه وي .

حضرت انس بن مالک فرمایي رسول الله ﷺ فرمایل
: إِنَّ أَسْفَلَ أَهْلِ الْجَنَّةِ أَجْمَعِينَ دَرَجَةً لَمَنْ يَقُومُ عَلَى رَأْسِهِ عَشْرَةُ آلَافٍ ، بِيَدَيْ
كُلِّ وَاحِدٍ صَحِيفَتَانِ ، وَاحِدَةٌ مِنْ ذَهَبٍ ، وَالْأُخْرَى مِنْ فِضَّةٍ ، فِي كُلِّ وَاحِدَةٍ لَوْنٌ
لَيْسَ فِي الْأُخْرَى مِثْلُهُ ، يَأْكُلُ مِنْ آخِرِهَا مِثْلَ مَا يَأْكُلُ مِنْ أَوَّلِهَا ، يَجِدُ لَأَخِرِهَا
مِنَ الطَّيِّبِ وَاللَّذَّةِ مِثْلَ الَّذِي يَجِدُ لِأَوَّلِهَا ، ثُمَّ يَكُونُ ذَلِكَ رِيحَ الْمِسْكِ الْأَذْفَرِ ، لَا
يَبُولُونَ ، وَلَا يَتَعَوَّطُونَ ، وَلَا يَتَمَخَّطُونَ ، إِخْوَانًا عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ.²

ترجمة : بېشکه په جنت کې تر ټولو نه د ښکته
مرتبې خاوند به یو سړی وي چې د هغه په سر
باندي لس زره خادمان ولاړ وي د هر یو سره به
دوه کاسې وي یوه به د سرو زرو او بله به د
سپینو زرو وي په هره یوه کې به داسې رنگ
خوراک وي چې په بله کې به نه وي د آخرې نه به
هم داسې خوراک کوي لکه د اولې نه یې چې کوي د
آخرې کاسې خوراک به هم داسې خوند ورکوي لکه د
اولې کاسې چې ورکوي بیا به دا د قیمتي مشکو
بوی وي دوی به نه بولې کوي ، نه به لوی قضاء
حاجت کوي ، نه به یې له پوزې نه خڅه گندگي وزي
ټول به داسې سره خواږه وي لکه ورونه په

¹ مصنف ابن ابی شیبہ

² المعجم الاوسط للطبرانی

تختونو باندې به ناست وي .

حضرت ثوير فرمايي ماد حضرت ابن عمر څخه واورېدل چې فرمايل يې : **إِنَّ أَدْنَى أَهْلِ الْجَنَّةِ مَنْزِلَهُ لَمَنْ يَنْظُرُ إِلَى جَنَانِهِ وَأَزْوَاجِهِ وَنَعِيمِهِ وَخَدَمِهِ وَسُرُرِهِ مَسِيرَةَ أَلْفِ سَنَةٍ وَأَكْرَمَهُمْ عَلَى اللَّهِ مَنْ يَنْظُرُ إِلَى وَجْهِهِ غُدُوَّةً وَعَشِيَّةً ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَجُوهَ يَوْمَئِذٍ نَاصِرَةً إِلَى رَبِّهَا نَاطِرَةً** .¹

ترجمة : بېشکه په جنت کې تر ټولو د ښکته مرتبې خاوند هغه دی چې گوري خپلو جنتونو ، بيبيانو ، نعمتونو ، خادمانو ، او تختونو ته په اندازه د زرو کلونو د مسافې او الله ته په جنتيانو کې تر ټولو نه معزز هغه کس وي چې هغه ته دا بخت حاصل وي چې هغه په سحر او ماشام کې د الله (بلا کيف) مخ ته گوري بيا رسول الله ﷺ هغه آيت تلاوت کړو چې الله فرمايي ځينې مخونه به پدې ورځ باندې تازه وي خپل رب ته به کتونکي وي .

حضرت ابو سعيد الخدري فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : **إِنَّ أَدْنَى أَهْلِ الْجَنَّةِ مَنْزِلَهُ الَّذِي لَهُ ثَمَانُونَ أَلْفَ خَادِمٍ ، وَاثْنَانِ وَسَبْعُونَ زَوْجًا ، وَيُنْصَبُ لَهُ قُبَّةٌ مِنْ لَوْلُؤٍ وَزَبَرْجَدٍ وَيَأْفُوتُ ، كَمَا بَيْنَ الْجَابِيَةِ إِلَى صَنْعَاءَ** .²

ترجمة : بېشکه په جنت کې تر ټولو ښکته مرتبه لرونکی به هغه کس وي چې اتيا خادمان به لري او دوه اويا بيبيانې به لري او د هغه لپاره به يوه قبه جوړول کيږي د ملغلرې او زبرجدو او ياقوتو څخه چې دومره به وي لکه د الجابيه او صنعاء په مينځ کې ځای چې څومره دی .

¹ سنن الترمذي

² صحيح ابن حبان

د جنت بوی

جنت یو پاک ، زړه را ښکونکی ، ښکلی او د هرچا خوشېدونکی بوی هم لري او دا هغه بوی دی چې په مختلفو روایاتو کې یې ذکر راغلی دی او مؤمنانو باندې دا بوی ډېر د لرې لرې مسافو څخه هم لګیږي او په احادیثو کې ځینې داسې گناهونه هم یاد کړل شوي دي چې د هغه گناه کونکي ته به د جنت بوی نه ور رسیږي حضرت ابو هریره فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي : **صِنْفَانِ مِنْ أُمَّتِي لَمْ أَرَهُمَا : قَوْمٌ مَعَهُمْ سَيَاطٌ مِثْلُ أَذْنَابِ الْبَقَرِ يَضْرِبُونَ بِهَا النَّاسَ وَنِسَاءٌ كَاسِيَاتٌ عَارِيَّاتٌ مَائِلَاتٌ مُمِيلَاتٌ رُؤُوسُهُنَّ مِثْلُ أَسْنِمَةِ الْبُخْتِ الْمَائِلَةِ لَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ ، وَلَا يَجِدُونَ رِيحَهَا ، وَإِنَّ رِيحَهَا لَتُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ كَذَا وَكَذَا .**¹

ترجمة : زما د امت نه دوه ډلې دي چې ما نه دي لیدلي یو هغه قوم دی چې په لاسونو کې یې ډرې وي لکه د غواپه لکۍ خلک پرې وهي او بل ښځې دي چې جامې یې آغوستې لکن لوڅې وي سړی ته مائلې وي او داسې ځان ښکاره کوي چې میلان ورته کیږي سرونه یې لکه د بختي اوشانو بوکامونه داسې جوړ کړي وي دوی به جنت ته نه ننوزي او نه به په دوی باندې د جنت بوی لګیږي او بېشکه د جنت بوی له دومره دومره مسافې نه په انسان لګیږي .

په بل حدیث کې رسول الله ﷺ فرمایي : **أَلَا وَمَنْ قَتَلَ مُعَاهِدًا لَهُ ذِمَّةُ اللَّهِ وَذِمَّةُ رَسُولِهِ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ رِيحَ الْجَنَّةِ وَإِنَّ رِيحَهَا لَتُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ سَبْعِينَ خَرِيفًا .**²

ترجمة : خبردار چا چې داسې کس ووژلو چې له هغه سره یې صلح کړې وه او د امن تعهد یې

¹ صحیح مسلم

² السنن الکبری للبيهقي

ورسره کړی وو هغه د الله او د هغه د رسول ﷺ په ذمه واري کې دی الله به په هغه باندې د جنت بوی حرام کړي او بېشکه د جنت بوی د اويا منيو له مسافې نه لگيري .

په بل روايت کې حضرت ابي بکرة فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : مَنْ قَتَلَ نَفْسًا مُعَاهِدَةً بِغَيْرِ حَقِّهَا حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ أَنْ يَشْمَ رِيحَهَا.¹

ترجمة : چا چې داسې نفس قتل کړو چې له هغه سره دده تعهد او تړون شوی وو بغير د حق نه الله به په ده باندې د جنت بوی هم حرام کړي .

په بل روايت کې حضرت ابي بکرة فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : مَنْ قَتَلَ نَفْسًا مُعَاهِدَةً بِغَيْرِ حَقِّهَا لَمْ يَرَحْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ ، وَإِنَّ رِيحَ الْجَنَّةِ لَيُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ مِائَةِ عَامٍ.²

ترجمة : چا چې داسې نفس قتل کړو چې دده ورسره عهد وو بغير د حق نه هغه ته به د جنت بوی هم ور ونه رسيږي او بېشکه د جنت بوی د سلو کالو په مسافه کې په انسان لگيري .

د مجاهد ابي الحجاج څخه روايت دی هغه فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : ثَلَاثَةٌ لَا يَجِدُونَ رِيحَ الْجَنَّةِ ، وَإِنَّ رِيحَهَا لَتُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ خَمْسِمِائَةِ عَامٍ : الْعَاقُ لِوَالِدَيْهِ ، وَمُذْمِنُ الْخَمْرِ ، وَالْبَخِيلُ الْمَنَانُ.³

ترجمة : درې کسان دي چې په هغوی باندې به د جنت بوی نه لگيږي او د جنت بوی د پنځو سوو کلونو په مسافه کې لگيږي ۱. هغه چې مور پلار يې عاق کړي ۲. د شرابو معتاد ۳. احسان

¹ صحيح ابن حبان

² صحيح ابن حبان

³ تهذيب الآثار للطبري

باروونکی بخیل .

حضرت جابر فرمایي رسول الله ﷺ فرمايل : ریح الجنة يوجد من مسيرة ألف عام والله لا يجدها عاق، ولا قاطع رحم، ولا شيخ زان، ولا جار إزاره خيلاء .¹

ترجمة : د جنت بوی د زرو کلونو له مسافې نه لگيږي و الله هغه کس به يې حس نه کړي چې هغه د خپلولي پرې کوونکی وي ، او نه زور زنا کار ، او نه هغه چې د کبر نه خپله جامه اوږده جوړوي او بيا يې په ځان پسې کش کوي .

په پورتنیو احادیثو کې مختلف عددونه راغلي دي ځینې علماء فرمایي ددې مطلب خاص شمار ښکاره کول نه دي بلکه دا ښکاره کول دي چې د ډېر لرې ځای نه د جنت بوی محسوس کېدلی شي او ځینې علماء فرمایي تر حالاتو او انسانانو پورې او په دنیا کې د هغوی تر عملونو پورې فرق کوي په چا باندې به د څومره مسافې نه لگيږي او په چا باندې د څومره نو ټول عددونه په خپل ځای کې صحیح دي .

د جنت دروازې

د جنت لپاره دروازې هم شته چې په قرآن کریم او په مختلفو احادیثو کې یې ذکر راغلي دي د مثال په ډول الله فرمایي : جَنَّاتٍ عَدْنٍ مَّفْتَحَةٌ لَهُمُ الْأَبْوَابُ .¹

ترجمة : جنتونه دي د همېشه هستوګنې په دې حال کې چې تل پرانستلي وي دوی ته دروازې (د جنتونو) .

حضرت ابو هريره فرمایي رسول الله ﷺ فرمايل : وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ ، إِنَّ مَا بَيْنَ الْمَصْرَاعَيْنِ مِنْ مَصَارِعِ الْجَنَّةِ لَكَمَا بَيْنَ مَكَّةَ وَهَجَرَ ، أَوْ كَمَا بَيْنَ مَكَّةَ وَبُصْرَى .²

ترجمة : بېشکه د جنت د دروازو د دوو پلو په مینځ کې دومره فاصله ده لکه د مکې او هجر په مینځ کې او یا لکه د مکې او بصرې په مینځ کې .

مخکې تېر شول چې دا خبره رسول الله ﷺ په هغه وخت کې کړې وه چې د مسافو د اندازې لپاره داسې آلات موجود نه وو لکه اوس چې په نوي عصر کې وجود لري نو کله چې په اوس وخت کې پدې دوو فاصلو باندې تحقیق او څېړنه وشوه نو تحقیق ثابته کړه چې د مکې او دهجر په مینځ کې چې څومره فاصله ده بعینه همدا فاصله د مکې او بصرې په مینځ کې هم ده نو مسلمانان خو پدې یقین لري چې رسول الله ﷺ په رشتیا پیغمبر وو او الله به ورته دا علم ورکړی وي او د کفارو لپاره اوس هم د حیرانتیا خبره ده چې څوارلس سوه کاله مخکې پداسې حال کې چې رسول الله ﷺ

¹ سورة ص آية ۵۰

² صحيح ابن حبان

سفرکونکی تاجر هم نه وو دا فاصله ده ته څنگه داسې په دقیقه توگه معلومه وه .

حضرت حکیم بن معاویه له خپل پلار نه روایت کوي هغه فرمایي رسول الله ﷺ فرمایل : مَا بَيْنَ مِصْرَاعَيْنِ مِنْ مِصَارِيْعِ الْجَنَّةِ مَسِيرَةُ سَبْعِ سِنِينَ .¹

ترجمة : د جنت د دروازو د دوو پلو په مینځ کې دومره مسافه ده لکه په اندازه د اوو کلونو سفر .

حضرت سَهْلُ بْنُ سَعْدٍ له رسول الله ﷺ څخه روایت کوي چې هغه ﷺ فرمایل فِي الْجَنَّةِ ثَمَانِيَةُ أَبْوَابٍ ، فِيهَا بَابٌ يُسَمَّى الرِّيَّانَ لَا يَدْخُلُهُ إِلَّا الصَّائِمُونَ .²

ترجمة : په جنت کې اته دروازې دي په هغې کې یوه دروازه ده باب الريان ورته ویل کیږي په هغې به صرف روژه داران ننوزي .

حضرت ابو هريره فرمایي ما د رسول الله ﷺ څخه واورېدل چې هغه فرمایل : مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ مِنْ شَيْءٍ مِنَ الْأَشْيَاءِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ دُعِيَ مِنْ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ : يَا عَبْدَ اللَّهِ ، هَذَا خَيْرٌ ، وَلِلْجَنَّةِ أَبْوَابٌ ، فَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّلَاةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّلَاةِ ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجِهَادِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الْجِهَادِ ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّدَقَةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّدَقَةِ ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصِّيَامِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الرِّيَّانِ قَالَ : فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ : يَا رَسُولَ اللَّهِ ، مَا عَلَى أَحَدٍ يُدْعَى مِنْ تِلْكَ الْأَبْوَابِ مِنْ ضَرُورَةٍ ، هَلْ يُدْعَى مِنْهَا كُلُّ أَحَدٍ يَا رَسُولَ اللَّهِ ؟ قَالَ : نَعَمْ وَأَرْجُو أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ .³

ترجمة : څوک چې خيرات کړي يوه جوړه د هرشي څخه چې وي د الله په لاره کې نو د جنت له دروازو

1 صحيح ابن حبان

2 صحيح البخاري

3 صحيح ابن حبان

به ور وغوښتل شي ورته اواز به كيږي اې عبد الله دا ستا لپاره خیر دی او د جنت لپاره دروازې دي څوک چې ښه او ډېر مونځونه کوي نو د مانځه له دروازې به ور وغوښتل شي او څوک چې مجاهد وي نو د جهاد له دروازې به ور وغوښتل شي څوک چې صدقه کونکي وي نو د صدقې له دروازې به ور وغوښتل شي څوک چې روژه نيونکي وي نو د الريان دروازې به ور وغوښتل شي حضرت ابوبکر وفرمايل يا رسول الله ﷺ په يو کس خو ددې مزاحمت نشته که هغه ددې دروازو څخه ور غوښتل كيږي داسې څوک به وي چې د هغې ټولو نه به ورغوښتل كيږي يا رسول الله ﷺ ؟ رسول الله ﷺ ورته وويل : هو او زما دا اميد دی چې ته به له هغوی څخه وې .

په پورتنۍ حديث کې چې رسول الله ﷺ فرمايي (فِي سَبِيلِ اللَّهِ) ځينې علماء فرمايي ددې معنی داده چې په کوم نېک کار کې او ځينې علماء فرمايي چې ددې مطلب دادی چې په جهاد کې لکن اکثرو علماوو اوله رايه خوښه کړېده .

په مخکني حديث کې تېر شول چې د جنت آته دروازې دي امام ابن حجر فرمايي پدې پورتنۍ حديث کې څلور يادې کړل شوي دي نو د حج ارکان پاتې دي بېشکه چې د حاجيانو لپاره خپله بېله دروازه ده او په پاتې نورو دريو کې يوه د عفوي دروازه ده هغه چې خلکو ته بښنه کوي يو حديث دی چې امام احمد له عبادة بن اشعث څخه مرسل روايت کړی دی چې رسول الله ﷺ فرمايلي دي إِنَّ لِلَّهِ بَابًا فِي الْجَنَّةِ لَا يَدْخُلُهُ إِلَّا مَنْ عَفَا عَنْ مَظْلَمَةٍ .¹

ترجمة : بېشکه د جنت يوه دروازه ده له هغې

نه به جنت ته هغه كسان ننوزي چې په هغه باندې ظلم وشي هغه بښنه كوي .

او يوه بله دروازه ده چې باب الايمن ورته ويل كيږي هغه د متوكلينو دروازه ده او له هغې دروازې نه به خلك جنت ته بې حسابته ننوزي د سنن الترمذي په يو حديث كې راغلي دي چې يوه دروازه د باب الذكر په نوم هم ده او علماء فرمايي چې يوه دروازه به باب العلم وي .

ځيني علماء بيا فرمايي دا د جنت آته دروازې دي او ددې معنی دا نه ده چې هرې نيكي او هر عمل ته بېله دروازه وي ځكه نېك عملونه خو بيا زيات دي او دا دروازې صرف آته دي **وَاللّٰهُ اَعْلَمُ** .¹

پدې اړه امام قرطبي فذكر الترمذي الحكيم أبو عبد الله أبواب الجنة في نواذر الأصول فذكر باب محمد ﷺ ، وهو باب الرحمة ، وهو باب التوبة ، فهو منذ خلقه الله مفتوح لا يغلق ، فإذا طلعت الشمس من مغربها أغلق فلم يفتح إلى يوم القيامة ، وسائر الأبواب مقسومة على أعمال البر . فباب منها للصلاة ، وباب للصوم ، وباب للزكاة و الصدقة ، وباب للحج ، وباب للجهاد ، وباب للصلة ، وباب للعمرة ، فزاد باب الحج ، وباب العمرة ، و باب الصلاة ، فعلى هذا أبواب الجنة أحد عشر باباً .²

ترجمة : حكيم ترمذي ابو عبد الله په نواذر الاصول كې د جنت دروازې يادي كړي دي ويلى يې دي چې يوه باب محمد ﷺ ده ، باب الرحمة ده ، باب التوبة ده دا له كومي ورځې چې الله پيدا كړېده خلاصه ده بنديږي نه كله چې لمر له مغرب څخه را وځيږي بيا به بنده شي بيا تر قيامته پورې نه خلاصيږي نورې ټولې دروازې په نيكو عملونو باندې تقسيم شوي دي يوه پكې باب الصلاة ده ، باب الصوم ده ، باب الزكاة و الصدقة ده

¹ فتح الباري

² تفسير القرطبي

، باب الحج ده ، باب الجهاد ده ، باب الصلة ده ، باب العمرة ده پدې روايت كي هغه باب الحج ، باب العمرة ، باب الصلة زياتي كړي نو پدې حساب سره د جنت دروازې يولس شوې .

د جنت كيلى

په هر ځاى كې چې دروازه وي نو خامخا هغه ددې لپاره وي چې كله به بنديري او چې ضرورت شي نو هغه به خلاصول كيږي داسې د جنت هم دروازې دي هغه د ټولو خلكو لپاره بندي دي صرف هغه څوك به ورتلى شي چې د دې دروازي كيلى ورسره وي او د جنت د دروازې كيلى په اخلاص سره د شهادت كلمه ويل دي حضرت معاذ بن جبل فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : **مفتاح الجنة شهادة أن لا إله إلا الله** .¹

ترجمة : د جنت كيلى ددې گواهي وركول دي چې نشته په حقه معبود مگر يوازې الله دى .

د لوى ولى الله بزرگ حضرت وهب بن منبه نه پوښتنه وشوه : ولى دا لا اله الا الله ويل د جنت كلي نه ده ؟ (د پوښتنې كونكي مطلب دا وو چې دا څوك ووايي نو هغه به جنت ته نه ځي؟) حضرت وهب بن منبه ورته وويل : **بلى ولكن ليس من مفتاح إلا له أسنان فإن أتيت بمفتاح له أسنان فتح لك وإلا لم يفتح** (هو لكن هره كلي چې وي د هغې لپاره غاښونه وي كه د داسې كيلى راوړه چې د هغې غاښونه وو نو درته خلاصه به شي او كنه نو درته به نه خلاصيږي) د وهب بن منبه مطلب دا وو چې پدې باندې د زړه نه يقين او ددې په مقتضياتو باندې عمل كول لدې كلمې سره ضروري دي .

امام ابن قيم فرمايي : الله د هر مطلوب لپاره

يوه کيلي پيدا کړېده چې هغه ورباندې خلاصیږي نو د مانځه کيلي يې پاکي گرځولي ده لکه رسول الله ﷺ چې فرمايي : د مانځه کيلي پاکي ده ، د حج کيلي احرام دی ، د نيکي کيلي رشتيا ويل دي ، د جنت کيلي توحيد دی ، د علم کيلي په ښه توگه پوښتنه کول دي او په ښه توگه اورېدل دي ، د کاميابي کيلي صبر دی ، د زياتوالي کيلي شکر دی ، د ولايت کيلي محبت دی ، د محبت کيلي ذکر دی ، د کاميابي کيلي تقوی ده ، د توفيق کيلي رغبت او رهبت (تمه او وېره) ده ، د قبول کيلي دعاء ده ، د ايمان کيلي په هغه څه کې فکر کول دي چې الله خلک د هغې په اړه فکر کولو ته ور غوښتي دي ، الله ته د نزديکت کيلي د زړه سلامتيا ده او د هغه سره په محبت کې اخلاص کول دي ، د زړه د ژندي کولو کيلي د قرآن کریم تلاوت دی او د شپې په آخره برخه کې دعا گانې کول دي او گناهونه پرېښودل دي ، د رحمت د حاصلولو کيلي په سمه توگه د خالق عبادت اومخلوق ته په فايده رسولو کې کوښښ کول دي ، د رزق د حاصلولو کيلي تقوی او استغفار دی ، د عزت کيلي د الله او د هغه د رسول اطاعت کول دي ، آخرت ته د ځان د تيارولو کيلي له دنيا څخه خپل اميدونه ختمول دي ، او د هر خير کيلي د آخرت په کار کې کوښښ کول دي ، د هر شر کيلي په دنيا کې خپل زړه لگول دي .¹

د جنتيانو استقبال

کله چې د جنتيانو او دوزخيانو په مينځ کې فيصله وشي هغه بختور کسان چې د جنت مستحقين شوي وي په خوشحالي سره به د جنت لوري ته روان شي ملائکې او د جنت ساتونکې به ددې مسلمانانو استقبال او هرکلی کوي الله د هغه حالت مونږ ته

داسې بيانوي او فرمايي : وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ .¹

ترجمة : او بېول كيږي به هغه كسان چې وېرېدل به دوى له ربه خپله طرف د جنت ته ډلې ډلې تر هغه پورې چې راشي دوى جنت ته حال دا چې پرانيستلى شوې به وي دروازې د دغه (جنت) او وبه وايي دوى ته خزانچيان (متصرفان) د جنت سلام د وي پر تاسې پاك يئ تاسې (له گناهونو) پس ننوځئ جنت ته په دې حال كې چې همېشه اوسېدونكي اوسئ (په ده كې) .

وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ.²

ترجمة : او فرشتې به ور ننوزي پر دوى (سره له تحائفو او زيږي او رضوان) له هرې دروازې (مانيو د دوى ته او ورته به وايي چې) سلامتيا د وي پر تاسې په سبب د صبر كولو ستاسې (په طاعت او مصيبت او له معصيته) نو ښه عاقبت د دار (د آخرت عاقبت د تاسې دى) .

لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ .³

ترجمة : نه به خفه (غمجن) كوي دوى (جنتيان) وېره ډېره لويه (هم لكه آخره نفخه او د دوزخ خوا ته روانېدل) او ملاقات به كوي له دوى سره پرېستې (او ورته وايي به) دا ورځ د (ثواب د) ستاسې ده هغه چې وئ تاسې چې وعده درسره كړل شوې وه (په د نيا كې) .

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرَاكُمُ الْيَوْمَ

1 سورة الزمر آية ۷۳
2 سورة الرعد آية ۲۳-۲۴
3 سورة الانبياء آية ۱۰۳

جَنَاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ .¹

ترجمة : (ياده كرهه اي محمده!) هغه ورځ (د قيامت) چې وينی ته مؤمنان سړی او مؤمنانې ښځې چې ځغلي به رڼا (رڼرا) د دوی مخکې له دوی څخه او له ښي خوا د دوی څخه. (او وبه ويل شي دوی ته چې) زیری د تاسې نن ورځ دي (ننوتل په) جنت چې بهیږی له لاندې (د مانیو او ونو) د هغو (څلور قسمه) ویالې تل به وي دوی په هغو کې دغه دی هم دغه بری موندل ډیر لوی.

جنت ته ننوتل

کله چې د جنتیانو او دوزخیانو په مینځ کې فیصله وشي هغه کسان چې جنتیان دي کله چې جنت ته ځي تر هغې وړاندې به د دوی په مینځونو کې قصاص وشي او که په یو بل یې څه ډول حقونه وي هغه به سره خلاص کړي او بیا چې کله جنت ته لاړ شي نو په جنت کې به دوی داسې بلد وي لکه څوک چې په دنیا کې په خپل کور کې بلد وي بلکه تردې هم ښه الله فرمایي : **وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْمَالُهُمْ (4) سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ (5) وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ (6)** .¹

ترجمة : او هغه کسان چې وژل شوي دي په لاره د الله کې پس له سره به ضائع نه کړي الله عملونه د دوی زر به سمه لپاره وښيي دوی ته (الله په دنیا او په آخرت کې) او ښه به کړي حال ددوی (په دارینو کې) او داخل به کړي (الله) دوی په جنت کې چې معلوم کړی دی (الله) دغه (جنت) دوی ته .

إِذَا خَلَصَ الْمُؤْمِنُونَ مِنَ النَّارِ حُسِبُوا بِقَنْطَرَةٍ بَيْنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ، فَيَتَقَاصُّونَ مَظَالِمَ كَانَتْ بَيْنَهُمْ فِي الدُّنْيَا حَتَّى إِذَا نُفُوا وَهَدَّبُوا، أَدْنَى لَهُمْ بِدُخُولِ الْجَنَّةِ، فَوَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ، لَأَحَدُهُمْ بِمَسْكَنِهِ فِي الْجَنَّةِ أَذْلُ بِمَنْزِلِهِ كَانَ فِي الدُّنْيَا.²

ترجمة : کله چې مؤمنان له اور نه خلاص شي نو د جنت او اور په مینځ کې حصار کړل شي د دوی په مینځ کې به د هغو ظلمونو قصاصونه سره واخیستل شي چې په دنیا کې وو تردې چې دوی پاک شي نو دوی ته به اجازه وشي چې جنت ته ننوزي زما د قسم په هغه ذات وي چې د محمد نفس یې په لاس کې دی په دوی کې به یو په خپل هستوګنځي په جنت کې په دنیا کې تر خپل کور نه ډېر ښه بلد وي .

¹سورة محمد

² أخرجه البخاري

جنت ته به اول څوک ځي ؟

على الاطلاق جنت ته اول ننوتونکي حضرت محمد ﷺ دى د ټولو خلکو نه به وړاندې جنت ته ننوزي او په امتونو کې هم د رسول الله ﷺ امت دى چې جنت ته به ننوزي او ددې امت په سر کې به حضرت ابو بکر صديق وي حضرت انس بن مالک فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : **أَنَا أَكْثَرُ الْأَنْبِيَاءِ تَبَعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ، وَأَنَا أَوَّلُ مَنْ يَقْرَعُ بَابَ الْجَنَّةِ** .¹

ترجمة : د قيامت په ورځ به تر هر چا نه زما متابعت کونکي ډېر وي او زه به اول هغه کس وم چې د جنت دروازه به ور ټکوم .

په بل حديث کې حضرت انس بن مالک فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : **آتَى بَابَ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَسْتَفْتَحُ فَيَقُولُ الْخَازِنُ مَنْ أَنْتَ فَأَقُولُ مُحَمَّدٌ. فَيَقُولُ بِكَ أُمِرْتُ لَا أَفْتَحُ لِأَحَدٍ قَبْلَكَ** .²

ترجمة : زه به د جنت دروازې ته د قيامت په ورځ راشم زه به وغواړم چې دروازه راته خلاصه شي د جنت په دروازه باندې مقرر شوې فرشته به ماته ووايي څوک يې؟ زه به ورته ووايم محمد هغه به راته ووايي : ماته همداسې امر شوى وو چې ستا نه مخکې يې چا ته خلاصه نه کړم .

حضرت ابو هريره فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : **نَحْنُ الْآخِرُونَ الْأَوَّلُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَنَحْنُ أَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ بَيِّدَ أَنَّهُمْ أَوَّلُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلَنَا وَأَوْتَيْنَاهُ مِنْ بَعْدِهِمْ فَاخْتَلَفُوا فَهَدَانَا اللَّهُ لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ فَهَذَا يَوْمُهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ هَدَانَا اللَّهُ لَهُ - قَالَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ - فَالْيَوْمَ لَنَا وَغَدًا**

¹ صحيح مسلم

² صحيح مسلم

لِلْيَهُودِ وَبَعْدَ غَدٍ لِلنَّصَارَى .¹

ترجمة : مونږ وروستني او اولني يو د قيامت په ورځ او مونږ هغه څوک يو چې اول به جنت ته ننوزو صرف داده چې دوى ته كتاب زمونږ نه وړاندې ورکړل شوى وو او مونږ ته د دوى نه وروسته را کړل شوى وو دوى اختلاف وکولو او الله مونږ ته هدايت وکولو په هغه څه کې چې دوى پکې اختلاف کاوه له حق نه او دا هغه ورځ ده چې دوى پکې اختلاف وکا او الله يې مونږ ته هدايت وکولو ويل د جُمعې ورځ (يهودو د شنبې ورځ مقدسه وگڼله او نصاراوو د يکشنبې او حق دا وو چې د جُمعې ورځ غوره ده) نو نن زمونږ ورځ ده (جُمعه) سبا د يهودو او بله ورځ د نصاراوو ده .

حضرت ابو هريره فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل :
 أَنَا نِي جَبْرِيلُ فَأَخَذَ بِيَدِي فَأَرَانِي بَابَ الْجَنَّةِ الَّذِي تَدْخُلُ مِنْهُ أُمَّتِي . فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَدِدْتُ أَنِّي كُنْتُ مَعَكَ حَتَّى أَنْظَرَ إِلَيْهِ . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَمَا إِنَّكَ يَا أَبَا بَكْرٍ أَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِي .²

ترجمة : ماته جبريل راغلو زه يې تر لاس ونيولم ماته يې هغه دروازه را ښکاره کړه چې له کومې نه به زما امتيان جنت ته ننوزي حضرت ابو بکر صديق وويل يا رسول الله ﷺ کاش زه هم لتا سره وای چې ما دا دروازه ليدلې وای رسول الله ﷺ وفرمايل : او ته اې ابابکره اول هغه کس به وې چې زما له امت څخه جنت ته ننوزي .

حضرت عبد الله بن عمر فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : هَلْ تَدْرُونَ مَنْ أَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ خَلْقِ اللَّهِ ؟ قَالُوا : اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ ،

¹ صحيح مسلم² سنن ابی داود

قَالَ : أَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ خَلَقَ اللَّهُ الْفُقَرَاءَ الْمُهَاجِرُونَ الَّذِينَ يُسَدُّ بِهِمُ الثُّغُورُ ، وَتُنْفَى بِهِمُ الْمَكَارُهُ ، وَيَمُوتُ أَحَدُهُمْ ، وَحَاجَتُهُ فِي صَدْرِهِ لَا يَسْتَطِيعُ لَهَا قَضَاءً ، فَيَقُولُ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ مَلَائِكَتِهِ : ابْنُوهُمْ فَحَيُّوهُمْ ، فَيَقُولُ الْمَلَائِكَةُ : رَبَّنَا نَحْنُ سَكَّانُ سَمَاوَاتِكَ ، وَخَيْرُكَ مِنْ خَلْقِكَ أَفْتَأْمُرُنَا أَنْ نَأْتِيَ هَؤُلَاءَ ، فَنُسَلِّمَ عَلَيْهِمْ ، قَالَ : إِنَّهُمْ كَانُوا عِبَادًا يَعْبُدُونِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ، وَنُسَدُّ بِهِمُ الثُّغُورُ ، وَتُنْفَى بِهِمُ الْمَكَارُهُ ، وَيَمُوتُ أَحَدُهُمْ ، وَحَاجَتُهُ فِي صَدْرِهِ لَا يَسْتَطِيعُ لَهَا قَضَاءً ، قَالَ : فَتَأْتِيهِمُ الْمَلَائِكَةُ عِنْدَ ذَلِكَ ، فَيَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ : سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ .¹

ترجمه : آيا تاسو پوهېږئ چې د الله په مخلوق کې به اول جنت ته څوک ننوزي؟ صحابه وو ورته وويل : الله او د هغه رسول پرې ښه پوهيږي رسول الله ﷺ وفرمايل : اول چې په ټول مخلوق کې جنت ته ننوزي هغه به هغه فقيران مهاجرين وي چې په هغوی به لارې بندېدلې او مشکلات به پرې راتلل په هغوی کې به يو پداسې حالت کې مړ کېدو چې په زړه کې به يې لوی ارمان وو خو د هغه ارمان د پوره کولو لپاره به يې لاره نه پيدا کوله (کله چې دوی جنت ته ننوزي) الله به ځينې فرشتو ته ووايي ورشئ هغوی ته سلام واچوئ ملائکې به ورته ووايي اې زمونږ ربه مونږ ستا د اسمان اوسيدونکي وو او ستا په مخلوق کې غوره مخلوق وو اوس ته مونږ ته امر کوې چې هغوی ته ورشو او سلام پرې واچوو؟ الله به ورته ووايي : دوی زما داسې بندگان وو چې زما عبادت به يې کاوه او لما سره به يې شريک نه منلو په دوی به لارې بندېدلې او تکليفونه به پرې ورو وستل کېدل او يو کس د دوی به پداسې حالت کې مړ کېدو چې په زړه به يې ارمان پروت وو او هغه به يې نشوای پوره کولی رسول الله ﷺ وفرمايل : بيا به فرشتي هغوی ته ورشي او له هرې دروازې به هغوی ته ور ننوزي وايي به په تاسې د سلام وي په هغه څه چې

تاسې صبر وکا ډېر ښه دی ستاسې لپاره دا دار د عقبې .

وخت په جنت کې

په جنت کې به کله هم تیاره نه راځي هلته به هر وخت رڼا وي خو الله بيا هم په قرآن کریم کې فرمایلي دي **وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا** (يعني جنتيانو ته به د دوی خوراکونه په سحر او بېگاه کې ورکول کيږي) امام قرطبي فرمایي چې ددې معنی داده چې دوی ته به خوراک ورکول کيږي او په مینځ کې به دومره وخت دوی ته ورکول کيږي لکه چې صبا او بېگاه شي او ددې معنی دا نه ده چې په دوی باندې به تیاره راځي او بيا به لکه د سحر رڼا راځي حضرت ابن عباس پدې آیت کې الله خلکو ته د جنتيانو په ژوند کې يو سهولت ور ښکاره کوي چې په هغه وخت کې چې کله قرآن کریم نازلېدو نو د عربو لپاره به ډېره د مزې خبره داوه چې دوی ته په سحر او ماښام کې د دوی خوراک په سمه توګه ور رسېدو حضرت يحيى بن ابي کثير فرمایي : **كانت العرب في زمانها من وجد غداء وعشاء معاً فذلك هو الناعم؛ فنزلت** (په عربو کې د قرآن کریم د نزول په وخت کې حالات داسې وو چې چا به د سحر او ماښام خواړه په يو وخت له ځان سره لرل نو همدا کس به په نعمت کې ګڼل کېدو) نو بيا دا آیت نازل شو چې جنتيانو ته به د سحر او ماښام خوراک ورکول کيږي .

جنتيانو ته به په هېڅ وخت کې د هېڅ شي کمی نه وي خو پدې دوو وختونو کې به دوی ته په منظمه توګه خوراک ورکول کيږي چې ددوی د لذاتو او خوندونو حالتونه ورته بدل کړي او له يو حال نه بل حال ته انتقال وکوي .

يو وخت رسول الله ﷺ ته يو کس راغلو ورته يي وويل : يا رسول الله هل في الجنة من ليل؟ قال : «وما هيّجك على هذا» قال : سمعت الله تعالى يذكر في الكتاب {وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا} فقلت : الليل بين البكرة والعشي . فقال رسول الله ﷺ : «ليس هناك ليل إنما هو ضوء ونور يردُّ الغدوّ على الرواح والرواح على الغدوّ وتأتّيهم طُرف الهدايا من الله تعالى لمواقيت الصلاة التي كانوا يصلون فيها في الدنيا وتسلم عليهم الملائكة .¹

ترجمة : يا رسول الله ﷺ په جنت کې به شپه وي؟ رسول الله ﷺ ورته وويل : ددې پوښتنه د ولي وکوله؟ هغه کس ورته وويل : ځکه ما واورېدل چې الله په قرآن کريم کې ذکر کړي دي چې دوی ته به د دوی خوراک په سحر او ماسختن کې ورکول کيږي نا ما وويل چې شپه خو د ماسخوتن او سحر وختي په مينځ کې وي رسول الله ﷺ ورته وويل : هلته به شپه نه وي بلکه رڼا به وي چې شپه او ورځ به موجود وي او جنتيانو ته به د الله له لوري تحفي راځي د مانځه په وختونو کې چې په کومو کې به دوی مونځونه کول او په دوی باندې به ملائک سلام وايي .

امام قرطبي فرمايي : علماء فرمايي په جنت کې به شپه او ورځ نه وي بلکه هلته به همېشه رڼا وي دوی به د شپې او د ورځې مقدار لدې څخه پېژني چې کله د شپې وخت کيږي پردې به را ښکته کيږي دروازې به بنديږي او کله چې د ورځې وخت کيږي نو پردې به پورته کيږي او دروازې به خلاصيږي دا خبرې ابوالفرج الجوزي او المهدوي او نورو ذکر کړي دي .²

امام طبري فرمايي الله چې د جنتيانو په اړه

¹ نوادر الاصول

² تفسير القرطبي

فرمايي **وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا** ددې مطلب دادی چې دوی ته به د دوی خوراکونه ورکول کیږي او هغه څه ورکول کیږي چې د دوی ورته زړه کیږي په دومره وخت کې لکه د سحر او ماسخوتن وخت کې چې وو په دنیا کې يعني د دوی د یو وخت او د بل وخت د خوراکونو په مینځ کې به دومره وخت ورکول کیږي لکه په دنیا کې به چې د دوی د خوراکونو په مینځ کې وو او دا مطلب یې ځکه دی چې په جنت کې شپه او ورځ نشته .¹

امام قتادة فرمايي **اللَّهُ** چې د جنتیانو په اړه فرمایلي دي **وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا** (جنتیانو ته به د دوی رزق ورکول کیږي په سحر او ماسختن کې) دا بکره او عشا په جنت کې دوه ساعتونه دي ځکه هلته خو شپه نشته هلته هر وخت رڼا او نور وي .²

امام ابن کثیر فرمایي هلته به جنتیانو ته خوراکونه تر دومره فاصلې وروسته راوړل کیږي لکه په دنیا کې چې د دوی د خوراکونو په مینځ کې څومره وخت وو او مطلب یې دا نه دی چې هلته به هم شپه راځي او بیا به ورځ راځي بلکه هلته به هر وخت نور وي دوی به شپه او ورځ په رڼا سره پېژني او وخت به هم په همدې سره پېژني چې رڼا به تغیر خوري .

د جنت نعمتونه

الله په جنت کې جنتیانو ته ډول ډول نعمتونه تیار کړي دي او بیا ددې لپاره چې خلک داسې عملونه وکوي چې ددې قابل شي چې هغه نعمتونه دوی ته ورکړل شي الله په قرآن کریم او رسول الله

¹ تفسیر الطبري

² تفسیر الطبري

ﷺ په احاديثو کې بيان کړي دي د مثال په ډول
 الله فرمايي : **وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رَزَقُوا قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأَنُوتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ** 1

ترجمة : او زېرى ورکړه (اې محمده ﷺ) هغو کسانو ته چې ايمان ئې راوړى دى (په ټولو مؤمن به شيانو) او کړي ئې دي ښه (عملونه) په دې چې بېشکه دوى ته جنتونه دي چې بهيري لاندې (تر ما نيو او ونو) د هغو ويالې هر کله چې روزي ورکړه شي دغو (جنتيانو) ته له جنتونو څخه څه مېوه لپاره د خوړلو نو وايي دا (جنتيان) دا همغسې مېوه ده چې راکړې شوې وه مونږ ته پخوا له دې نه او رابه وړه شي دوى ته مېوه هم رنگه (او په خوند کې سره بدله) او وي به دوى ته په دغو (جنتونو) کې ښځې ښې پاکې او دوى به وي په دغو (جنتونو) کې همېشه .

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا 2

ترجمة : او هغه کسان چې ايمان ئې راوړى دى او کړي ئې دي ښه (عملونه) زر به ننه باسو مونږ دوى په (هغو) جنتونو کې چې بهيري له لاندې د (مانيو او ونو) د دوى ويالې همېشه وي به دوى په دغو جنتونو کې تل (بې انتها او بلا انقطاع) وي به دوى ته په دې جنتونو کې ښځې پاکې کړل شوې (له ټولو ناپاکيو څخه) او ننه به باسو مونږ دوى په گڼو سيورو (په دائمي نعمت او راحت) کې .

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ادْخُلُوا بِسَلَامٍ آمِنِينَ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ

1 سورة البقرة آية ٢٥

2 سورة النساء آية ٥٧

غُلَّ إِخْوَانًا عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ.¹

ترجمة : بېشکه خان ساتونکي (له متابعت د ابليس نه) په جنتونو کې به وي او په چينو کې به وي (او دوی ته به وويل شي) ننوزئ دغو جنتونو ته په سلامتې سره له هره آفته په دغه حال کې چې په امن کې به ياست (له زوال د دې نعمت) او وبه باسو (لرې به کړو) هر هغه چې په زړونو د دغو (جنتيانو) کې دي له کينې څخه حال دا چې (لکه) ورونه به وي سره ناست به وي پر تختونو (د زرو تختونه به وي او جواهر به پکې لگېدلي وي) مخامخ يو بل ته نه به رسيري دغو (جنتيانو) ته په دغه (جنت) کې هېڅ قدر تکليف او نه به وي دوی له دغه (جنت نه) ايستلی شوي هېچرې.

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِن فَضْلِهِ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ.²

ترجمة : او وبه وايي (جنتيان په وخت د دخول د جنت کې) ټوله ثناء صفت خاص الله ته دی هغه الله چې بو ئې ته (لرې يې کړ) له مونږ څخه خفگان بېشکه رب زمونږ خامخا بشونکي (د عاصيانو) ښه قدردان (د نيکانو) دی هغه (رب) چې را ئې وستو مونږ کور د اقامت (جنت ته) له فضله خپله چې نه رسيري مونږ ته په دغه (جنت) کې هېڅ مشقت او نه رسيري مونږ ته په دغه (جنت) کې هېڅ ستوماني خفگان.

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ كَذَلِكَ وَرَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ يَدْخُلُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ لَا يَذُقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَى وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ فَضلاً مِّن رَّبِّكَ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ.

¹ سورة الحجر آية ٤٥-٤٨

² سورة الفاطر آية ٣٤-٣٥

ترجمة : بېشکه چې متقيان به په خای د امن کې وي (له ټولو مکروهاتو) په جنتونو او چينو کې چې آغوندي به (دوی جامې) له ورېښمو نازکو او له ورېښمو پېړو (غټو) په دې حال کې چې سره مخامخ به ناست وي هم داسې به وي (بې تغيړه او بې تبديلي) او ملگري به کړو مونږ دوی له پېغلو سپينو پوستو غټو سترگو سره غواړي به دوی په دغه (جنت) کې له هر قسم ميوې حال دا چې په امن کې به وي له (انقطاع او ضرر د ميوو او هر مکروه نه) نه به ځکي دوی په دغه جنت کې مرگ مگر خو هغه مرگ روميښی چې تېر شوی دی په دنيا کې) او وبه ساتي (الله) دوی له عذابه د دوزخ نه له جهته د فضل له طرفه د رب ستا ، دغه (انعام او اکرام) هم دا بری دی ډېر لوی.

وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ (10) أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ (11) فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ (12) ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأُولَى (13) وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ (14) عَلَى سُرُرٍ مَوْضُونَةٍ (15) مُتَكِبِينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ (16) يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُخَلَّدُونَ (17) بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ (18) لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ (19) وَفَاكِهَةٍ مِمَّا يَتَخَيَّرُونَ (20) وَلَحْمِ طَيْرٍ مِمَّا يَشْتَهُونَ (21) وَحُورٌ عِينٌ (22) كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ (23) جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (24) لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا (25) إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا (26).²

ترجمة : او رومي کېدونکي (حسناتو) هم دوی رومي کېدونکي دي (جنت ته) هم دوی نژدې کړل شوي دي (الله ته) په جنتونو د نعمتونو کې به وي لويه ډله به وي له اولينو روميښو څخه او لږ دي له آخرينو وروستنيو څخه ناست به وي (جنتيان) په تختونو او بدليو شويو چړاو کړل شويو په زرو جواهرو باندې چې تکیه وهونکي به وي (جنتيان) په هغو (تختونو) باندې مخامخ

¹ سورة الدخان آية ٥٢-٥٧

² سورة الواقعة

کېناستونکي یو بل ته ګرځي به په دوی باندې (د پاره د خدمت) هلکان تل پاتې کېدونکي (په هلکوالي سره) په ګلاسونو او په کوزو سره او په کاسو لوښیو سره له صافو پاکو شرابو بهېدونکيو څخه چې نه به سر خورېږي له دغو (شرابو) او نه به بې هوښه کيږي او (ګرځي به په دوی باندې هلکان په) میوو له هغه راز (قسم) چې ئې خوښوي (جنتیان) او غوښو د مرغانو سره له هغه ډوله (قسمه) چې زړونه ئې غواړي او (ګرځي به په دغو جنتیانو باندې) حورې پیمخې غټې سترګې په شان د ملغلرو ساتلیو شویو په پوښونو کې جزاء ورکول دي په هغو چې وو دوی چې کول به یې (له نیکو په دنیا کې) نه به اوري دوی په دغه (جنت کې) چټي (بېکاره) خبرې او نه د ګناه خبرې مګر اوري یوه خبره سلام سلام (یعني تل به سلام اچوي جنتیان یو په بل باندې په جنت کې)

وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ (27) فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ (28) وَطَلْحٍ مَنْضُودٍ (29) وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ (30) وَمَاءٍ مَسْكُوبٍ (31) وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ (32) لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ (33) وَفُرْشٍ مَّرْفُوعَةٍ (34) إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنْشَاءً (35) فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا (36) عُرُبًا أَتْرَابًا (37) لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ (38) ثُلَّةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ (39) وَثُلَّةٌ مِنَ الْآخِرِينَ (40).¹

ترجمة : او ملګري یاران د ښي لاس څومره ښه دي ملګري یاران د ښي لاس په بېرو بې اغزیو کې به وي او په (میوه د) کیلو له بیخه تر سره ډکو کرل شویو کې به وي او په سیوریو اوږدو کریو شویو همېشه وو کې به وي او په اوبو بهېدونکيو توښېدونکيو همېشه وو کې به وي او په مېوو ډېرو کې به وي چې نه به قطع کولی کيږي په هېڅ وقت او نه به منع کولی کيږي په هېڅ عذر سره او په فرشونو اوچتو کرل شویو کې به وي (په پالنگونو باندې) بېشکه مونږ نوي پیدا کړي دي دغه حورې په یوه ښه پیدا کولو سره نو ګرځولي

مو دي دوی پېغلې عاشقاني (پر جنتيانو خاوندانو خپلو) همزولي (په خپل مابین کې) د پاره د ملگرو یارانو د ښي لاس (اصحاب الیمین به) لویه ډله وي له اولینو او رومبنيو خلقو څخه او لویه ډله به وي له آخړینو وروستنیو خلقو نه .

وَجُودُهُ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ لِّسَعِيهَا رَاضِيَةٌ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ لَا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً. 1

ترجمة: ځینې مخونه به په دغې ورځې کې ښائسته او تازه وي پخپل کوشښ باندې (چې ئې کړی وي په دنیا کې) راضي خوشحال به وي (په آخرت کې) په جنت لوړ شاندار کې به وي نه به آوړې په هغه جنت کې کومه چټي بېکاره خبره .

د جنت تعمیر

حضرت ابو سعید الخدري فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي : خلق الله تبارك وتعالى الجنة لبنة من ذهب ولبنة من فضة، وملاطها المسك، وقال لها: تكلمي فقالت: قد أفلح المؤمنون فقالت الملائكة: طوبى لك منزل الملوك . 2

ترجمة : الله جنت پيدا کړو یوه خښته د سپینو او بله د سرو زرو او په هغې کې د خټې په ځای استعمال شول مسک ورته یې وویل خبرې وکوه هغه وویل : په تحقیق سره مؤمنان کامیاب شول ملائکو ورته وویل : ته ډېر ښه یې د بادشاهانو هستوگنځیه .

حضرت ابو سعید الخدري فرمایي : أن ابن صياد سأل النبي صلى الله عليه وسلم عن تربة الجنة فقال (درمكة) بيضاء مسك خالص .

1 سورة الغاشية

2 رواه البزار

ترجمة : بېشكه ابن صياد نومي كس له رسول الله ﷺ څخه د جنت د خاورې په اړه پوښتنه وكوله رسول الله ﷺ ورته وفرمايل (درمكة) يو ډول سپين خالص مسك دي .

حضرت انس بن مالك فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : **أدخلت الجنة فإذا جناذب اللؤلؤ وإذا ترابها المسك.**

ترجمة : زه جنت ته ننوتلم هلته مې وليدل چې د ملغلرو گنبدې وې او خاوره يې مسك وو .

د جنت تر ټولو لوی نعمت

په جنت کې به د جنتيانو لپاره تر ټولو لوی نعمت د الله ديدار وي پدې کې به جنتيانو ته دومره لذت وي چې ددېنه وړاندې ټول لذتونه به ورباندې هېر کړي او دا حق دی چې جنتيان به الله ته گوري الله فرمايي : **وَجُورَةُ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ (22) إِلَى رَبِّهَا نَاطِرَةٌ (23)** .¹

ترجمة : ځينې مخونه (يعني د مؤمنانو به) په دغې ورځې (د قيامت) کې ښائسته تازه روښانه وي خاص ذات د رب خپل ته به کتونکي وي.

الله فرمايي : **لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ** .²

ترجمة : (شته) د پاره د هغو کسانو چې نيکي ئې کړې (ايمان ئې راوړی) نيکه (جزا جنت) او زيادت (له اجره هم شته) .

علماء کرام فرمايي چې د حسنی نه مطلب جنت دی

¹ سورة القيامة

² سورة يونس آية ٢٦

او د زیادة نه مطلب د الله دیدار دی

یعني مؤمنان به الله ته گوري او لږ وروسته به حدیث ستاسې په وړاندې کیږدم چې رسول الله ﷺ فرمایي د جنتیانو لپاره به دا نعمت تر هر بل نعمت نه خوږ او غوره وي او د کفارو په اړه الله فرمایي چې دوی به ددې قسمت نه لري چې د الله دیدار وکوي الله فرمایي :

كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَمَحْجُوبُونَ (15).¹

ترجمة : نه داسې نه ده بېشکه دوی پدې ورځ د خپل رب نه په پرده کې دي دوی به نشي کولی چې هغه وويني.

حضرت جریر بن عبد الله فرمایي ما له رسول الله ﷺ څخه پوښتنه وکوله : هل نرى ربنا يوم القيامة ؟ (آیا د قیامت په ورځ به مونږ خپل رب وینو؟) رسول الله ﷺ راته وویل : إنكم سترون ربكم كما ترون القمر ليلة البدر ، لا تضامون في رؤيته (تاسې به خپل رب داسې وینئ لکه سپوږمۍ په هغه شپه چې پوره وي او تاسې ته به هېڅ تکلیف نه وي د هغه په لیدلو کې) یعني نه به ددې تکلیف وي درته چې ځینو ته به ښکاره کیږي او ځینو ته نه او نه به ددې تکلیف وي چې تاسې ته به ددې ضرورت وي چې تاسې به له یو بل سره په لیدلو کې ټیلي وهئ او ازدحام به کوئ.

الله فرمایي : لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ.² په سنن الترمذي کې روایت دی چې ددې آیه په اړه رسول الله ﷺ وفرمایي : ذا دخل أهل الجنة الجنة نادى مناد: إن لكم عند الله

¹ سورة المطففين آية ١٥

² سورة يونس آية ٢٦

مودعاً يريد أن ينجزكموه، قالوا: ألم يبيض وجوهنا؟ ألم ينجنا من النار؟! ألم يدخلنا الجنة؟! قالوا: بلى، فيكشف الحجاب، فوالله ما أعطاهم شيئاً أحب إليهم من النظر إليه .¹

ترجمة : كله چې جنتيان جنت ته ننوږي يو اواز کوونکی به ورته اواز وکوي بېشکه لتاسې سره د الله يوه وعده ده اوس هغه غواړي چې پوره يې کړي دوی به ووايي آيا زمونږ مخونه يې سپين کړي نه دي؟ آيا مونږ يې له اوره نه يو را ايستلي؟ آيا جنت ته يې نه يو را ننه ايستلي اواز کونکي به ووايي هو ... بيا به الله ورته هغه پرده لرې کړي چې دده او د بندگانو په مينځ کې ده والله چې دوی ته به الله ته له کتلو نه زيات ښه شی دوی ته نه وي ورکړل شوي .

حضرت عطاء بن يزيد الليثي فرمايي حضرت ابو هريره فرمايل : صحابه وو د رسول الله ﷺ نه پوښتنه وکوله چې آيا په جنت کې به مونږ خپل رب وينو؟ رسول الله ﷺ فرمايل هَلْ تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ (ولې تاسې ته د سپوږمۍ چې پوره وي په ليدلو کې څه تکليف شته؟) صحابه وو ورته وويل : نه يا رسول الله بيا رسول الله ﷺ وفرمايل : هَلْ تُضَارُّونَ فِي الشَّمْسِ لَيْسَ دُونَهَا سَحَابٌ (كله چې وريځ نه وي تاسې ته د لمر په ليدلو کې څه تکليف شته؟) صحابه وو ورته وويل : نه يا رسول الله ﷺ بيا رسول الله ﷺ وفرمايل: تاسې به خپل رب همداسې وينئ .

د جنتيانو خوراک

جنتيانو ته به په جنت کې هغه خوراک ورکول

کيږي چې کوم د دوی زړه غواړي ، کومه مېوه چې د دوی زړه غواړي او کومه غوښه چې د دوی زړه غواړي او داسې خوراکونه به وي چې لکه مخکې تېر شول نه به په بدن باندې څه ډول بده اغيزه کوي ، نه به د انسان ورڅخه زړه توريږي ، نه به انسان د ډېر خوراک نه د څه بل اثر نه ډاريږي او نه به له انسان سره دا غم وي چې دا به ختم شي بلکه همېشه دائمي خوراکونه به وي چې جنتيانو ته به په پاکه منزه طريقه ورکول کيږي او دوی به ورڅخه لذت اخلي الله فرمايي :
وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ (20) وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ (21) .¹

ترجمة : او (گرځي به په دوی باندې هلکان په) میوو له هغه راز (قسم) چې ئې خوښوي (جنتیان) او غوښو د مرغانو سره له هغه ډوله (قسمه) چې زړونه ئې غواړي

يعني دوی ته به اختيار ورکول کيږي او دوی به د خوراک لپاره هغه څه غوره کوي چې د دوی ورته زړه کيږي او دوی ته به ډول ډول خوراکونه ور وړاندې کيږي او دی به ورڅخه هغه اخلي چې خوراک یې دده زړه غواړي .

حضرت جابر فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : **يَأْكُلُ أَهْلُ الْجَنَّةِ فِيهَا وَيَشْرَبُونَ وَلَا يَتَغَوَّطُونَ وَلَا يَمْتَخِطُونَ وَلَا يَبُولُونَ وَلَكِنْ طَعَامُهُمْ ذَاكَ جُشَاءً كَرَّحَ الْمِسْكُ يُلْهَمُونَ التَّسْبِيحَ وَالْحَمْدَ كَمَا يُلْهَمُونَ النَّفْسَ** .²

ترجمة : جنتیان به په جنت کې خوراک کوي او څښاک به کوي دوی به هلته قضاء حاجت نه کوي او نه به یې له پوزې نه څه گندګي راځي ، نه به خالي بولې کوي بلکه خوراک به یې هلته صرف یو ارګمی وي لکه د مسکو بوی او دوی ته به د تسبیح او حمد الهام داسې کيږي لکه دوی چې

¹ سورة الواقعة

² صحيح مسلم

تنفس کوي يعني په اساني سره به د الله تسبیح او حمد بیانوي نور به یې هېڅ کار هم نه وي او نه به څه کار کوي .

حضرت انس بن مالک فرمایي رسول الله ﷺ فرمایلي : **أَوَّلُ شَيْءٍ يَأْكُلُهُ أَهْلُ الْجَنَّةِ زِيَادَةُ كَيْدِ الْحَوْتِ** .¹

ترجمة : بېشکه جنتیان چې اول په جنت کې کوم شی خوري هغه به د ماهي د جیگر سره اضافي ټوټه وي .

علماء فرمایي چې دا د ماهي د جیگر سره اضافي یوه ټوټه وي او دا ډېره ښه ذائقه لري او ډېره خوندوره وي .

حضرت ثوبان د رسول الله ﷺ ازاد کړل شوی غلام روایت کړی دی او هغه فرمایي : **كُنْتُ قَائِمًا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَجَاءَ حَبْرٌ مِنْ أَحْبَارِ الْيَهُودِ فَقَالَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدٌ. فَدَفَعْنَاهُ دَفْعَةً كَادَ يُصْرَعُ مِنْهَا فَقَالَ لِمَ تَدْفَعُنِي فَقُلْتُ أَلَا تَقُولُ يَا رَسُولَ اللَّهِ. فَقَالَ الْيَهُودِيُّ إِنَّمَا نَدْعُوهُ بِاسْمِهِ الَّذِي سَمَّاهُ بِهِ أَهْلُهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ « إِنَّ اسْمِي مُحَمَّدٌ الَّذِي سَمَّانِي بِهِ أَهْلِي ».** **فَقَالَ الْيَهُودِيُّ جِئْتُ أَسْأَلُكَ. فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ « أَيَنْفَعُكَ شَيْءٌ إِنْ حَدَّثْتُكَ ».** **قَالَ أَسْمَعُ بِأُذُنِي فَنَكَتَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِعُودٍ مَعَهُ. فَقَالَ « سَلْ ».** **فَقَالَ الْيَهُودِيُّ أَيْنَ يَكُونُ النَّاسُ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ « هُمْ فِي الظُّلْمَةِ دُونَ الْجِسْرِ ».** **قَالَ فَمَنْ أَوَّلُ النَّاسِ إِجَارَةٌ قَالَ « فَقَرَاءُ الْمُهَاجِرِينَ ».** **قَالَ الْيَهُودِيُّ فَمَا تُحَفِّقُهُمْ حِينَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ قَالَ « زِيَادَةُ كَيْدِ النَّوْنِ ».** **قَالَ فَمَا غَدَاؤُهُمْ عَلَى إِثْرِهَا قَالَ « يُنَحَرُ لَهُمْ تَوْرُ الْجَنَّةِ الَّذِي كَانَ يَأْكُلُ مِنْ أَطْرَافِهَا قَالَ فَمَا شَرَابُهُمْ عَلَيْهِ قَالَ « مِنْ عَيْنٍ فِيهَا تُسَمَّى سَلْسَبِيلًا ».** **قَالَ صَدَقْتَ. قَالَ وَجِئْتُ أَسْأَلُكَ عَنْ شَيْءٍ لَا يَعْلَمُهُ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ الْأَرْضِ إِلَّا نَبِيُّ أَوْ رَجُلٌ أَوْ رَجُلَانِ. قَالَ « يَنْفَعُكَ إِنْ حَدَّثْتُكَ ».** **قَالَ أَسْمَعُ بِأُذُنِي** .²

1 صحیح مسند الطیالسی

2 صحیح مسلم

ترجمة : زه د رسول الله ﷺ سره ولاړم وم چې د يهودو يو عالم راغلو ويل يې محمده په تا د سلام وي ما داسې په زوره تېله کړو چې نېږدې غورځېدلی وو هغه راته وويل ولې د تېله کړم؟ ما ورته وويل ولې د داسې ونه ويل يا رسول الله؟ يهودي وويل مونږ ورته هغه نوم اخلو کوم چې ورته د کور خلک اخلي بيا رسول الله ﷺ وويل محمد زما هغه نوم دی چې زما کور واله يې ما ته اخلي يهودي ورته وويل : زه راغلی يم لتا څخه پوښتنه کوم رسول الله ﷺ ورته وويل : که زه تاته د هغې ځواب درکړم تاته څه فايده کوي؟ هغه وويل په غوږونو سره يې آورم د رسول الله ﷺ په مبارکو گوتو کې يو وړوکی لرگی وو په هغه باندې يې زمکه گروله ورته يې وويل پوښتنه د وکوه يهودي ورته وويل کله چې دا زمکه په بله زمکه او اسمان هرڅه د قيامت په ورځ بدلېږي پدې وخت کې به داخلک چېرته وي؟ رسول الله ﷺ ورته وويل : دا به د پل سره په تياره کې وي يهودي وويل : اول به چاته اجازه ورکوله کيږي ؟ رسول الله ﷺ ورته وويل : فقراء المهاجرين ته يهودي وويل : دوی چې جنت ته ننوزي تحفه به يې څه شی وي؟ رسول الله ﷺ ورته وويل : د ماهي د جيگر سره زياته ټوټه يهودي ورته وويل : ددېنه وروسته به دوی ته څه خوراک ورکول کيږي؟ رسول الله ﷺ ورته وفرمايل : دوی ته به د جنت غوايي حلال کړل شي د هغه اندامونه به وخوري بيا يهودي وويل : ددېنه وروسته به څه شی څښي؟ رسول الله ﷺ ورته وويل : په جنت کې يوه چينه ده چې سلسبيل ورته ويل کيږي د هغې نه يهودي ورته وويل : تا رشتيا وويل زه راغلم لتا نه مې د داسې خبرو پوښتنه وکوله چې د زمکې په مخ پرې د نبي نه بغير او يو يا دوو انسانانو نه

بغير ورباندي بل څوک نه دي خبر رسول الله ﷺ ورته وويل : چې زه درته خبرې وکوم تاته څه فايده کوي؟ يهودي وويل : په غوړونو سره يې آورم .

د جنت ونې او ميوې

په جنت کې ونې ډېرې دي او په متعدد ډوله دي چې الله يې مونږ ته خبر راکړی دی د انگور ونې دي ، خورماوې دي ، انار دي او داسې نورې ونې پکې وجود لري البته دا ونې صرف په نوم کې د دنيا له ونو سره شریکې دي په حقیقت کې هغه ونې لدې نه ډېرې بدلې دي د مثال په ډول په هغه ونو کې چې کومه میوه وي د هغې مزه د هغې رنگ د هغې بوی او چې کله هغه میوه له ونې وشکول شي سم د لاسه به یې په ځای باندې بله هغه ډول میوه را شنه کیږي او که هرڅو ډېره میوه په جنت کې څوک وخوري نه به ورته تربنه څه تکلیف پیدا کیږي او نه به یې په معده باندې بوج کیږي او داسې نور ډېر فرق به لري البته ددې لپاره چې انسانان ورباندې پوه شي نو هغه نومونه ورته یادوي کومې ونې چې په دنيا کې وې د جنت د ونو ذکر الله کوي او فرمایي : **إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا** .¹

ترجمة : بېشکه خاص متقیانو ته (په آخرت کې) ځای د خلاصې بري کامیابي دی باغونه (د ميوې) او د انگورو (ونې) دي او پېغلې انارتیوني همزولې دي.

فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمانٌ .²

¹ سورة النبأ آية ۳۱-۳۲

² سورة الرحمن آية ۶۸

ترجمة : په جنتونو کې به ميوې وې خورما او انار به وي .

وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ¹ .

ترجمة : او ملگري یاران د ښي لاس خومره ښه دي ملگري یاران د ښي لاس په بېرو بې اغزیو کې به وي او په (میوه د) کیلو له بیخه تر سره ډکو کرل شویو کې به وي او په سیوریو اوږدو کریو شویو همېشه وو کې به وي او په اوبو بهېدونکیو توښېدونکیو همېشه وو کې به وي او په مېوو ډېرو کې به وي .

مُنَكِّينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ² .

ترجمة : تکیه وهلي (ناست به وي مؤمنان) په دغو (جنتونو) کې چې غواړي به (دغه جنتیان) په هغو کې ميوې ډېرې او څیزونه د) څښلو.

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ³ .

ترجمة : او (گرځي به په دوی باندې هلکان په) میوو له هغه راز (قسم) چې ئې خوشوي (جنتیان) .

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ وَفَوَاكِهٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ⁴ .

ترجمة : بېشکه هغه کسان چې ځان یې ساتلی له متابعت د شیطان نه په سیورو (د جنت) کې به وي او په چینو کې به وي او په داسې مېوو کې به وي چې د دوی زړه غواړي.

1 سورة الواقعة آية ۲۷-۳۲

2 سورة ص آية ۵۱

3 سورة الواقعة آية ۲۰

4 سورة المرسلات آية ۴۱-۴۲

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ .¹

ترجمة : گرځولی کيږي به (د غلمانو له خوا) پر دغو جنتیانو کاسې ګلاسونه له سرو زرو څخه او (طلايي) صراحی ګانې او (وي به دوی ته) په دغه (جنت) کې هغه شيان چې خواش کوي د هغوی نفسونه (د دوی) او چې خوند اخلي سترګې (د دوی ترې) او (ویل کيږي به دوی ته) تاسې به پدې جنت کې همېشه وي .

امام ابن کثير فرمايي : وإذا كان السدر الذي في الدنيا لا يثمر إلا ثمرة ضعيفة وهو النبق، وشوكه كثير، والطلح الذي لا يراد منه في الدنيا إلا الظل، يكونان في الجنة في غاية من كثرة الثمار وحسنها، حتى إن الثمرة الواحدة منها تتفتق عن سبعين نوعاً من الطعوم، والألوان، التي يشبه بعضها بعضاً، فما ظنك بثمار الأشجار، التي تكون في الدنيا حسنة الثمار، كالتفاح، والنخل، والعنب، وغير ذلك؟ وما ظنك بأنواع الرياحين، والأزهار؟ وبالجملة فإن فيها ما لا عين رأت، ولا أذن سمعت، ولا خطر على قلب بشر، نسأل الله منها من فضله .²

ترجمة : كله چې په دنیا کې السدر ونه داسې یوه ونه ده چې یو ډول ضعیفه میوه لري او زیاته اغزي لرونکي ونه ده او الطلح یوه ونه ده چې په دنیا کې ورڅخه مطلب صرف سیوری وي (او د کیلې په ونه یې هم تفسیر شوی دی) دا دواړه ونې به په جنت کې داسې وي چې ډېرې ښې او زیاتې میوې به لري تردې چې په دوی کې به یوه میوه په اويا خوندونو باندې مشتمله وي او په مختلفو رنگونو به مشتمله وي نو چې دلته یوه بې میوې ونه په جنت کې داسې میوه ورکوي ستا څه ګمان دی د هغه ونو په اړه چې دلته هم ښکلي میوه لري لکه مڼه ، خورما، انگور او

¹ سورة الزخرف آية ٧١

² تفسیر ابن کثیر

داسې نور؟ او ستا څه گمان دی د مختلفو گلونو په اړه خلاصه دا چې په جنت کې چې کوم شيان دي هغه داسې نعمتونه دي چې نه خو سترگو ليدلي ، نه غوړونو آوړېدلي دي او نه د کوم انسان په زړه کې ورت تېر شوي دي مونږ يې د الله له فضل څخه سوال کوو .

د جنت ونې به داسې نه وي لکه د دنيا ونې چې خپل سيزن او خپل وخت لري په هغه وخت کې ميوه ورکوي او د هغه وخت نه بغير يې نور ټول کال هېڅ ميوه نه وي او کوم انسانان چې په دنيا کې لدې ونو ميوه اخلي هغه به تر بله هغه وخته پورې ورته صبر وکوي چې دا ونه ميوه وکوي او بيا يې دی ورڅخه واخلي بلکه د جنت ونې هر وخت ميوه او هر وخت سيوری ورکوي او ټول عمر په يو ډول تازه وي او د وخت په تېرېدو سره به پکې هېڅ ډول بدلون نه راځي اللّٰهُ فرمايې : **مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ أُكُلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ** .¹

ترجمة : مثال (صفت) د جنت هغه چې وعده کړې شوې ده (په هغه سره) د پرهېزگارانو سره (دا دي چې) بهيري (همېشه) له لاندې (د باغونو او مانيو) د هغه (خلور قسمه) ويالې ميوې د هغې (به همېشه بې انتهاء او بې انقطاع) وي او سوری د هغه (به هم همېشه وي بې زواله) دا (جنت) عاقبت (او مرجع) دی د هغو کسانو چې پرهېزگاري کوي او عاقبت (کې ځای) د کافرانو اور (د دوزخ) دی.

وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ .²

ترجمة : او په مېوو ډېرو کې به وي چې نه به

¹ سورة الرعد آية ۳۵

² سورة الواقعة آية ۳۲-۳۳

قطع کولی کيږي په هېڅ وقت او نه به منع کولی کيږي په هېڅ عذر سره .

او د جنت په میوو کې یوه عجیبه خبره به دا وي چې په ښکاره شکل کې به داسې وي لکه د دنیا مېوه خو چې کله یې جنتیان وڅکي نو خوند به یې ډېر بدل وي ددې وجې نه خو به چې دوی ته څه رزق ورکول کيږي دوی به وایي چې دا خو هماغه دی چې مخکې (په دنیا کې) راکړل شوی وو الله فرمایي : **كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رَزَقُوا قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأَنُؤُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ** .¹

ترجمه : هر کله چې روزي ورکړه شي دغو (جنتیانو) ته له جنتونو څخه څه مېوه لپاره د خوړلو نو وایي دا (جنتیان) دا همغسې مېوه ده چې راکړل شوې وه مونږ ته پخوا له دې نه او رابه وړه شي دوی ته مېوه هم رنگه (او په خوند کې سره بدله) او وي به دوی ته په دغو (جنتونو) کې ښځې ښې پاکې او دوی به وي په دغو (جنتونو) کې همېشه .

رسول الله ﷺ د جنت د ونو په اړه ډېر څه ویلي دي او د مختلفو ونو په اړه یې مونږ ته خبرې کړي دي د مثال په توګه :

هغه ونه چې تلونکی یې تر سیوري لاندې سل کاله سفر کوي .

دا یوه داسې ونه ده چې رسول الله ﷺ یې په اړه مونږ ته خبر راکړی دی او په دنیا کې یې مونږ تصور هم نشو کولی الله به په خپل قدرت په جنت کې پیدا کړېده چې یو کس په آس سپور د آس په تیز رفتار سره د هغه ونې په سیوري کې ځي نو

په سلو کلونو کې یې قطع کولی شي حضرت ابو سعید الخدری فرمایي رسول الله ﷺ فرمایل : **إن في الجنة لشجرة يسير الراكب الجواد المضمر السريع مائة عام وما يقطعها.**¹

ترجمة : بېشکه په جنت کې یوه ونه ده چې یو سپور کس چې په ښه آس باندي سپور وي هغه چې ډېر تیز ځي هغه یې په سلو کلونو کې قطع کولی شي .

حضرت ابو هريره فرمایي رسول الله ﷺ فرمایل : **ان في الجنة لشجرة يسير الراكب في ظلها مائة سنة، واقرؤوا إن شئتم: (وظل ممدود).**²

ترجمة : بېشکه په جنت کې یوه ونه ده یو سپور سړی د هغې ونې په سیوري کې سل کاله سفر کوي پدې اړه که ستاسې خوښه وي د سورة واقعي دا آیت تلاوت کړئ چې الله فرمایي سیوری به وي اوږد .

حضر ابو هريره او حضرت سهل بن سعد فرمایي رسول الله ﷺ فرمایل : **إن في الجنة لشجرة يسير الراكب في ظلها مائة سنة لا يقطعها.**³

ترجمة : بېشکه په جنت کې یوه ونه ده چې یو سپور د هغه په سیوري کې سل کاله سفر کوي او نه به یې شي ختمولی .

الله فرمایي : **وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَىٰ إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ.**⁴

1 صحیح البخاري و مسلم

2 صحیح البخاري

3 صحیح مسلم

4 سورة النجم آية ۱۳-۱۷

ترجمة : او خامخا په تحقيق ليدلى وو محمد هغه (جبريل) په راشکته کيدلو کې بل ځلې په نزد د دونې د بېرې د سدرۍ المنتهى (چې منتهيا د علم د خلقو دى) په نزد د هغې دى جنت الماوى (يعني ځاى د هستوگنې د مؤمنانو) (ليدلى وو محمد جبريل لره) کله چې پټ کړل هغې ونې د بېرې لره هغه څه چې پټ کړي ئې وو نه وې گرځېدلې سترگې د (محمد ﷺ) بلې خوا ته) او نه دي تېرې شوې (له حده) .

رسول الله ﷺ چې کله دا ونه ليدلې وه داسې يې بيانوله : ثم رفعت لي سدرۍ المنتهى، فإذا نبقتها مثل قلال هجر وإذا ورقها مثل آذان الفيلة. قال: (أي جبريل) هذه سدرۍ المنتهى، وإذا أربعة أنهار، نهران باطنان، ونهران ظاهران، قلت: ما هذان يا جبريل؟ قال: أما الباطنان فنهران في الجنة، وأما الظاهران فالنيل والفرات.¹

ترجمة : بيا زه سدرۍ المنتهى ته پورته کړل شوم هلته مې يوه ونه وليده چې پانې يې لکه د فيل غوړونه داسې وو جبريل وويل دا سدرۍ المنتهى ده چې ما وليدل له هغه ځاى څخه څلور نهرونه روان وو دوه نهرونه پټ او دوه ښکاره وو ما ورته وويل دا څه شى دى جبريل؟ حضرت جبريل وفرمايل : دا پټ چې دى دا نهرونه دي په جنت کې او دا ښکاره چې دى دا نيل او فرات دي چې په دنيا کې دي .

د طوبى ونه

دا هم په جنت کې يوه لويه ونه ده حضرت ابو سعيد الخدري فرمايي طوبى شجرة في الجنة، مسيرة مائة

¹ رواه البخاري ومسلم

عام، ثياب أهل الجنة تخرج من أكامها.¹

ترجمة : طوبي په جنت کې ونه ده چې د سلو کالونو د سفر د مسافې په اندازه ده د جنتیانو جامې به د هغې له پوستکي څخه وي .

ددېنه بغير د نورو ونو هم ذکر شوی دی او په جنت کې چې څومره ونې وي هغه به د لرگي نه بلکه د سرو زرو جوړې وي تنه به يې د سرو زرو وي او نورې به هم ډېرې ښائسته جوړې شوې وي .

د جنتیانو څښاک

لکه د خوراک په څېر داسې به د جنتیانو څښاک هم خاص وي څه ډول څښاک يې چې زړه ته کيږي هغه به ورکول کيږي او اکثر وخت به جنتیان ددې امله څښاک نه کوي چې دوی به تېري شوي وي بلکه ددې لپاره به څښاک کوي چې مزه ورڅخه واخلي او ددې ضرورت به يې هم نه کيږي چې د څښاک لپاره پاڅيږي بلکه هرڅه به په پاکو گلاسونو کې د دوی مخې ته کېښودل کيږي چې مختلفې ذائقې به لري الله فرمايي : **إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا* عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا** .²

ترجمة : بېشکه ابرار (نيکان) څښي (په جنت کې) له جامونو د شرابو څنې چې وي گډ له هغو سره (جنتي) کافور چينه چې څښي به له هغې څخه (نېک) بندگان د الله چې بيا ئې به (مؤمنان) دغې (چينې) لره (هر چېرته چې ئې خوښه وي په بېول) وفا کوي (ابرار) په (هغه) نذر سره (چې ئې واجب کړی وي په طاعت د الله کې پر ځانونو خپلو باندې) او ويريږي (ابرار) له هغې ورځې چې شر ئې ښکاره او تيت (څرگند) دی .

¹ مسند امام احمد ابن حنبل

² سورة الدهر (الانسان) آية ۶-۵

په بل ځای کې الله فرمایي : وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا* عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّى سَلْسَبِيلًا .¹

ترجمة : او ورځېښول كيږي به جنتيانو ته په جنت کې جامونه د شرابو چې وي به گډ له (پاکو شرابو د) هغه سره (لپاره د خوشبويي جنتي) زنجبیل چينه په دغه (جنت کې چې) نوم ئې اېښودلی شوی دی په سلسبیل سره (چې د حلقه اسانه لږيزه تيريري).

وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا .²

ترجمة : او ور وېه څښي دغو (جنتيانو ته) رب د دوی شراب طهور (څښاک ښه پاکيزه) .

يَطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَّعِينٍ بَيُّضَاءٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ .³

ترجمة : گرځولی به شي پر دوی له جامونو د صافو شرابو تک سپين خوند ورکونکي د پاره د څښونکيو نه به وي په دغو شرابو کې څه آفت علت او نه به وي دوی له هغو شرابو څخه مست بېخوده .

يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْتُومٍ خَتَمُهُ مِسْكٌ وَفِي ذَلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ .⁴

ترجمة : ور څښولی شي (هغوی ته) له خالصو شرابو مهر کړيو شويو څخه چې مهر به يې مشک وي او په دغو (شرابو او نورو جنتي نعمتونو) باندې پس بايد دي چې رغبت وکړي رغبت کوونکي (په کولو د نېکو عملونو او پرېښودلو د بدو

1 سورة الدهر (الانسان) آية ۱۷-۱۸

2 سورة الدهر (الانسان) آية ۲۱

3 سورة الصافات آية ۴۵-۴۷

4 سورة المطففين آية ۲۵-۲۶

عملونو) .

لنډه دا چې په جنت کې هر ډول خوراک او څښاک د جنتیانو لپاره تیار وي خو د جنتي اشتها ته صبر کوي چې څه شی د هغه زړه وغواړي او د جنتیان اکثر څښاک صافي پاکي اوبه ، شهد ، شودې، جنتي شراب، زنجبیل، کافر، د تسنیم چيني اوبه ، او د سلسبیل چيني اوبه وي ..

جنتي شراب

په جنت کې به جنتيانو ته جنتي شراب ورکول کيږي هغه صرف په نوم کې د دنيا د شرابو سره شريک دي نور په حقيقت کې مکمل بدل دي هغه لداسې شيانو نه چې د دنيا په شرابو کې دي مقدس دي او منزّه دي دا مردار دي ، د دنيا شراب گندگي ده ، بې نمازه ده چې په کومه جامه ولگيږي مونځ ورسره نه کيږي د جنت شراب د الله يو نعمت دی په هغه کې گندگي نشته ، مرداري پکې نشته ، جنتي به نه نشه کوي ، او په جنتي باندې به غير ارادي او بې خايه حرکات نه کوي او په جنت کې به د شرابو نهرونه وي مخکې تېر شول چې الله فرمايل **وَأَنْهَارٌ مِنْ حَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ** (په جنت کې به د شرابو نهرونه وي چې د څښونکي لپاره به يو ډول لذت او مزه وي) .

جنتي غسل (شهد)

په جنت کې به جنتيان شهد هم څښي لکه د مخکې په څېر صرف په نوم کې د دنيا له شهدو سره شريک دي په حقيقت کې هغه بل شی دی هغه د مچيو نارې نه دي او د مچيو له بدن څخه نه راوړي بلکه په جنت کې به نهر وي له هغه نه به يې جنتيان څښي الله فرمايي **وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى** (په جنت کې به د پاکو صاف کړل شويو شهدو نهرونه وي) .

جنتي شودې

د جنت شودې هم د جنتيانو له څښاک څخه دي کومې چې په جنت کې له نهر نه اخيستل کيږي کومې به چې په سپين والي کې ډېرې سپينې او همېشه تازه وي او د وخت له تېرېدو سره به پکې هېڅ فرق نه راځي ښه ذائقه او ښه بوی لرونکي د جنتيانو

خُشَاک دى او په جنت کې يې نهرونه دي الله فرمايي
وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ (او په جنت کې به د شودو
نهرونه وي چې خوند به يې بدل نه وي)

پوښتنه : کله چې په جنت کې جنتيان نه وړي
کيږي نه تېري کيږي او نه بيمار کيږي نو بيا
خوراک او خُشاک د څه لپاره کوي؟ او چې کله
هغوى ته څه ډول بيماري نه لگيږي او نه يې بدن
بد بوى کوي نو بيا په خوشبويي لگولو څه کوي
دا هرڅه د څه لپاره کوي؟

خواب : ددې پوښتنې خواب امام المفسرين قرطبي
کړى د هغه فرمايي : نعيم أهل الجنة وكسوتهم ليس عن دفع
ألم اعتراهم، فليس أكلهم عن جوع، ولا شربهم عن ظمأ، ولا تطيبهم عن نتن،
وإنما هي لذات متوالية، ونعم متتابعة، ألا ترى قوله تعالى لآدم: إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ
فِيهَا وَلَا تَعْرَى وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَضْحَى .¹

ترجمة : د جنت نعمتونه او د جنت جامه د کوم
درد د لرې کولو لپاره نه ده نه يې خوراک د
لوړې له امله دى او نه يې خُشاک د تندي د
ختمولو لپاره دى او نه يې خوشبويي د بد بوى د
لرې کولو لپاره ده بلکه د جنت نعمتونه سر په
سر مزي دي او هميشه نعمتونه دي لکه الله چې
حضرت آدم ته فرمايل : بېشکه مقرر دي تاته
چې نه به وړى کېږي په دې (جنت) کې او نه به
برېښد کېږي او بېشکه ته به نه تېرى کېږي په
دغه جنت کې او نه به دې گرمي کيږي.

يعني چې په جنت کې څومره نعمتونه دي جنتيان
به ددې استعمال صرف او صرف د خوند اخيستلو
لپاره کوي.

د جنت نهرونه

الله مونږ ته ددې خبر هم راکړی دی چې په جنت کې به نهرونه وي بیا رسول الله ﷺ هم د هغه نهرونو تفصیل کړی دی او هغه نهرونه چې څنګه دي او په حقیقت کې په څه ډول دي ددې ځواب بیا د رسول الله ﷺ یو حدیث کړی دی چې نه یوازې نهرونه بلکه د جنت ټول نعمتونه داسې دي چې نه سترګو لیدلي ، نه غوږونو اورېدلي او نه د کوم بشر په زړه باندې ور تېر شوي دي .

الله د جنت د نهرونو ذکر کوي او فرمایي : **وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رَزَقُوا قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ.**¹

ترجمة : او زېږی ورکړه (اې محمده ﷺ) هغو کسانو ته چې ایمان ئې راوړی دی (په ټولو مؤمن به شيانو) او کړي ئې دي ښه (عملونه) په دې چې بېشکه دوی ته جنتونه دي چې بهیري لاندې (تر ما نیو او ونو) د هغو ویالې هر کله چې روزي ورکړه شي دغو (جنتیانو) ته له جنتونو څخه څه مېوه لپاره د خوړلو نو وایي دا (جنتیان) دا همغسې مېوه ده چې راکړل شوې وه مونږ ته پخوا له دې نه او رابه وړه شي دوی ته مېوه هم رنگه (او په خوند کې سره بدله) او وي به دوی ته په دغو (جنتونو) کې ښځې ښې پاکې او دوی به وي په دغو (جنتونو) کې همېشه .

أُولَئِكَ لَهُمْ جَنَّاتٌ عَدْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَكِنِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا.²

¹ سورة البقرة آية ٢٥

² سورة الكهف آية ٣١

ترجمة : دغه (مؤمنان چې دي) شته دوی ته (هسې) جنتونه د تل هستوگنې چې بهیري له لاندې (د ونو او مانیو) د دوی (خلور قسمه) ویالې په لاس به کاوه شي دوی ته په دغه جنت کې وېشي له سرو زرو (څو وېشولې شي چې اصلي او دائمي دولتمن او باثروته سړی دی؟) او آغوندي به دغه (جنتیان) جامې زرغونې له نریو ورېښمو او له پرېرو (غتو) ورېښمو تکیه کوونکي به وي په دغو جنتونو کې پر تختونو باندې خومره ښه بدل دی (دا جنتونه او نعمتونه) او خومره ښه دي (دا جنتونه او نعمتونه) ځای د آرام.

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرَ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءُهُمْ (15).¹

ترجمة : مثل صفت بیان د جنت هغه چې وعده ئې کړل شوې ده له پرهېزگارانو سره په هغه کې ویالې دي له اوبو چې نه به وي بد خوند (بدلېدونکي په مزه اوبو کې) او ویالې دي له شودو چې نه وي متغیرې (مزه ئې بلکه صاف او خوندوره ده) مزه د هغو او ویالې دي له شرابو چې مزه ورکوونکي دي (هغه) څښونکیو ته او ویالې دي له شاتو (گبین) صفا کړیو شویو (له خیریو نه) (او شته) دوی ته په دغه (جنت) کې له هر راز (قسم) مېوو او مغرت له (طرفه د) رب د دوی .

او جنات تجري تحتها الأنهار عبارت په قرآن کریم کې ۴۲ ځله تکرار شوی دی چې دا ټول جزم او یقین پیدا کوي پدې چې په جنت کې نهرونه موجود دي چې د مسلمانانو سره یې وعده شوېده چې دوی به هلته لدې نه خوند او مزه اخلي .

رسول الله ﷺ يې هم مونږ ته قصه كړېده د معراج د شپې واقعې ده چې رأى أربعة أنهار يخرج من أصلها نهران ظاهران ونهران باطنان، فقلت: يا جبريل، ما هذه الأنهار؟ قال: أما النهران الباطنان: فنهران في الجنة وأما الظاهران: فالنيل والفرات.

ترجمة : رسول الله ﷺ وليدل چې څلور نهرونه بهېدل دوه ښكاره وو او دوه پټ وو رسول الله ﷺ فرمايي ما له حضرت جبريل څخه پوښتنه وكوله چې دا نهرونه څه شې دي هغه راته وويل : دا پټ نهرونه د جنت دوه نهرونه دي او ښكاره نهرونه نيل او فرات دي .

حضرت ابو هريره فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل :
سيحان وجيحان والفرات والنيل كل من أنهار الجنة .¹

ترجمة : دا سيحون او جيحون ، فرات او نيل د جنت له نهرونو څخه دي .

علماء فرمايي : ددې مطلب دادى چې ددې نهرونو اصل له جنت څخه دى لكه د انسان اصل چې له جنت څخه دى نو ددې امله اوس هغه اعتراض نه واقع كيږي چې په موجوده عصر كې څېړنو ښكاره كړېده چې دا هر نهر له معلوم ځاى نه سر چينه اخلي او هغه ځايونه يې ښكاره دي نو رسول الله ﷺ ولي فرمايي چې دا له جنت څخه دي؟

نو همدا يې ځواب دى چې اصل يې له جنت څخه دى لكه د انسان اصل چې له جنت څخه دى اوس په زمكه كې اوسيږي .

حضرت انس بن مالك فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل

: بينما أنا أسير في الجنة، إذ أنا بنهر حافته قباب الدر المجوف، قلت: ما هذا يا جبريل؟ قال: هذا الكوثر الذي أعطاك ربك، فإذا طيبه- أو طينه - مسك أنفر.¹

ترجمة : كله چې زه په جنت کې تلم يو نهر ته ورسېدم چې په غاړو يې د ملغلرو گنبدې وې چې مينځونه يې خالي وو ما وويل جبريل دا څه شی دي؟ هغه راته وويل دا هغه کوثر دی چې الله تاته درکړی دی چې ومې کتل د هغه بوی او يا د هغه خټه مسک وو .

حضرت انس بن مالک فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : أتدرون ما الكوثر؟ قالوا: الله ورسوله أعلم. قال: هو نهر وعدنيه الله عز وجل، عليه خير كثير.²

ترجمة : تاسې ته معلومه ده چې کوثر څه شی دی؟ صحابه وو ورته وويل : الله او د هغه رسول ﷺ ورباندې ښه پوهيږي رسول الله ﷺ وفرمايل : هغه يو نهر دی الله يې لما سره وعده کړېده په هغه کې ډېر خير دی .

حضرت انس فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : أعطيت الكوثر، فإذا نهر يجري على ظهر الأرض، حافته قباب اللؤلؤ، ليس مسقوفاً، فضربت بيدي إلى تربته، فإذا تربته مسك أنفر، وحصابؤه اللؤلؤ .³

ترجمة : ماته کوثر راکړل شوی دی هغه د زمکې په مخ روان وو (په جنت کې) په غاړو يې گنبدې وې د ملغلرو چې پت پرې نه وو جوړ ما د هغې په خاوره باندې لاس ولگولو چې ومې کتل خاوره يې يو ډول قيمتي مسک وو او د هغې شگې ملغلرې وې

¹ صحيح البخاري

² صحيح البخاري

³ رواه الامام احمد

د حضرت معاوية بن حيدة خخه روايت دی هغه فرمايې رسول الله ﷺ فرمايل : إِنَّ فِي الْجَنَّةِ بَحْرَ الْمَاءِ وَبَحْرَ الْعَسَلِ وَبَحْرَ اللَّبَنِ وَبَحْرَ الْخَمْرِ ثُمَّ تُشَفَّقُ الْأَنْهَارُ بَعْدُ¹ .

ترجمة : بېشکه په جنت کې د اوبو بحر دی ، د شاتو بحر دی د شودو بحر دی او د شرابو بحر دی بيا د هغې نه نهرونه بيليري .

د جنت ځينې نهرونه په لاندې ډول دي :

نهر الكوثر

هغه نهر دی چې الله رسول الله ﷺ ته ورکړی دی ځینې صفتونه یې پورته تېر شول رسول الله ﷺ د هغه حوض په اړه فرمایي : **الكوثر نهر في الجنة حافته من الذهب ، والماء يجري على اللؤلؤ ، وماؤه أشد بياضا من اللبن ، وأحلى من العسل** .¹

ترجمة : کوثر یو نهر دی په جنت کې غاړې یې د سرو زرو نه جوړې دي او په هغه کې اوبه په ملغلرو باندې بهیږي او اوبه یې تر شودو سپینې او له شاتو نه ډېرې خوږې دي .

علماء فرمایي کله چې حوض کوثر یادېږي نو دا به یو حوض وي چې په محشر کې به جوړېږي د رسول الله ﷺ امتیان به ورځي هلته به ورځه اوبه څښي او حوض کوثر ورته ځکه ویل کیږي چې اوبه به یې له هغه نهر نه وي چې په جنت کې دی ورته نهر کوثر ویل کیږي .

دا نهر الله رسول الله ﷺ ته ورکړی دی الله فرمایي : **إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ** .²

ترجمة : بېشکه په تحقیق سره درکړی دی مونږ تاته کوثر .

د نهر الكوثر ځينې صفتونه پدې ډول دي :

- طرفونه يې د سرو زرو دي .
- اوبه يې په ملغلرو او ياقوتو باندې بهيري .
- اوږدوالی يې د يوې مياشتې په مسافه باندې دی .
- مسافه يې تقريباً د شام د ايله نومي ځای نه د يمن تر صنعاء نومي ځای پورې ده .
- لوبښي يې لکه ځلانده ستوري داسې دي او د اسمان له ستورو نه زيات دي .
- بوی يې له مسکو نه ښه دی او خاوره يې هم مسک دي .
- اوبه يې له شودو او واورې نه سپينې او له شاتو نه خوړې دي او تر مسکو نه خوشبويه دي .
- حوض کوثر به د جنت نه دوه نلکې تللي وي يوه به د سرو او بله د سپينو زرو وي .
- دډېنه به صرف د رسول الله ﷺ امتيان اوبه څښلې شي او څوک چې يو ځل دډېنه اوبه وڅښي بيا به ټول عمر نه تېری کيږي .
- د کوثر نهر اوس هم موجود دی په يو حديث کې رسول الله ﷺ فرمايي : **وَإِنِّي وَاللَّهِ لَأَنْظُرُ إِلَى حَوْضِي الْآنَ** .¹

ترجمة : داسې ده لکه زه چې همدا اوس خپل حوض ته گورم .

حوض کوثر ته به اول څوک ورځي؟

رسول الله ﷺ پدې اړه فرمايې : **أَوَّلُ النَّاسِ وَرُوداً عَلَيْهِ فَقَرَاءُ الْمُهَاجِرِينَ، الشَّعَثَ رُؤُوساً، الدُّنْسُ ثِيَاباً، الَّذِينَ لَا يَنْكَحُونَ الْمَنْعَمَاتِ، وَلَا تَفْتَحُ لَهُمُ السُّدَدُ، الَّذِينَ يَعْطُونَ الْحَقَّ الَّذِي عَلَيْهِمْ، وَلَا يَعْطُونَ الَّذِي لَهُمْ.**¹

ترجمة : حوض کوثر ته به اول هغه فقيران مهاجرين ورځي چې ببر سرونه يې وي ، خیرني جامې يې وي ، هغه چې د مالدارو ښځو سره وادونه نه کوي ، په هغوی بنديزونه نه خلاصیږي ، هغه حق چې په دوی وي هغه ورکوي او هغه حق چې ددوی په خلکو وي هغوی يې نه ورکوي .

نهر البیدخ

دا یو نهر دی په جنت کې شهیدان به پدې کې لمبیري او کله چې شهیدان پکې غوټه وخوري چې تربنه را پورته شي لکه قمر داسې به ځلیږي او په دنیا کې يې چې څومره تکلیفونه لیدلي وي ټول به ورڅخه هېر شوي وي .

حضرت انس بن مالک فرمایي رسول الله ﷺ یوه د مجاهدينو ډله په کوم کار پسې لېږلې وه یوه ښځه ورته راغله ورته وپل یې یا رسول الله رَأَيْتُ کَأَنِّي دَخَلْتُ الْجَنَّةَ فَسَمِعْتُ بِهَا وَجِبَةً ارْتَجَّتْ لَهَا الْجَنَّةُ فَتَنَطَرْتُ فَإِذَا قَدْ جِيءَ بِفُلَانٍ وَفُلَانٍ حَتَّى عَدَّتْ اثْنَيْ عَشَرَ رَجُلًا وَقَدْ بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَرِيَّةً قَبْلَ ذَلِكَ قَالَتْ فَجِيءَ بِهِمْ عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ طَلَسُ تَشَخَّبُ أَوْ دَاجَهُمْ قَالَ فَقِيلَ اذْهَبُوا بِهِمْ إِلَى نَهْرِ الْبَيْدَخِ أَوْ نَهْرِ الْبَيْدَجِ فَعُمِسُوا فِيهِ فَخَرَجُوا مِنْهُ وَجُوهُهُمْ كَالْقَمَرِ لَيْلَةً الْبَدْرُ قَالَ ثُمَّ اتَّوَا بِكَرَاسِيٍّ مِنْ ذَهَبٍ فَقَعَدُوا عَلَيْهَا وَاتَّي بِصَحْفَةٍ مِنْ ذَهَبٍ فِيهَا بُسْرَةٌ فَأَكَلُوا مِنْهَا فَمَا يُقْبَلُونَهَا لِشِقِّ إِلَّا أَكَلُوا مِنْ فَكْهَةٍ مَا أَرَادُوا وَأَكَلْتُ مَعَهُمْ.

ترجمة : يا رسول الله ﷺ ما په خوب کې وليدل چې زه جنت ته ننوږم يو نا ځايي اواز مې واورېدو چې جنت ورته جتکه وخوړه ما ورته وکتل چې ومې ليدل فلانی، فلانی ، فلانی دولس کسان يې حساب کړل چې دا راوستل شول او ددېنه مخکې رسول الله ﷺ د مجاهدينو يوه ډله لېږلې وه دا دولس کسان په هغې کې وو بيا دا کسان راوستل شول چې زړې جامې يې په ځان وې د غاړې له رگونو يې وينې روانې وې وويل شول چې دا نهر البیدخ او يا نهر البیدج ته وروځي هلته وروستل شول په هغه کې غوټه کړل شول بيا ورڅخه را وويستل شول مخونه يې لکه د سپوږمې داسې وو په هغه شپه چې پوره وې بيا ورته د سرو زرو چوکیانې راوړل شوې دوی په هغې باندې کېناستل او کاسې ورته راوړل شوې چې د سرو زرو وې تازه خورما پکې وې دوی د هغې نه خوراک وکولو دوی به چې اړخ بدلولو نو د هغوی نه به يې چې څه خوښه وه خوراک کولو او ما هم ورسره خوراک وکولو .

حضرت انس بن مالک فرمايي بيا د مجاهدينو له هغه ډلې څخه خبر راغلو رسول الله ﷺ ته يې وويل : زمونږ کارونه خو داسې او داسې شول او فلانی فلانی فلانی دولس کسان يې هغه کسان شمار کړل چې هغه مبارکې صحابيې شمار کړي وو دا شهيدان شول .

رسول الله ﷺ حکم وکولو هغه ښځه يو ځل بيا زما مجلس ته حاضره کړئ هغه چې راغله ورته يې وويل : ته دا خوب يو ځل بيا ووايه هغې مبارکې بيا ورته خپل خوب وويلو او هماغه دولس کسان چې دې په خوب کې ليدلي وو هغه شهيدان شوي وو .

نهر بارق

دا په جنت کې يو نهر دی شهيدان لدې سره کيني او هغوی ته همدلته د دوی رزق راځي حضرت عبد الله بن عباس فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : الشُّهَدَاءُ عَلَى بَارِقٍ - نَهْرٍ بَابِ الْجَنَّةِ - فِي قُبَّةٍ خَضْرَاءٍ يَخْرُجُ عَلَيْهِمْ رِزْقُهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ بُكْرَةً وَعَشِيًّا.¹

ترجمة : شهيدان به د بارق د نهر سره وي دا د جنت په دروازه کې يو نهر دی په شنه گنبده کې دوی ته د دوی رزق راوړي له جنت نه په سحر او ماښام کې .

د جنت چيني

د نهرونو سره سره په جنت کې د جنتيانو د زياتو لذتونو او راحتونو لپاره چيني هم شته چې هرڅاڅکي يې د الله يو داسې نعمت دی چې د ټولې دنيا نعمتونه ورسره نشي برابرېدلي او ددې چينو ذکر په قرآن کریم کې په مختلفو ځايونو کې راغلی دی د مثال په ډول :

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ (45) .²

ترجمة : بېشکه ځان ساتونکي (له متابعت د ابليس نه) په جنتونو کې به وي او په چينو کې به وي .

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ (51) فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ (52) .³

ترجمة : بېشکه چې متقيان به په ځای د امن کې وي (له ټولو مکروهاتو) په جنتونو او چينو کې .

¹ رواه الامام احمد

² سورة الحجر آية ٥٤

³ سورة الدخان

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ (15) .¹

ترجمة : بېشکه وېرېدونکي له الله او ځان ساتونکي له معاصيو به په جنت کې وي او په چينو کې به وي يعني څښونکي د اوبو د دې چينو به وي .

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ (41)²

ترجمة : بېشکه هغه کسان چې ځانونه يې ساتلي له متابعت د شيطان نه په سيوري کې به وي او په چينو کې به وي (د جنت) .

فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ³ .

ترجمة : په دغه (جنت) کې چينه ده جاري بهېدونکي

1 سورة الذاريات
2 سورة المرسلات آية ٤١
3 سورة الغاشية آية ١٢

جنتي چينه عين الكافور

دا چينه هم په جنت کې ده او غوره ذائقه او غوره اوبه يې دي الله يې ذکر په قرآن کریم کې کړی دی فرمايي : إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا (5) عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عَبْدُ اللَّهِ يُفَجِّرُوهَا تَفْجِيرًا (6) .¹

ترجمة : بېشکه ابرار (نيکان) څښي (په جنت کې) له جامونو د شرابو څنې چې وي گډ له هغو سره (جنتي) کافور چينه چې څښي به له هغې څخه (نېک) بندگان د الله چې بيا ئې به (مؤمنان) دغې (چينې) لره (هر چېرته چې ئې خوښه وي بېول) وفا کوي (ابرار) په (هغه) نذر سره (چې ئې واجب کړی وي په طاعت د الله کې پر ځانونو خپلو باندې) او ويريري (ابرار) له هغې ورځې چې شر ئې ښکاره او تيت (څرگند) دی . او ځينې علماء فرمايي چې دا هم په جنت کې له يوې چينې څخه راوړي چې کافور ورته ويل کيږي او ددې بوی ډېر ښکلی دی او ښې اوبه دي او په دنيا کې هم چې کوم شي ته کافور ويل کيږي د ډېرو زياتو فايډو لرونکی شی دی .

جنتي چينه عين التسنيم

دا هم په جنت کې چينه ده الله فرمايي : إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ * عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ * تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ * يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْتُومٍ * خِتَامُهُ مِسْكٌ وَفِي ذَلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ * وَمِزَاجُهُ مِنَ التَّسْنِيمِ * عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ .²

ترجمة : بېشکه نیکان خامخا په نعيم لوی نعمت د (جنت) کې دي پر تختونو باندې ناست گوري (د الله لقاء او د جنت نعماء) (او ترې مزه به اخلي

¹ سورة الدهر (الانسان)

² سورة المطففين آية ۲۲-۲۸

يا به گوري دوزخيانو ته) پېژنې به ته (اې
 كتونكيه!) په مخونو د دوى كې تازگي د نعيم
 (تنعم د جنت) ور څښولى شي (هغوى ته) له خالصو
 شرابو مهر كړيو شويو څخه چې مهر به يې مشك وي
 او په دغو (شرابو او نورو جنتي نعمتونو)
 باندې پس بايد دي چې رغبت وكړي رغبت كوونكي
 (په كولو د نېكو عملونو او پرېښودلو د بدو
 عملونو) او گډون د هغه (شرابو دى له اوبو د)
 تسنيم څخه دا (تسنيم) يوه چينه ده (په جنت
 كې) چې څښي به له هغې څخه د (الله) مقربان .

جنتي چينه عين السلسبيل

دا په جنت كې بله چينه ده الله ددې ذكر كوي او
 فرمايي : **وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا * عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّى**
سَلْسَبِيلًا .¹

ترجمة : او ورڅښول كيږي به جنتيانو ته په جنت
 كې جامونه د شرابو چې وي به گډ له (پاكو
 شرابو د) هغه سره (لپاره د خوشبويي جنتي)
 زنجبيل چينه په دغه (جنت كې چې) نوم ئې
 اېښودلى شوى دى په سلسبيل سره (چې د حلقه
 اسانه لذيذه تيريږي) .

جنتي چينه عين زنجبيل

دا هم د جنتيانو خښاک دی الله فرمايي : **وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَتْ مِرْأَجُهَا زَنْجَبِيلًا** زنجبيل الله د جنت له نعمتونو څخه شمار کړی دی دا په دنيا کې هم ډېرې فايدي لري او په ډېرو دوا گانو کې گډيري او په مخکني طب کې زنجبيل ته دوا عظيم (لويه دوا) ويله کېده نو چې په دنيا کې داسې حيثيت لري دا به په جنت کې څنگه وي؟ الله دې د ټولو مسلمانانو قسمت پکې وکوي .

د جنت په ټولو د خښلو شيانو کې يو ډول خوند او لذت پروت دی چې نه پکې نشه شته او نه پکې داسې څه شته چې انسان داسې مست کړي چې بيا غير ارادي حرکتونه او خبرې ورڅخه کيږي بلکه د جنت په ټولو شيانو کې يو کيفيت به وي چې انسان ته به خوشحالي او تازگي ورکوي او نور څه د نشې په ډول اثرات به ورباندې نه ښکاره کيږي الله د زمونږ ټولو مسلمانانو قسمت پکې وکوي .

په جنت کې مارغان او حيوانات

په جنت کې به مارغان او نور حيوانات هم وي چې د هغې په اړه پوره علم هغه ذات لره دی چې پيدا کړي يې دي خو په ځينې ځايونو کې يې په قرآن کریم او احاديثو کې ذکر راغلی دی لکه الله چې فرمايي : **وَلَحِمٌ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ**.¹

ترجمة : او دوی ته به د مارغانو غوښه ورکول کيږي د کوم شي چې اشتها لري .

نو جنتيانو ته به د جنتي مارغانو غوښې ورکول

کيږي د کوم شي چې هغوی اشتها لري او خوراک يې کول غواړي .

همدارنگه رسول الله ﷺ چې د نهر کوثر په اړه خبرې کولې هلته يې هم مارغان ياد کړي وو حضرت انس بن مالک فرمايي له رسول الله ﷺ څخه پوښتنه وشوه چې دا کوثر څه شی دی؟ رسول الله ﷺ په ځواب کې ورته وفرمايل : ذاك نهر أعطانيه الله - يعني في الجنة - أشد بياضاً من اللبن، وأحلى من العسل، فيه طير أعناقها كأعناق الجزر .¹

ترجمة : دا يو نهر دی الله ماته راکړی دی يعني په جنت کې تر شودو زيات سپين او تر شاتو زيات خوښ دی په هغه کې مارغان دي چې داسې غاړې يې وي لکه د اوشانو .

په جنت کې به اوشانې هم وي حضرت عبد الله بن مسعود فرمايي : جاء رجل بناقة مخطومة، فقال: يا رسول الله هذه الناقة في سبيل الله. فقال: لك بها سبعمائة ناقة مخطومة في الجنة .²

ترجمة : يو کس رسول الله ﷺ ته راغلو يوه مهار کړل شوې اوښه يې ورته راوسته ورته يې وويل دا اوښه د الله په لاره کې ده رسول الله ﷺ ورته وفرمايل : ددې په بدل کې به الله تاته اوه سوه اوشانې درکړي ټولې به مهار کړل شوې وي په جنت کې .

په يو بل روايت کې دي : جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفِي الْجَنَّةِ حَيْلٌ فَإِنِّي أُحِبُّ الْحَيْلَ ؟ قَالَ : " إِنْ أَدَخَلَكَ اللَّهُ الْجَنَّةَ فَمَا تَشَاءُ أَنْ تَرْكَبَ فَرَسًا مِنْ يَأْقُوتَةٍ حُمْرَاءَ لَهَا جَنَاحَانِ تَطِيرُ بِكَ فِي الْجَنَّةِ حَيْثُ

¹ سنن الترمذي

² أخرجه أبو نعيم في الحلية

شَبَّتَ " فَقَالَ الْأَعْرَابِيُّ : يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفِي الْجَنَّةِ إِبِلٌ ؟ قَالَ : " يَا أَعْرَابِيُّ ، إِنَّ أَدْخَلَكَ اللَّهُ الْجَنَّةَ فَإِنَّ لَكَ فِيهَا مَا اسْتَهْتَنَفْتَ نَفْسُكَ وَلَأَدَّتْ عَيْنُكَ . ¹

ترجمة : يو کس رسول الله ﷺ ته راغلو رسول الله ﷺ ته یی وویل : یا رسول الله زما آسونه خویش دی په جنت کې آسونه شته ؟ رسول الله ﷺ ورته وویل : که ته الله جنت ته ننه ایستلې آیا ته نه غواړې چې په داسې آس باندې سپور شې چې د سرو یاقوتو څخه وي او دوه وزرونه ولري هغه ته آلوزوي په جنت کې هرچېرته چې ستا خوښه وي بیا یو کوچي ورته ویل یا رسول الله ﷺ په جنت کې اوشان شته ؟ رسول الله ﷺ ورته وویل : ای کوچیه که ته الله جنت ته ننه ایستلې هلته ستا لپاره هرهغه څه شته چې ستا ورته زړه کیږي او تاته خوند درکوي .

د جنت کورونه

قرآن کریم مونږ ته ددې خبر راکړی دی چې نېکان مؤمنان به جنت ته ځي او هلته به همېشه وي بیا یې مونږ ته دا هم ویلي چې جنت یوازې باغ او باغیچه نه ده چې گلونه میوې او ونې نهرونه به وي پکې بلکه هلته د جنتیانو لپاره بنگلې دي د اوسېدلو لپاره کورونه دي خیمې دي چې هلته به مؤمنان پکې اوسېږي د مثال په ډول الله په یو ځای کې فرمایي : وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (72) . ²

ترجمة : وعده کړېده الله له نارینه وو مؤمنانو او له ښځو مؤمناتو سره د جنتونو چې بهیږي له لاندې (د مانیو او ونو) د هغو (څلور قسمه)

¹ صفة الجنة لابن ابي الدنيا

² سورة التوبة

ويالې تل به وي دوی په دغو (جنتونو) کې او
 (وعدۀ کړې ده الله) د ځايونو پاكو (چې ثابت دي)
 په جنتونو د تل اوسېدلو كې او رضاء له (جانبه
 د) الله ډېره لويه ده (له جنتونو او نعمتونو او
 نورو څخه) دغه (رضاء د الله) هم دغه بری دی
 ډېر لوی.

دا كورونه چې الله په جنت كې جنتيانو ته جوړ
 كړي دي هغه مساكن طيبة دي چې ښه جوړ دي او
 هستوگنې لپاره ښكلي دي امام قرطبي ددې
 كورونو په اړه فرمايي: **إِنَّهَا قُصُورٌ مِنَ الزُّبُرِجِدِ وَالذُّرِّ**
وَالْيَاقُوتِ يَفُوحٌ طَيْبُهَا مِنْ مَسِيرَةِ خَمْسَمِائَةِ عَامٍ.¹

ترجمة: دا ښكلې دي د زبرجدو ملغلرو يا قوتو
 چې د هغې ښه بوی د پنځو سوو كلونو تر مسافې
 پورې خپريږي.

د جنتيانو کوټې

همدارنگه قرآن کریم فرمايي چې د جنتيانو لپاره به کوټې وي ځينې به لوړې او ځينې به ټيټې وي الله فرمايي : وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُقَرَّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفَى إِلَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضَّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرَفَاتِ آمِنُونَ (37) ¹

ترجمة: او نه دي دغه مالونه ستاسې او نه اولاد ستاسې داسې څيز چې نژدې کوي تاسې په نزد زمونږ نژدې کول مگر (نژدې کوي له تاسې) هر هغه څوک چې ايمان راوړي او کړي ئې وي ښه (عملونه) پس دغه (مؤمنان چې دي) شته دوی ته جزاء دوه چنده په سبب د هغه (نيکیو) چې کړي دي دوی او دوی به په مانيو (د جنت کې مطمئن) وي له هر آفته.

په بل ځای کې الله فرمايي : وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا يُجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نِعَمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ (58) . ²

ترجمة: او هغه (کسان) چې ايمان ئې راوړی دی او کړي ئې دي ښه (عملونه) خامخا ځای به ورکړو دوی ته له جنته په جگو مانيو کې چې بهیږي لاندې له (ونو او مانيو د) هغو ويالې (څلور) حال دا چې تل به اوسیري په دغو (مانيو کې) ښه دی اجر د دغو عمل کوونکو (دا جنت) .

د جنت کوټې چې د مؤمنانو لپاره تیارې کړل شوي دي د امن او سکون څخه به ډکې وي هلته به جنتيانو ته هېڅ قسم تکلیف نه وي نه به څه بيماري وي او نه به له کوم شي نه خطر او وېره

¹ سورة السبا

² سورة العنكبوت

وي او نه به خفگان او نه به فکرونه او غمونه
وي او نه به ددې خطر وي چې څوک به راشي دا
ټول عیبونه ددې دنیا په کوټو کې وي په بل ځای
کې الله ددې کوټو په اړه بیا فرمایي : لَکِنَ الَّذِینَ اتَّقَوْا
رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرْفٌ مَّبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَعَدَ اللَّهُ لَا
يُخْلِفُ اللَّهُ الْمِيعَادَ (20) .¹

ترجمة : لیکن هغه کسان چې ویریري له رب خپله
شته دوی ته مانې (په جنت کې) چې له پاسه د
هغې نورې مانې بنا کړل شوې دي چې بهیري لاندې
د مانیو (او ونو د هغې څلور قسمه) ویالې
(وعده کړېده) وعده کول د الله نه کوي مخالفت الله
له وعده خپلې .

آیه ښکاره کوي چې د جنتیانو لپاره به کوټې وي
هغه کوټې به په یوه لین نه وي جوړې ځینې به
لورې وي د نورو په سر به ور جوړې شوې وي لاندې
به ترېنه نهرونه بهیري .

حضرت جابر بن عبد الله فرمایي رسول الله ﷺ مونږ
ته فرمایي : أَلَا أُحَدِّثُكُمْ بِغُرَفِ الْجَنَّةِ ؟ ، قَالَ : قُلْتُ : بَلَى يَا رَسُولَ
اللَّهِ ، بِأَيِّبِنَا أَنْتَ وَأَمَّنَّا ، قَالَ : " إِنَّ فِي الْجَنَّةِ غُرَفًا مِنْ أَصْنَافِ الْجَنَّةِ كُلُّهَا يُرَى
ظَاهِرُهَا مِنْ بَاطِنِهَا وَبَاطِنُهَا مِنْ ظَاهِرِهَا ، فِيهَا مِنَ النَّعَمِ وَالْمَلَدَاتِ وَالشَّرَفِ مَا
لَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ ، وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ " ، قَالَ : قُلْتُ : يَا
رَسُولَ اللَّهِ ، وَلِمَنْ هَذِهِ الْغُرَفُ ؟ قَالَ : " لِمَنْ أَفْشَى السَّلَامُ ، وَأَطْعَمَ الطَّعَامَ ،
وَأَدَامَ الصِّيَامَ ، وَصَلَّى بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ " ، قَالَ : قُلْتُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ ، وَمَنْ
يُطَبِّقُ ذَلِكَ ؟ قَالَ : " أَمَّتِي تُطَبِّقُ ذَلِكَ ، وَسَأُخْبِرُكَ عَنْ ذَلِكَ : مَنْ لَقِيَ أَخَاهُ فَسَلَّمَ
عَلَيْهِ أَوْ رَدَّ عَلَيْهِ فَقَدْ أَفْشَى السَّلَامَ ، وَمَنْ أَطْعَمَ أَهْلَهُ وَعِيَالَهُ مِنَ الطَّعَامِ حَتَّى
أَشْبَعَهُمْ فَقَدْ أَطْعَمَ الطَّعَامَ ، وَمَنْ صَامَ شَهْرَ رَمَضَانَ وَمِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فَقَدْ
أَدَامَ الصِّيَامَ ، وَمَنْ صَلَّى الْعِشَاءَ الْآخِرَةَ وَصَلَاةَ الْعَدَاةِ فِي جَمَاعَةٍ فَقَدْ صَلَّى
بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ "

ترجمة : زه تاسې ته د جنت د کوټو خبرې ونه کوم؟ دی فرمایي ما ورته وویل هو راته یې وکوه یارسول الله ﷺ زمونږ مور او پلار تانه زار شه رسول الله ﷺ وفرمایل : بېشکه په جنت کې کوټې دي د جنت له قسم نه د ټولو د ننه د بهر نه او بهر یې د ننه څخه ښکاره کیږي په هغه کې نعمتونه او لذتونه دي او عزت دی چې نه سترگو لیدلی نه غوړونو آوړېدلی او نه د کوم انسان په زړه کې ورتاو شوی دی فرمایي ما ورته وویل : یا رسول الله ﷺ دا کوټې د چا لپاره دي؟ رسول الله ﷺ وفرمایل : د هغه چا لپاره دي چې سلام خپور کړي ، خلکو ته طعان ورکړي ، همېشه روژې نیسي او د شپې په داسې حالت کې مونځ کوي چې خلک ویده وي ما ورته وویل : یا رسول الله ﷺ دا د چا په وس پوره ده؟ رسول الله ﷺ وویل : زما د امت په وس پوره ده او زه به ددې خبر درکړم هغه څوک چې د بل ورور سره مخامخ شي په هغه سلام واچوي او یا د هغه د سلام ځواب ورکړي نو ده سلام خپور کړو هغه څوک چې خپل اهل او اولاد ته طعام ورکړي ترڅو هغوی ماره شي دې کس طعام ورکړو هغه څوک چې د رمضان روژه ونیسي او د هرې میاشتې درې ورځې روژه ونیسي دې کس همېشه روژه ونیوله هغه څوک چې د ماسخوتن او سحر مونځ په جمع وکوي دې کس ټوله شپه مونځ پداسې حالت کې وکولو چې خلک ویده وو .

د جنتيانو خيمې

د کوټو او بنگلو او تعمیرونو سره سره د جنتیانو به خیمې هم وي ځینې خلک داسې وي په خاصه توګه عرب چې په خیمه کې ژوند ورته ډېر ښه ښکاره کیږي او په اوس وخت کې چې عرب زیات مالدار دي کله کله ځي په دښته کې خیمه وهي او د خپل وخت نه هلته مزه اخلي نو د هغه کسانو لپاره چې د خیمې ژوند یې خوښیږي الله په جنت کې خیمې هم پیدا کړي دي البته هغه خیمې د دنیا د خیمو سره تش په نوم کې شریکې دي دا خیمې چې د رخت نه جوړې په ډانګیو او په پریو باندې ولاړې وي هغه خیمې به داسې نه وي هغه به د ملغلرې نه جوړه وي ټوله خیمه به یوه ملغلره وي مینځ به یې خالي وي دا به د جنتي خیمه وي لږ وروسته پدې اړه حدیث راځي ان شاء الله د جنت د خیمو ذکر په قرآن کریم کې هم شوی دی الله فرمایي: **حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ (72)**.¹

ترجمة: حورې به وي پټې کړل شوې په خیمو کې.

حضرت ابو سعید الخدري فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي: **إِنَّ لِلْمُؤْمِنِ فِي الْجَنَّةِ لَخِيْمَةً مِّنْ لُّؤْلُؤَةٍ وَاحِدَةٍ مَّجْوَفَةٍ طُولُهَا سِتُّونَ مِيلًا لِلْمُؤْمِنِ فِيهَا أَهْلُونَ يَطُوفُ عَلَيْهِمُ الْمُؤْمِنُونَ فَلَا يَرَى بَعْضُهُمْ بَعْضًا**.²

ترجمة: بېشکه د مؤمن لپاره په جنت کې یوه خیمه وي چې یوه ملغلره به وي چې مینځ یې خالي وي اوږدوالی یې شپېته میله وي د مؤمن لپاره په هغه کې اهل وي دی به هغوی ته ورځي هلته به یو بل نه سره ويني (یعنې سره ددې چې پدې لویه خیمه کې به رڼا وي لکن بیا به هم دا مؤمن نه

¹ سورة رحمن

² صحيح مسلم

ښکاره کيږي چې هغه اهل ته ورشي څنگه ورځي او
داسې نور)

په بل حديث کې الفاظ لږ بدل دي رسول الله ﷺ
فرمايي : **إِنْ فِي الْجَنَّةِ خِيْمَةٌ مِنْ لَوْلُؤَةٍ مَجُوفَةٍ عَرْضُهَا سِتُونَ مِثْلًا فِي كُلِّ**
زَاوِيَةٍ مِنْهَا أَهْلٌ مَا يَرُونَ الْآخِرِينَ يَطُوفُ عَلَيْهِمُ الْمُؤْمِنُونَ .¹

ترجمة : بېشکه په جنت کې يوه خيمه ده له
ملغلرې چې مينځ يې خالي دی پلنوالی يې شپېته
ميله دی په هر کونج کې يې اهل وي چې دا بل
اهل ورته نه ښکاره کيږي مؤمن به هلته ورځي .

په پورتنیو احاديثو کې ښکاره شوه چې رسول الله
ﷺ فرمايل : د جنت خيمه به د رختونو اويا د
اوشانو له وړيو څخه نه وي جوړه شوې بلکه د
قيمتي ملغلرې نه به جوړه وي چې نه به يې په
پري تړلو ته ضرورت کيږي او نه به يې په مينځ
کې ورته د ډانگ درولو اړتيا وي او نه به ددې
وېره وي چې اوبه به ترې را تويې شي او نه به
ددې غم وي چې را وبه غورځيږي .

د جنت فرشونه او تختونه

د جنتيانو کورونه به په ورېښمو باندې فرش کړل
شوي وي تختونه به پکې ايښي وي جنتي به په هغه
تخت باندې کيني او تکیه به کوي مخې ته به يې
نعمتونه ايښي وي ددې حالت ذکر الله مونږ ته
داسې کوي : **فِيهَا سُرُرٌ مَرْفُوعَةٌ (13) وَأَكْوَابٌ مَوْضُوعَةٌ (14) وَنَمَارِقُ**
مَصْصُوفَةٌ (15) وَزَرَائِبُ مَبْنُوتَةٌ (16) .²

ترجمة : په دغه (جنت) کې دي تختونه (د پاره د
کېناستلو د جنتيانو) لور عاليشان او جامونه

اېښودلي شوي (په اندازه د څښونكيو خپلو) بالښتونه اېښود شوي په درجه څنگ په څنگ (جنتيانو ته) او فرشونه فاخره غوړول شوي.

په بل ځای کې الله فرمايي : **أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نَبِيعٌ مُنْقَلَبٌ**.¹

ترجمة : دغه (مؤمنان چې دي) شته دوی ته (هسې) جنتونه د تل هستوگنې چې بهیري له لاندې (د ونو او مانیو) د دوی (څلور قسمه) ویالې په لاس به کاوه شي دوی ته په دغه جنت کې وشي له سرو زرو (څو وښوولی شي چې اصلي او دائمی دولتمن او باثروته سړی دی؟) او آغوندي به دغه (جنتیان) جامې زرغونې له نریو ورېښمو او له پرېرو (غټو) ورېښمو تکیه کوونکي به وي په دغو جنتونو کې پر تختونو باندې څومره ښه بدل دی (دا جنتونه او نعمتونه) او څومره ښه دي (دا جنتونه او نعمتونه) ځای د آرام.

مُتَّكِئِينَ عَلَى فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ.²

ترجمة : (جنتیان به) تکیه کوونکي وي په هسې فرشونو باندې چې استرونه د هغو به له ورېښمو کلکو څخه وي .

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَلٍّ إِخْوَانًا عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ.³

ترجمة : او وبه باسو (لرې به کړو) هر هغه چې په زړونو د دغو (جنتیانو) کې دي له کینې څخه حال دا چې (لکه) ورونه به وي سره ناست به وي پر تختونو مخامخ یو بل ته .

¹ سورة كهف آية ٣١

² سورة رحمن آية ٥٤

³ سورة الحجر آية ٤٧

مُتَكِّينَ عَلَى سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ.¹

ترجمة : (جنتیان به) تکیه کوونکي وي په تختونو باندې چې صف صف به کېښودل شوي وي او مونږ به دوی ته په نکاح کړو حورې غټ سترگې ښائسته .

عَلَى سُرُرٍ مَوْضُونَةٍ * مُتَكِّينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ .²

ترجمة : چې تکیه وهونکي به وي (جنتیان) په هغو (تختونو) باندې مخامخ کېناستونکي یو بل ته .

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَكُونُونَ (56) لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدْعُونَ (57).³

ترجمة : دغه (جنتیان) او ښځې د دوی به په سیوریو کې (ناست وي) پر تختونو باندې تکیه وهونکي به وي وي به دوی ته په دغه جنت کې (انواع د) مېوو او وي به دوی ته هر هغه شی چې غواړي ئې دوی (او آرزو ئې کوي) .

د جنت لوبښي

په جنت کې به جنتیان لوبښي هم کاروي په هغه کې به نعمتونه خوري او په هغې کې به ورته نعمتونه ډول ډول څښاک او خوراک کېښودل کیږي خو هغه لوبښي به هم د دنیا له لوبښو څخه ډېر بدل وي هغه به ټول د سرو او سپینو زرو او صافي شیشې وي الله یې په یو ځای کې صفت کړی دی چې په هغې کې څه وي نفسونه به هغه غواړي الله په مختلفو ځایونو کې د هغه لوبښو ذکر کړی دی

¹ سورة الطور آية ۲۰

² سورة الواقعة آية ۱۵-۱۶

³ سورة يس

چې په جنت کې وي الله فرمايي : يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ .¹

ترجمة : گرځولی کيږي به (د غلمانو له خوا) پر دغو جنتیانو کاسې ګلاسونه له سرو زرو څخه او (طلايي) صراحی ګانې او (وي به دوی ته) په دغه (جنت) کې هغه شیان چې خواش کوي د هغوی نفسونه (د دوی) او چې خوند اخلي سترګې (د دوی ترې) او (ویل کيږي به دوی ته) تاسې به پدې جنت کې همېشه وئ .

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِآيَةٍ مِنْ فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرًا قَوَارِيرَ مِنْ فِضَّةٍ قَدَرُوهَا تَقْدِيرًا .²

ترجمة : او گرځولی به شي پر دغو نېکانو باندې (په دغه جنت کې) جامونه له سپینو زرو او ګلاسونه صراحی چې وي به (دغه ظروف) په شان د شیشو هسې شیشې چې له سپینو زرو به وي (صاف به وي د شیشو په شان چې ظاهر به یې له باطن او باطن به یې له ظاهره ښکاره کيږي) په اندازه کړي به وي هغه (جامونه ساقیانو د جنت جنتیانو ته) اندازه کول .

يُطُوفُ عَلَيْهِمْ وَلَدَانٌ مُخَلَّدُونَ بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ .³

ترجمة : گرځي به په دوی باندې (د پاره د خدمت) هلکان تل پاتي کېدونکي (په هلکوالي سره) په ګلاسونو او په کوزو سره او په کاسو لوښو سره له صافو پاکو شرابو.

حضرت ابي موسی فرمایي رسول الله ﷺ په یو حدیث کې چې د جنت ذکر یې پکې کاوه فرمایل : «جَنَّاتٍ

¹ سورة الزخرف آية ۷۱

² سورة الدھر (الانسان) آية ۱۵-۱۶

³ سورة الواقعة آية ۱۷-۱۸

مِنْ فَضَّةٍ، آيْنَتْهُمَا وَمَا فِيهِمَا، وَجَنَّتَانِ مِنْ ذَهَبٍ آيْنَتْهُمَا وَمَا فِيهِمَا (دوه جنتونه به د سپينو زرو وي لوشي او هرڅه چې په هغې کې وي او دوه جنتونه به د سرو زرو وي لوشي او هرڅه چې په هغه کې وي) .

حضرت حذيفة بن اليمان فرمايي ما له رسول الله ﷺ څخه واورېدل چې هغه فرمايل : لَا تَلْبَسُوا الْحَرِيرَ وَلَا الدِّيْبَاجَ، وَلَا تَشْرَبُوا فِي آيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَلَا تَأْكُلُوا فِي صِحَافِهَا، فَإِنَّهَا لَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَنَا فِي الْآخِرَةِ ¹ .

ترجمة : ورېښم او ديباج (په ورېښمو کې يو خاص قسم دی) مه آغوندئ ، د سرو او سپينو زرو په لوشو کې څښاک مه کوئ او د هغې په کاسو کې خوراک مه کوئ ځکه دا شيان د کفارو لپاره دي پدې دنيا کې او زمونږ د پاره دي په آخرت کې .

د جنت جامي

په جنت کې به جنتيان بهترينې قيمتي جامي آغوندي قسم قسم قيمتي ورېښم او نور شيان به په خپلو جامې کې استعمالوي چې په دنيا کې يې چا د ساري تصور هم نه وي کړی او په خپلو جامو کې به د خپل اصلي قيمت او اصالت د پاسه ډول ډول ملغلرې او حليات لگوي چې نورې به هم ورسره ښائسته کيږي الله په قرآن کریم کې د جنتيانو د جامو ذکر کړی دی په يو ځای کې فرمايي : أُولَئِكَ لَهُمْ جَنَّاتٌ عَدْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نِعَمَ الثَّوَابِ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ² .

ترجمة : دغه (مؤمنان چې دي) شته دوی ته (هسې)

¹ متفق عليه

² سورة الكهف آية ٣١

جنتونه د تل هستوگنې چې بهیري له لاندې (د ونو او مانیو) د دوی (خلور قسمه) ویالې په لاس به کاوه شي دوی ته په دغه جنت کې وښي له سرو زرو (خو وښوولی شي چې اصلي او دائمي دولتمن او باثروته سړی دی؟) او آغوندي به دغه (جنتیان) جامې زرغونې له نریو ورېښمو او له پرېرو (غټو) ورېښمو تکیه کوونکي به وي په دغو جنتونو کې پر تختونو باندې خومره ښه بدل دی (دا جنتونه او نعمتونه) او خومره ښه دي (دا جنتونه او نعمتونه) ځای د آرام.

مُنْكَيْنٍ عَلَى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ .¹

ترجمة : تکیه کوونکي به وي دوی پر البشتونو شین رنگو باندې او په فرشونو عمده وو ښائسته وو باندې .

عَالِيَهُمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٌ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُوا أَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا .²

ترجمة : د پاسه پر دوی باندې به کالي (جامې) د نریو ورېښمو وي چې شنه به وي او د پرېرو (غټو) ورېښمو نه او وابه غوښته شي (دوی ته) باهو گان له سپینو زرو او ور وبه څښي دغو (جنتیانو ته) رب د دوی شراب طهور (څښاک ښه پاکیزه) .

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا³

ترجمة : او جزا به ورکړي دوی ته (الله) په سبب د صبر د دوی (ټول نعماء د) جنت او (جامې) ورېښمینی.

1 سورة الرحمن آية ٧٦

2 سورة الدهر (الانسان) آية ٢١

3 سورة الدهر (الانسان) آية ١٢

يُحْلَوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ¹ .

ترجمة : گانه (زېورات) به واچول شي (جنتيانو ته) په دغه (جنت) کې له با هو گانو (وښيو) له سرو زرو او له ملغلرو ځنې او جامې د دغو (جنتيانو) به په دغه (جنت) کې ورېښمينې وي .

جَنَاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ² .

ترجمة : جنتونه د هستوگنې دې ننوزي به (مؤمنان) په هغو کې گانه دار کولی به شي په دغه (جنت) کې له باهو گانو (وښيو) څخه له سرو زرو (خالصو) او له ملغلرو (صافو) او جامې د دوی په دغه (جنت) کې د ورېښمو (مخصوصو) به وي .

حضرت براء بن عازب فرمايي : أتى الرسول - صلى الله عليه وسلم - بثوب من حرير، فجعلوا يعجبون من حسنه ولينه، فقال رسول الله - صلى الله عليه وسلم - : لمناديل سعد بن معاذ في الجنة أفضل من هذا³ .

ترجمة : رسول الله ﷺ ته د ورېښمو يوه جامه راوړل شوه صحابه ورته حيران وو د هغې ښائست او د هغې نرم والي ته رسول الله ﷺ وفرمايل : بېشکه د سعد بن معاذ دستمالونه په جنت کې ددېنه غوره دي .

د جنتيانو په جامو کې به يو تاج هم وي چې په سر به يې اېږدي په يو حديث کې چې رسول الله ﷺ د شهيد په اړه خبرې کولې د شهيد لپاره يې خاصيتونه بيانول يو يې دا هم وويل : ويوضع على

¹ سورة الحج آية ۲۳

² سورة فاطر آية ۳۳

³ صحيح البخاري

رأسه تاج الوقار، الياقوتة منه خير من الدنيا وما فيها .¹

ترجمة : او په سر به ورته يو د عزت تاج كېښودل شي چې په هغه كې به يو ياقوت د ټولي دنيا او هغه څه نه غوره وي چې په دنيا كې دي .

او په جنت كې د جنتيانو جامې به هم داسې جامې نه وي چې د وخت تېرېدلو سره زړې شي او كه جنتي نور جامې استعمالول غواړي نو هغه به صرف د شوق لپاره كني د جنتيانو جامې نه زړيري رسول الله ﷺ فرمايي : **من يدخل الجنة ينعم لا يبأس، لا تبلى ثيابه، ولا يفنى شبابه** .²

ترجمة : څوك چې جنت ته ننوزي هغه نه خفه كيږي ، نه يې جامې زړيري او نه يې ځواني ختميږي .

د جنت د جامو رنگ

په اكثر ځايونو كې چې د جنتيانو د جامو د رنگ ذكر راغلی دی نو هلته ورسره دا هم ياد كړل شوي دي چې د جنتيانو جامې به په شنه رنگ كې وي لكه مخكې تېر شو الله فرمايل : **عَالِيَهُمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُوا أَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا** .³

ترجمة : د پاسه پر دوی باندې به كالي (جامې) د نړيو ورېښمو وي چې شنه به وي او د پرېرو (غټو) ورېښمو نه او وابه غوښته شي (دوی ته) باهو گان له سپينو زرو او ور وبه څښي دغو (جنتيانو ته) رب د دوی شراب طهور (څښاك ښه پاكيزه) .

¹ سنن الترمذي او ابن ماجه

² صحيح مسلم

³ سورة الدهر (الانسان) آية ٢١

وَيَلْبِسُونَ ثِيَابًا خَضْرَاءَ مِّنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَكِينِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرْائِكِ نِعَمَ الثَّوَابِ
وَحَسَنَتٌ مُّرْتَقَاً¹ .

ترجمة : او آغوندي به دغه (جنتيان) جامي زرغوني له نريو وربشمو او له پرېرو (غتو) وربشمو تكيه كوونكي به وي په دغو جنتونو كي پر تختونو باندې خومره ښه بدل دی (دا جنتونه او نعمتونه) او خومره ښه دي (دا جنتونه او نعمتونه) ځای د آرام .

ولي شين رنگ؟

پدې اړه علماوو ډېرې څيړنې كړي دي چې د جنتيانو لپاره په ټولو رنگونو كې د جامي لپاره په متعددو ځايونو كې شين رنگ ولي ياد كړل شوی دی پدې اړه چې زما يوه څېړنه خوښه شوېده هغه لتاسي سره شريكوم هغه څېړنه وايي چې د رنگونو لپاره صرف ظاهري بڼه چې له بل نه مختلف ښكاره كيږي نه ده بلكه دا رنگونه هر يو بېل او ځانگړی تاثير هم لري يو وخت داسې وو چې په پخوانيو چينايانو كې چې علم الطب ډېره مخه كړې وه هغوی به ځينې بيماران په خاص رنگ كوټه كې بستر كول او د هماغه رنگ جامې به يې ورته كولې او پدې كې د دوی راز دا وو چې دوی ويل رنگونه په بيماريو باندې تاثير كوي په اوس وخت كې چې علم مخكې لاړو نو د هغه مخكنيو چينايانو په نظريه باندې تجربې وشوې او د تجربې په دوران كې به يو بيمار په يوه داسې كوټه كې كينول شو چې هلته به هرشی په يو رنگ وو او د بيمار جامې به يې هم له هغه رنگه وركړې وروسته به يې معاینات ورته وكول او نتيجه به يې ترې را واخيسته د ټولو نتيجو په آخر كې دا خبره ښكاره شوه شين رنگ داسې يو رنگ دی چې ډېرې بكترياوې له مينځه وړي او د

متعددو بیماریو په ښه کېدلو کې مرسته کولی شي او دا له یو کس نه د ستړیا تاثیر کمولی شي نو هغه څوک چې دې رنگ ته گوري پدې سره د هغه په زړه کې سکون او یو ډول خوشحالي محسوس کیږي چې دا کمال په بل رنگ کې نشته او ددې تجربو نه خلک پدې هم پوه شول چې فرعونیانو به کله خپل مړي د ډېر وخت لپاره ساتل غوښتل نو هغه به یې په شنه رنگ کې ساتل ځکه ددې رنگ سره مکروب ډېر وخت نشي تېرولی نو ددې څېړنو په نتیجه کې اوس علماء دې نتیجې ته رسېدلي دي چې یوازینی رنگ چې استعمال کونکي ته خوشحالي او د ښه راحت احساس ورکوي هغه شین رنگ دی .

په جنت کې اول جامه

لکه مخکې تېر شول چې د محشر لپاره به خلک له خپلو قبرونو څخه لوڅ داسې را پورته شي لکه څنګه چې له مورانو څخه را پیدا شوي وو چې په ځان به یې هېڅ هم نه وي او نه به سنت شوي وي بلکه په اصلي او اولي حالت به را پورته کیږي کله چې د جنتیانو او دوزخیانو په مینځ کې فیصله وشي نو جنتیان چې جنت ته لار شي بېرته به د زینت او ښائست جامې واغوندي او ټول به بېرته پټ شي پدې جنتیانو کې به تر ټولو وړاندې جامه حضرت ابراهیم ته ور آغوستله کیږي حضرت ابن عباس فرمایي رسول الله ﷺ مونږ ته خطبه ویله ویې فرمایل : **إِنَّكُمْ مَحْشُورُونَ خُفَاءَ عُرَاءَ غُرْلًا: (کَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ)، وَإِنَّ أَوَّلَ الْخَلْقِ يُكْسَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِبْرَاهِيمَ، وَإِنَّهُ سَيَجَاءُ بِرِجَالٍ مِنْ أُمَّتِي فَيُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشَّمَالِ، فَأَقُولُ: يَا رَبِّ أَصْحَابِي، فَيَقُولُ: إِنَّكَ لَا تُدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ، فَأَقُولُ كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ: (وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ) إِلَى قَوْلِهِ: (الْحَكِيمُ) قَالَ: فَيَقَالُ: إِنَّهُمْ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ¹.**

ترجمة : تاسې به حشر ته را پاخول شئ لوڅې پېښې نا سنته (الله فرمايي لکه څنگه مو چې اول پيدا کړي وو هماغسې به يې بيا را وگرځوو) او په ټولو مخلوقاتو کې چې اول جامه ور آغوستله کيږي هغه به حضرت ابراهيم وي بېشکه زما د امت نه به څه کسان راوستل شي هغه به ذات الشمال (هغه فرښتې چې د بد عمل لرونکي کسان کش کوي) بوزي زه به وایم اې زما ربه زما ملګري؟ الله به راته ووايي چې ته نه يې خبر چې دوی ستا نه وروسته څه کړي وو؟ زه به ورته ووايم لکه عبد الصالح (حضرت عیسی) چې ویل (او زه وم په هغوی باندې گواه ترڅو چې زه پکې وم) په نوموړي آیت کې تر (الحکیم) پورې بيا به وویل شي چې هغه ستا نه وروسته بېرته مړتد شوي وو .

د جنت خادمان

الله به په جنت کې جنتیانو ته خادمان ورکړي هغه به د دوی خدمت کوي داسې خادمان به وي چې ډېر ښائسته به وي ، په سترگو به ښکلي ښکاره کيږي او نوي هلکان به وي الله د هغو خادمانو ذکر په قرآن کریم کې کړی دی فرمایي : **يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وَلَدَانٌ مُّخَلَّدُونَ بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ** ¹ .

ترجمة : گرځي به په دوی باندې (د پاره د خدمت) هلکان تل پاتې کېدونکي (په هلکوالي سره) په گلاسونو او په کوزو سره او په کاسو لوښيو سره له صافو پاکو شرابو بهېدونکيو څخه .

په بل ځای کې فرمایي : **وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وَلَدَانٌ مُّخَلَّدُونَ إِذَا**

رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا .¹

ترجمة : او گرځي پر دغو جنتيانو باندې هلکان تل پاتې شوي (پخپل حال د ځواني باندې) کله چې وويني ته دوی گڼې به هغوی (په صفایي کې) لکه ملغلرې خورې شوې.

امام ابن کثیر فرمایي يعني چې کله ته دوی وويني چې د خپلو سيدانو په خدمت کې خپاره وي او مخونه يې له ډېره شائست نه رڼا کوي او ځليږي نو تاته به لکه خپرې ملغلرې داسې ښکاره شي .

خو دا خادمان به له کومه کيږي پدې اړه د علماوو مختلف اقوال دي :

ځيني علماء فرمایي دا هغه د مسلمانانو ماشومان دي چې په ماشومتوب کې په حق رسېدلې وي خو علماء فرمایي دا قول ډېر ضعيف دی ځکه ځيني داسې مؤمنان هم وي چې د هغوی بالکل اولاد نه وي نو که د بل مؤمن اولاد دده لپاره خادم گرځول کيږي نو دا خو ددې ماشوم د پلار د پاره چې هغه به هم مؤمن وي او په جنت کې به وي څه ښه خبره نه ده ځيني فرمایي چې دا د کفارو اولاد دی چې تر بلوغ وړاندې په حق رسېدلی وي دا قول له اول نه ښه دی خو صحيح مذهب چې د محققانو علماء رایه ده هغه دادی چې دا به الله په جنت کې د مؤمنانو د خدمت لپاره پيدا کړي لکه څنگه يې چې ورته حورې او داسې دا ټول نعمتونه پيدا کړي دي .

د جنت مجلسونه

جنتيان به په جنت کې سره ټوليري او يو له بل

سره په کيني خبرې او مجلسونه به کوي او هغه څه به هم يادوي چې د دوی په مينځ کې په دنيا کې شوي وو او يو د بل ملاقات ته به ورځي يو د بل سره به مينه کوي او د يو بل لپاره به په زړونو کې هېڅ ډول کرکه او خیري نه لري ټول به لکه خواږه ورونه داسې سره چليږي
 فرمايي: وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غَلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ .¹

ترجمة: او وبه باسو (لري به کړو) هر هغه چې په زړونو د دغو (جنتيانو) کې دي له کيني څخه حال دا چې (لکه) ورونه به وي سره ناست به وي پر تختونو مخامخ يو بل ته .

جنتيان به څنگه خبرې به کوي؟

الله فرمايي: وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ .²

ترجمة: او مخ به کړي ځيني د دوی ځينو نورو نه چې پوښتنې به سره کوي (له دنيوي مشقتونو څخه تشکراً) وبه وايي دوی چې بېشکه مونږ رومبني له دې نه وو په اهل خپل کې وپرېدونکي (له عذابو نه) نو احسان وکړ الله پر مونږ باندې او وي ساتلو مونږ له عذاب د تودوخي گرمي (د دوزخ) بېشکه مونږ وو پخوا له دې څخه (په دنيا کې) چې عبادت به مو کاوه د دغه (الله) بېشکه چې دغه (الله) هم دی دی ډېر ښه احسان کوونکی ډېر رحم لرونکی .

جنتيان به يو له بل سره په خبرو کې شکر وباسي چې له هغه کسانو څخه نه دي چې هغوی

¹ سورة الحجر آية ٤٧

² سورة الطور آية ٢٥-٢٧

جهنم ته تللي دي او دا به په ځانونو باندې د الله فضل گڼي الله فرمايي : فَأَقْبَلْ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ قَالُ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ يَقُولُ أَأَنَّكَ لَمِنَ الْمُصْذِقِينَ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَأَنَّا لَمَدِينُونَ قَال هَلْ أَنْتُمْ مُّطْلَعُونَ فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ قَالَ تَاللَّهِ إِن كِدْتَ لَتُرْدِينَ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ إِلَّا مَوْتَتْنَا الْأُولَى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ لِمَثَلٍ هَذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ .¹

ترجمة : پس مخ به وگرځوي ځينې د جنتيانو پر ځينو نورو جنتيانو چې پوښتنه به سره کوي يو له بله (له احواله د دنيا) نو وبه وايي يو ويونکی له دوی نه چې بېشکه زه چې وم وو ما لره يو ملگری (منکر له بعثه) چې ويل يې (ماته) آيا بېشکه ته چې ئې له باور کوونکیو ئې (په بعث بعد الموت) آيا هرکله چې مړه شو مونږ او شو مونږ خاورې او هډوکي آيا بېشکه مونږ ته به خامخا جزاء راکړه شي بيا وايي آيا يئ تاسې کتونکي (په دوزخ کې چې د هغه منکر حال در ښکاره شي) پس وبه گوري (دغه قائل) پس وبه وينې هغه (منکر ملگری) په مينځ د دوزخ کې وبه وايي (قائل منکر ته د ملامتيا د پاره) قسم دی په الله چې نېږدې وې ته چې په کنده د دوزخ کې مې وغورځوي او که نه وی انعام د رب زما خامخا وم به زه له حاضر کړيو شويو (دوزخ ته سره له تا) آيا پس نه يو مونږ (جنتيان) مړه کېدونکي (بلکه نه يو) مگر همغه مرگ زمونږ رومبني (په دنيا کې) او نه يو مونږ په عذاب کړل شوي بېشکه چې دغه (ابدي خوندور حيات) خامخا هم دغه په مراد رسېدل بری ډېر لوی دی خاص د پاره د مثل د دي (نعمتونو) پس ښايي چې عمل وکړي عمل کوونکی (نه د پاره د جاه او مال د دنيا چې فاني دي) .

د جنتيانو ارمانونه

جنتيان به په جنت كې هم كله كله عجيب ارمانونه كوي او چې څنگه ارمان كوي الله به يې ورته پوره كوي لكه په يو حديث كې چې راغلي دي چې يو جنتي به ددې ارمان وكوي چې دده زمكه واى او ده پكې كړونده كړې واى حضرت ابو هريره فرمايي رسول الله ﷺ پداسې حالت كې ويل چې يو كوچى ورسره ناست وو : **إِنَّ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ اسْتَأْذَنَ رَبَّهُ فِي الزَّرْعِ، فَقَالَ لَهُ: أَلَسْتَ فِيمَا شِئْتَ؟ قَالَ: بَلَى، وَلَكِنْ أَحَبُّ الزَّرْعِ، فَبَذَرَ، فَبَادَرِ الطَّرْفِ نَبَاتَهُ. وَاسْتَوَاهُ، وَاسْتَحْصَاهُ، فَكَانَ أَمْثَالَ الْجِبَالِ، فَيَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: دُونَكَ يَا ابْنَ آدَمَ، فَإِنَّهُ لَا يَشْبَعُكَ شَيْءٌ فَقَالَ الْأَعْرَابِيُّ: وَاللَّهِ لَا تَجِدُهُ إِلَّا قَرَشِيًّا أَوْ أَنْصَارِيًّا، فَإِنَّهُمْ أَصْحَابُ الزَّرْعِ، وَأَمَّا نَحْنُ فَلَسْنَا بِأَصْحَابِ زَرْعٍ، فَضَحَكَ رَسُولُ اللَّهِ - صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.**¹

ترجمة : يو كس به د جنتيانو څخه اجازه وغواړي له رب خپل نه په كړهنه كې الله به ورته ووايي ولې لتا سره چې څه شي دي هغه ستا خوښ نه دي بنده به ورته وايي هو ربه لكه زما خوښيږي كړهنه تخم به وشيندي لږ ساعت پس به را شنه شي ، لوى به شي ، او د هغې لوبه وشي لكه غرونه داسې حاصل به ورڅخه را ووزي الله به ورته وايي د آدم زويه پرې يې ږده هيڅ شي به تا مور نه كړي پدې وخت كې كوچي وويل : **وَاللَّهِ دَا كَسَ بِهِ يَا قَرِيشِي وَيَا أَوْ يَا بَهْ أَنْصَارِي وَيَا دَا كَرِهْنِي د همدوى خوښې وي او مونږ د كرلو واله نه يو رسول الله ﷺ ورته وخنډل .**

جنتي كه په جنت كې ارمان وكوي چې دده ماشوم وي نو هلته به هم الله ورته ماشوم وركړي حضرت ابي سعيد څخه روايت دى هغه فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : **الْمُؤْمِنُ إِذَا اشْتَهَى الْوَلَدَ فِي الْجَنَّةِ، كَانَ حَمْلُهُ وَوَضَعُهُ**

وسنه في ساعة واحدة كما يشتهي .¹

ترجمة : كله چې د مؤمن په جنت کې ماشوم ته زړه وشي نو د هغه حمل د هغه پيدا كيدل او لوئېدل به په يوه ساعت کې وي څنگه چې دده ورته زړه كيږي .

يعني په جنت کې که جنتي د څه ارمان کوي هغه به ورکول كيږي او پدې کې به د جنتي ددې ضرورت نه كيږي چې دی ورته انتظار وکوي هرشی به ورته بغير د تکليف نه كيږي او په هېڅ شي کې به دده ضرورت نه كيږي چې دی ورته انتظار وکوي .

د جنت حوري

الله به په جنت کې مؤمنانو ته بيبياني ورکړي او هغه به داسې ښځې نه وي لکه په دنيا کې چې وي هغه به په ډېرو داسې ښکلا گانو باندې ښکلي وي چې په دنيا کې يې څوک تصور هم نشي کولی او په عربي ژبه کې حور د حوراء جمع ده هغه ښځې ته ويل كيږي چې د سترگو سپين يې ډېر سپين او تور يې ډېر تور وي صفتونه به يې وروسته راشي الله فرمايي چې جنتيانو ته به په جنت کې حوري ورکول كيږي فرمايي : **كَذَلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ**.²

ترجمة : همدارنگه مونږ به جنتيانو ته ورکړو غټ سترگې ښائسته حوري .

په بل ځای کې فرمايي : **إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا**.³

ترجمة : بېشکه خاص متقيانو ته (په آخرت کې)

¹ رواه الامام احمد

² سورة الدخان آية ٥٤

³ سورة النبأ آية ٣١-٣٣

خای د خلاصی بری کامیابی دی باغونه (د میوې)
او د انگورو (ونې) دي او پېغلي انارتیوني
همزولي دي.

په بل خای کې الله فرمایي : **إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنِشَاءً فَجَعَلْنَاهُنَّ**
أُنْكَارًا عُرْبًا أَتْرَابًا .¹

ترجمة : بېشکه مونږ نوي پيدا کړي دي دغه حورې
په يوه ښه پيدا کولو سره نو گرځولي مو دي دوی
پېغلي عاشقاني (پر جنتيانو خاوندانو خپلو)
همزولي (په خپل مابین کې) .

او دا به داسې حورې وي چې د جنتي نه به
وړاندې چا هغې ته لاس نه وي لگولی الله د هغوی
په اړه فرمایي : **لَمْ يَطْمِئْنَنْ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ قَبَائِيٍّ اِلَّا رَبَّكُمَا**
تُكَذِّبَانِ كَانَهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ .²

ترجمة : (په جنتونو کې به جنتيانو ته داسې
حورې وي) چې نه به وي مسه کړي دوی لره نه
انسان او نه پيري پخوا له دغو (جنتيانو
خاوندانو خپلو) پس په کوم يوه نعمت د نعمتونو
د رب ستاسې دروغ وایي (او منکريرئ ترې اې
انسانانو او پېريانو بلکه نشي کېدی) په صفايي
او ښايست کې به داسې وي لکه ياقوت او مرجان
غمي .

په بل خای کې الله فرمایي : **وَحُورٌ عِينٌ كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ**
الْمَكْنُونِ .³

ترجمة : او (گرځي به په دغو جنتيانو باندې)
حورې پيمخې غټې سترگې په شان د ملغلرو ساتليو
شويو په پوښونو کې.

¹ سورة الواقعة آية ٣٥-٣٧

² سورة الرحمن آية ٥٦-٥٨

³ سورة الواقعة آية ٢٢-٢٣

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ .¹

ترجمة : وي به به په دغو (ټولو جنتونو) کې حورې پيمخې نیکې ښائسته پس په کوم یوه نعمت د نعمتونو د رب د تاسې دروغ وایي (او منکرېوي ترې اې انسانانو او پېریانو بلکه نشي کېدی) حورې به وي پټې کرل شوې په خېمو کې.

وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ .²

ترجمة : او د دوی لپاره به په جنت کې مېرمنې وي پاکې او دوی به پدې جنت کې همېشه وي .

په یو حدیث کې رسول الله ﷺ فرمایي : وَلَوْ أَنَّ امْرَأَةً مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ اطَّلَعَتْ إِلَى أَهْلِ الْأَرْضِ لِأَضَاعَتْ مَا بَيْنَهُمَا، وَلَمَلَأَتْهُ رِيحًا، وَلَنَصِيفَهَا عَلَى رَأْسِهَا خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا .³

ترجمة : او که چېرته کومه ښځه د اهل الجنة نه زمکې ته را وگوري نو د زمکې او اسمان مینځ به ټول له رڼا څخه ډک شي او له ښه بوی نه به ډک شي او د هغې په سر باندې چې کوم تاج دی هغه د ټولې دنیا او له هغه څه نه چې په دنیا کې دي غوره دی .

او دا حوراني به د شهید لپاره ۷۲ وي پدې اړه روایات او احادیث مخکې د شهید په اړه ددې سلسلې په ځانگړې کتاب کې تیر شوي دي .

او د جنت دا حورې به د خپل سید او خپل خاوند لپاره بدلې هم وایي پداسې آواز چې داسې خور آواز به تر اوسه پورې چا اورېدلی نه وي حضرت ابن عمر فرمایي رسول الله ﷺ فرمايل : إِنَّ أَزْوَاجَ أَهْلِ

¹ سورة الرحمن آية ۷۰-۷۲

² سورة البقرة آية ۲۵

³ صحيح البخاري

الجنة ليغنين أزواجهن بأحسن أصوات ما سمعها أحد قط. إن مما يغنين: نحن الخيرات الحسان، أزواج قوم كرام، ينظرون بقرة أعيان. وإن مما يغنين به: نحن الخالدات فلا يمتهن، نحن الأمات فلا يخفهن، نحن المقيمات فلا يظعن¹.

ترجمة : بېشكه د اهل الجنة بيبيانې به بدلي بولي د خپلو خاوندانو لپاره په بهترینو اوازونو سره چې تر اوسه به چا نه وي اورېدلي بعض هغه بدلي چې دوی به یې وایي دادي نحن الخيرات ... الخ

د جنت حوري په خپل سيد باندې غيرت هم کوي او په دنيا کې چې يو نېک انسان وي د هغه لپاره چې کومه حوره تعين شوې وي هغه يې انتظار هم وباسي په يو حديث کې حضرت معاذ فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : لا تؤذي امرأة زوجها في الدنيا، إلا قالت زوجته من الحور العين: لا تؤذيه قاتلك الله، فإنما هو دخیل عندك، يوشك أن يفارقك إلينا².

ترجمة : په دنيا کې چې کومه ښځه خپل خاوند ته ضرر رسوي دده چې په جنت کې کومه حوره وي هغه ورته وایي : ضرر مه ورته رسوه تا د الله مړه کړي دا خو لتا سره مېلمه دی زر ده چې لتا نه به دی مونږ ته را جدا شي .

د جنت بيبيانې

هغه کس چې نېک وي او الله ورته هدايت کړی وي بيا يې الله په خپل فضل سره جنت ته بوزي نو چې په دنيا کې د هغه کومه مېرمن وي هغه هم نيکه وي هغه به په جنت کې هم له خپل خاوند سره وي الله فرمايي : جَنَاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ

¹ معجم الطبراني الاوسط

² سنن الترمذي

وَذُرِّيَّاتِهِمْ .¹

ترجمة : جنتونه دي د تل اوسېدلو چې ننوزي به دوی په هغو کې او (ننوزي به پکې بل) اولادې د دوی (اگر که عمل ئې د هغو په درجه نه وي)

په بل ځای کې الله فرمایي : هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى الْأَرَانِكِ مُنْكَبُونَ.²

ترجمة : دغه (جنتیان) او ښځې د دوی به په سیوریو کې (ناست وي) پر تختونو باندې تکیه وهونکي به وي .

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ .³

ترجمة : ننوزئ (اې زما بندگانو) جنت ته تاسې او ښځې ستاسې چې خوشاله به کړل شئ .

حضرت میمون بن مهران فرمایي کله چې حضرت ابوالدرداء وفات شو حضرت معاویه د هغه د مېرمن حضرت ام الدرداء ته د واده دعوت ورکړو لکن هغې مبارکې ترېنه انکار وکولو او د انکار وجه یې ورته دا وویلې : سمعت أن أبا الدرداء يقول: قال رسول الله - صلى الله عليه وسلم المرأة في آخر أزواجها، أو قال: لآخر أزواجها .

ترجمة : ما د ابو الدرداء نه آوړېدل چې هغه به ویل رسول الله ﷺ فرمایل ښځه به په جنت کې د آخر خاوند سره وي .

حضرت عکرمه فرمایي : إن أسماء بنت أبي بكر كانت تحت

¹ سورة الرعد آية ۲۳

² سورة يس

³ سورة الزخرف

الزبير بن العوام، وكان شديداً عليها، فأنتت أباها، فشكت ذلك إليه، فقال: يا بنيتي اصبري، فإن المرأة إذا كان لها زوج صالح، ثم مات عنها، فلم تزوج بعده جمع بينهما في الجنة.¹

ترجمة : بېشكه اسماء د حضرت ابي بكر لور د حضرت زبير بن العوام په نكاح كې وه هغه لدې سره سخت وو دا يې خپل پلار (حضرت ابو بكر صديق) ته راغله شكايته يې ورته وكولو حضرت ابو بكر صديق ورته وويل : لوري صبر كوه كله چې د بشخې نېك خاوند وي او هغه ورڅخه مړ شي او دا د هغه نه وروسته بل واده ونه كوي الله به دوى دواړه په جنت كې سره يو ځاى كړي .

د جنتيانو ماشومان

د جنتيانو ماشومان هغه چې تر بلوغ وړاندې په حق ورسيري ان شاء الله هغوى به هم په جنت كې وي الله به يې په خپل رحم او فضل سره جنت ته ورسوي الله فرمايي : **وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ**.²

ترجمة : او هغه كسان چې ايمان ئې راوړى دى او متابعت يې كړى وي د دوى اولادونو د دوى په ايمان سره نو پيوست به كړو مونږ په دوى پورې اولاد د دوى او كم به نه كړو مونږ دغو (پلرونو) لره له (جزاء د) عملونو د دوى هېڅ شى هر سړى به په هغه عمل چې كړى ئې وي گرو آخته وي (كه نېك وي يا بد) .

په پورتنۍ آيت كې الله په مؤمنانو باندې خپل يو بل فضل او احسان بيانوي هغه دا چې ددوى اولادونه به دوى ته ور ورسوي ترڅو د دوى سترگې

¹ رواه الطبراني

² سورة الطور آية ٢١

پرې ځې شي سره ددې چې د هغوی عملونه به دومره نه وي چې دې ځای ته پرې ورسېږي خو د پلار د سترگو د ځولو او د هغه د خوشحالي لپاره به ورته دا مرتبه ورکړي او دا به يې په دې جنتيانو باندې احسان وي الله د خپل احسان له مخې داسې نه کوي چې د لوړې مرتبې لرونکي پلار ورته را ښکته کړي بلکه دا ښکته مرتبې واله به ور پورته کړي د حضرت ابي سهل نه روايت دی هغه فرمايي ما له حضرت ابن عمر څخه واورېدل چې ددې آيت **كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ إِلَّا أَصْحَابُ الْيَمِينِ** (ترجمه : هر نفس به په بدل د هغه عمل کې چې ده کړی وي گرو وي بغير د ملگرو او خاوندانو د ښي لاس نه) يعنې د مسلمانانو ماشومان .¹

همدارنگه حضرت علي به هم همداسې ويل او هغه به ويل چې هر نفس به د خپلو عملونو له وجې (رهينه يعنې گرو) وي بغير د مسلمانانو د ماشومانو چې هغوی تر اوسه پورې څه عملونه کړي نه دي چې په نتيجه کې يې بيا (گرو) شي .

او پدې باندې دلا ئل موجود دي چې د مسلمانانو نا بالغ ماشومان به جنت ته ځي د مثال په ډول حضرت ابن سيرين فرمايي ماته حضرت ام حبيبة قصه کوله چې دا د حضرت عائشي په کور کې ناسته وه رسول الله ﷺ راغلو او دوی ته ور ننوتلو ويې ويل : **مَا مِنْ مُسْلِمَيْنِ يَمُوتُ لَهُمَا ثَلَاثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ ، لَمْ يَبْلُغُوا الْحِنْثَ ، إِلَّا جِئَ بِهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ، حَتَّى يُوقَفُوا عَلَى بَابِ الْجَنَّةِ ، فَيَقُولُونَ : حَتَّى يَدْخُلَ آبَاؤُنَا قَالَ ابْنُ سِيرِينَ : وَلَا أَذْرِي فِي الثَّلَاثَةِ ، أَوْ فِي الثَّانِيَةِ ، ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ لِلْمَرْأَةِ : سَمِعْتِ ؟ قَالَتْ : نَعَمْ .**²

ترجمه : د کوم مسلمان چې درى ماشومان په حق

¹ مصنف ابن ابي شيبة

² الاحاد و المثاني

ورسيري کوم چې لا بلوغ ته نه وي رسېدلي دوی به د قيامت په ورځ راوستل شي ترڅو د جنت په دروازه باندې ودريري او وايي به : چې زمونږ مور او پلار هم ننوزي ابن سيرين فرمايي اوس مې ياد نه دي چې په دريم او که په دوهم ځل کې به ورته وويل شي تاسې او ستاسې پلرونه جنت ته ننوزئ حضرت عائشې هغه بيبي ته ويل : وا د ورېدل؟ هغې ورته ويل : هو

حضرت ابو هريره فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل :
 مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَمُوتُ لَهُمَا ثَلَاثَةُ أَوْلَادٍ لَمْ يَلْعُوا الْحَنْثَ إِلَّا أَدْخَلَهُمُ اللَّهُ وَإِيَّاهُمْ
 بِفَضْلِ رَحْمَتِهِ الْجَنَّةَ . وَقَالَ يُقَالُ لَهُمْ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ . قَالَ فَيَقُولُونَ حَتَّى يَجِيءَ
 أَبَوَانَا . قَالَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ - فَيَقُولُونَ مِثْلَ ذَلِكَ فَيَقَالُ لَهُمْ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَبَوَاكُمْ
 1 .

ترجمة : د کومو دوو مسلمانو (مور پلار) چې درې ماشومان تر بلوغ وړاندې په حق ورسيري الله به هغوی جنت ته په خپل فضل او رحمت سره نښاسي او ويې فرمايل چې هغوی ته به ويل کيږي جنت ته ننوزئ دوی به ووايي : چې زمونږ مور پلار راشي درې ځلې يې داسې وويل بيا به هم دوی همداسې وايي بيا به ورته وويل شي څي تاسې او ستاسې پلرونه جنت ته ننوزئ .

حضرت ابو هريره فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل :
 مِنْ مُسْلِمَيْنِ يَمُوتُ لَهُمَا ثَلَاثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ لَمْ يَلْعُوا الْحَنْثَ إِلَّا أَدْخَلَهُمُ اللَّهُ وَأَبَوَاهُمُ
 الْجَنَّةَ بِفَضْلِ رَحْمَتِهِ - قَالَ - وَيَكُونُونَ عَلَى بَابٍ مِنْ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ فَيَقَالُ لَهُمْ
 ادْخُلُوا الْجَنَّةَ فَيَقُولُونَ حَتَّى يَجِيءَ أَبَوَانَا فَيَقَالُ لَهُمْ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَبَوَاكُمْ
 بِفَضْلِ رَحْمَةِ اللَّهِ . 2

ترجمة : د دوو مسلمانانو (مورپلار) چې درې ماشومان پداسې حالت کې مړه شي چې بلوغ ته نه

1 مسند امام احمد بن حنبل

2 السنن الكبرى للبيهقي

وي رسيدي الله به هغه ماشومان او د هغوی مور پلار جنت ته په خپل فضل او رحم سره ننباسي او دا ماشومان به د جنت دروازي ته ورسيري ورته به وويل شي چې ننوزئ جنت ته دوی به وايي ترڅو زمونږ مور او پلار راشي بيا به ورته وويل شي تاسي او ستاسي مور پلار جنت ته ننوزئ د الله په فضل اور حمت سره .

حضرت معاذ بن جبل فرمايي ما له رسول الله ﷺ څخه واورېدل چې فرمايل يې مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَمُوتُ لَهَا ثَلَاثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ، إِلَّا ادْخَلَ اللَّهُ وَالِدَيْهَا الْجَنَّةَ بِفَضْلِ رَحْمَتِهِ، قَالُوا: وَاثْنَيْنِ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: "وَإِثْنَيْنِ"، قَالُوا: وَوَاحِدٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: "وَوَاحِدٌ"، ثُمَّ حَدَّثَ أَنْ: "السَّقَطُ لَيَجْرُ أُمُّهُ بِسَرَرِهِ إِلَى الْجَنَّةِ".¹

ترجمة : هغه دوه مسلمانان (مور پلار) چې درى ماشومان يې مړه شي الله به يې مور پلار جنت ته په فضل او رحمت سره ننباسي صحابه وو ورته وويل : او که دوه وي يا رسول الله ﷺ ؟ رسول الله ﷺ وفرمايل او که دوه هم وي صحابه وو ورته وويل : او که يو وي يا رسول الله ﷺ ؟ رسول الله ﷺ وويل او که يو هم وي بيا يې وويل : هغه ضائع شوى ماشوم به خپله مور په نو (د نو هغه برخه چې په هغې سره ماشوم د مور سره تړلى وي) سره جنت ته کش کوي .

د حضرت ابي حسان نه روايت دى هغه فرمايي : قُلْتُ لِأَبِي هُرَيْرَةَ إِنَّهُ قَدْ مَاتَ لِي ابْنَانِ فَمَا أَنْتَ مُحَدِّثِي عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ - بِحَدِيثِ نُطِيبُ بِهِ أَنْفُسَنَا عَنْ مَوْتَانَا قَالَ قَالَ نَعَمْ « صِعَارُهُمْ دَعَامِيسُ الْجَنَّةِ يَتَلَقَى أَحَدُهُمْ أَبَاهُ - أَوْ قَالَ أَبَوَيْهِ - فَيَأْخُذُ بِثَوْبِهِ - أَوْ قَالَ بِيَدِهِ - كَمَا أَخَذَ أَنَا بِصَفِيَّةَ ثَوْبِكَ هَذَا فَلَا يَتَنَاهَى - أَوْ قَالَ فَلَا يَنْتَهَى - حَتَّى يُدْخِلَهُ اللَّهُ وَأَبَاهُ الْجَنَّةَ ». ²

ترجمة : ما حضرت ابي هريره ته وويل بي شكه زما دوه زامن مړه شوي دي ته د رسول الله ﷺ نه ماته څه داسې حديث نه وايي چې زړه مې پرې د مړيو نه خوشحال شي؟ هغه راته وويل : هو (درته وايم يې) د هغوی ماشومان د جنت واړه دي يو به د خپل پلار سره مخامخ كيږي يا به دمور پلار سره مخامخ كيږي هغه به تر جامه او يا تر لاس را نيسي لكه دا زه چې تا له جامه را ونيسم بيا به يې تر هغه نه پريږدي چې څو يې جنت ته ننه ايستلی نه وي.

د جنتيانو له دوزخيانو سره خبرې

وروسته ددې چې د انسانانو په مينځ کې فيصله وشي دوزخيان دوزخ او جنتيان جنت ته لاړ شي كله كله به جنتيان له دوزخيانو سره خبرې هم کوي دا چې څه به ورته وايي الله فرمايي : (وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ¹ .

ترجمة : او غږ به وکړي صاحبان د جنت صاحبانو د اور ته داسې چې په تحقيق مونده کړ مونږ هغه (ثواب) چې وعده کړې وه رب له مونږ سره زمونږ په حقه سره نو آيا وموند تاسې هغه چې وعده کړې وه رب ستاسې له ستاسې سره نو به وايي دوزخيان چې هو! نو غږ به وکړي يو غږ کوونکی (فرشته) په مينځ د دوی (جنتيانو او دوزخيانو) کې داسې چې وي د لعنت د الله په ظالمانو باندې.

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْتُومٍ خِتَامُهُ مِسْكٌ وَفِي ذَلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ وَمِزَاجُهُ مِنَ تَسْنِيمٍ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ وَإِذَا

رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَؤُلَاءِ لَضَالُّونَ وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ هَلْ تُؤْتِبُ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ .¹

ترجمة : بېشکه نيکان خامخا په نعيم لوى نعمت د (جنت) کې دي پر تختونو باندې ناست گوري (د الله لقاء او د جنت نعماء) او ترې مزه به اخلي يا به گوري دوزخيانو ته) پېژني به ته (اي کتونکيه!) په مخونو د دوى کې تازگي د نعيم (تنعم د جنت) ور څښولى شي (هغوى ته) له خالصو شرابو مهر کړيو شويو څخه چې مهر به يې مشک وي او په دغو (شرابو او نورو جنتي نعمتونو) باندې پس بايد دي چې رغبت وکړي رغبت کوونکي (په کولو د نېکو عملونو او پرېښودلو د بدو عملونو) او گډون د هغه (شرابو دى له اوبو د) تسنيم څخه دا (تسليم) يوه چينه ده (په جنت کې) چې څښي به له هغې څخه د (الله) مقربان بېشکه هغه کسان چې کافران شوي دى وو دوى په هغو کسانو باندې چې ايمان ئې راوړى وو خنډل به يې (مسخرې به يې پرې کولې) او کله چې تيريري منکران پر مؤمنانو باندې هغوى ته پخپلو منځونو کې سره سترگکونه وهي (لپاره استهزاء) او کله چې وگرځي خپلو کورنو ته (نو) گرځي دوى خوشحاله (خبرې جوړوونکي په سبب د تمسخر او استهزاء پر مؤمنانو باندې) کله چې به وليدل (کفارو) دغه (مؤمنان) نو ويل به يې پخپل مينځ کې چې دا بېشکه بې لارې دي حال دا چې نه دي ليرل شوي (کافران) پر دغو (مؤمنانو) باندې ساتونکي څارونکي نو په نن (ورځ د قيامت کې) هغه کسان چې ايمان ئې راوړى وو په کفارو باندې خاندې په تختونو باندې ناست گوري (د جنت نعمتونو ته او مزه ترې اخلي يا گوري کفارو ته چې څرنگه عذاب ورکول کيږي) بېشکه چې جزاء ورکړه شوه کفارو ته همغسې چې کول ئې (په دنيا کې له گناهونو څخه) .

جنتيان به په جنت کې همېشه وي

جنتيان چې كله جنت او دوزخيان چې كله دوزخ ته لارښ دوى به دلته همېشه وي بيا لدې ځاى نه وتل او بل ځاى ته تلل نشته الله فرمايي: **قُلْ أُوْنَبِّئُكُمْ بِخَيْرِ مَنْ ذَلِكُمْ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ** .¹

ترجمة: ووايه (اې محمده ﷺ دوى ته) آيا خبر دركړم تاسې ته په بهتر (خيز) له دغو (شپږو وارو دنيوي خوندونو؟) (شته) له پاره د هغو كسانو چې متقيان دي (د الله احكام عملي كوي) په نزد د رب د دوى جنتونه چې بهيري لاندې له مانيو او ونو د هغوى ويالې چې تل به وي (دوى) په دې جنتونو كې او ښځې به وي پاكي او رضا مندي (لويه به وي له كريمه ربه دوى ته) له جانبه د الله او الله ښه ليدونكى دى (عالم په پټو او ښكاره احوالو) د بندگانو (نو هرچا ته به د خپل عمل جزا وركړي).

أُولَئِكَ جَزَاؤُهُمْ مَغْفَرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَجَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ .²

ترجمة: هم دا متقيان (چې مخكې ياد شول) جزاء د دوى بشنه ده له (جانبه د) رب د دوى او جنتونه دي چې بهيري لاندې له (ونو او مانيو د) هغو ويالې چې تل به وي دوى په هغو (جنتونو) كې او څومره ښه دى اجر (مزدوري) د عاملينو (دغه مغفرت او جنت).

لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِنْ

¹ سورة آل عمران آية ١٥

² سورة آل عمران آية ١٣٦

عِنْدَ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِلْأَبْرَارِ .¹

ترجمة : لیکن هغه کسان چې ویریري دوی له ربه خپله شته دوی لره جنتونه چې بهیري له لاندې د (ونو او مانیو د) هغو ویالې تل به وي دوی په هغو (جنتونو) کې په دې حال کې چې (دغه جنتونه خای د) مېلمستیا دی له جانبې د الله او هغه (باقي شی) چې په نزد د الله دي غوره دي له پاره د نیکانو .

تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ .²

ترجمة : دا (د یتیمانو ، میراثونو ، وصیت او د دین تېر شوي حکمونه) حکمونه د الله دي او هرڅوک چې ومني حکم د الله او د رسول د ده نو داخل به کړي الله دغه (اطاعت کونکي په هسې) جنتونو کې چې بهیري له لاندې د (مانیو او ونو د) هغو ویالې همېشه به وي (دوی) په دې (جنتونو) کې او دا (ننوتل جنت ته) کامیابي لویه ده .

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَهُمْ فِيهَا أَرْوَاحٌ مُطَهَّرَةٌ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا .³

ترجمة : او هغه کسان چې ایمان ئې راوړی دی او کړي ئې دي ښه (عملونه) زر به ننه باسو مونږ دوی په (هغو) جنتونو کې چې بهیري له لاندې د (مانیو او ونو) د دوی ویالې همېشه وي به دوی په دغو جنتونو کې تل (بې انتها او بلا انقطاع) وي به دوی ته په دې جنتونو کې ښځې پاکې کړل شوې (له ټولو ناپاکو څخه) او ننه به باسو

¹ سورة آل عمران آية ١٩٨

² سورة النساء آية ١٣

³ سورة النساء آية ٥٧

مونڊر دوى په گڼو سيورو (په دائمي نعمت او راحت) کې.

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا.¹

ترجمة : او هغه کسان چې ايمان ئې راوړى دى او کړي ئې دي ښه عملونه نو ژر به داخل کړو مونږ دوى په جنتونو کې چې بهيري له لاندې (د مانيو او ونو) د دوى ويالې چې همېشه به وي دوى په دغو (جنتونو) کې تل تر تله وعده کړېده الله حقه (وعده) او څوک دي زيات رښتيني له الله نه په خبره او وعده کې.

قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (119)..²

ترجمة : وبه فرمايي الله (په قيامت کې) دا ورځ د دې ده چې نفع به رسوي صادقينو ته صدق د دوى (چې په دنيا کې يې کړى وي) (مقرر) دي دوى ته (هسې) جنتونه چې بهيري له لاندې (ونو او مانيو د) د هغو ويالې (د اوبو، شودو، شرابو او شاتو) تل به وي دوى په هغه کې همېشه راضي شوى دى الله له دوى نه (په طاعت سره) او راضي دي دوى له الله څخه (په موندلو د ثواب) دا (خلود او رضوان) برى دى ډېر لوى.

وَأَمَّا الَّذِينَ سُعِدُوا فَفِي الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ عَطَاءٌ غَيْرَ مَجْدُوذٍ.³

ترجمة : او هرڅه هغه کسان چې نېک بختان شوي دي نو په جنت کې به وي همېشه به وي په هم دغه

1 سورة النساء آية ١٢٢

2 سورة المائدة

3 سورة هود آية ١٠٨

جنت کې ترڅو چې وي آسمانونه او زمکه مگر چې اراده وفرمايي رب ستا (چې ئې بوزي رضوان او لقاء الرحمن ته) دغه ورکړه عطاء بخشش دی بې انتها او بلا انقطاع.

حضرت ابو سعيد الخدري فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : إِذَا دَخَلَ أَهْلُ النَّارِ النَّارَ ، وَأُدْخِلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ ، يُجَاءُ بِالْمَوْتِ كَأَنَّهُ كَبِشٌ أَمْلَحُ ، فَيُنَادِي مُنَادٌ : يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ ، تَعْرِفُونَ هَذَا ؟ قَالَ : فَيَسْرِبُونَ وَيَنْظُرُونَ ، وَكُلُّ قَدْ رَأَوْهُ ، فَيَقُولُونَ : نَعَمْ ، هَذَا الْمَوْتُ ، ثُمَّ يُنَادِي : يَا أَهْلَ النَّارِ ، تَعْرِفُونَ هَذَا ؟ فَيَسْرِبُونَ وَيَنْظُرُونَ ، وَكُلُّهُمْ قَدْ رَأَوْهُ فَيَقُولُونَ : نَعَمْ ، هَذَا الْمَوْتُ ، فَيُؤْخَذُ فَيَذْبَحُ ، ثُمَّ يُنَادِي : يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ ، خُلُودٌ وَلَا مَوْتَ ، وَيَا أَهْلَ النَّارِ ، خُلُودٌ وَلَا مَوْتَ ، فَذَلِكَ قَوْلُهُ : {وَأُنْذِرُهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ } (39) ¹

ترجمة : كله چې دوزخيان دوزخ ته ننوزي او جنتيان جنت ته ننوزي مرگ به د گډ (پسه) په شكل کې راوستل شي اواز كوونكى به اواز وكوي اې جنتيانو دا پېژنئ؟ رسول الله ﷺ وفرمايل : ټول جنتيان به ورته وگوري او ټول به يې ووني وبه وايي هو دا مرگ دی بيا به اواز وشي اې دوزخيانو دا پېژنئ ټول به ورته متوجه شي او ورته به وگوري چې ټول يې وويني دوی به ووايي هو دا مرگ دی بيا به را ونيول شي او هلال به کړل شي بيا به اواز كوونكى اواز وكوي اې جنتيانو دلته اوس پاتې كېدل همېشه دي مرگ نشته او اې دوزخيانو دلته اوس پاتې كېدل همېشه دي او مرگ نشته او همدا مطلب دی چې الله فرمايي : او دوی ته وېره ورکړه د غم دورځي نه چې كله د خبرې فيصله وشي او دوی په غفلت کې دي او دوی ايمان نه راوړي .

جنت ته به څوک ځي؟

مونږ بايد پدې پوه شو او پدې مو يقين وي چې مونږ د جنت لپاره پيدا شوي يو او الله مونږ صرف ددې لپاره پيدا کړي يو چې په مونږ باندې رحم وکوي او مونږ الله ددې لپاره پيدا کړي يو چې مونږ د هغه عبادت وکړو او پدې عبادت سره فايده مونږ ته ورسېږي زمونږ عبادت ته الله هېڅ ډول ضرورت نلري بلکه مونږ دېته اړ يو چې د هغه عبادت وکړو الله زمونږ عبادت خوښوي الله فرمايي : **إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ** .¹

ترجمة : مگر هغه څوک چې رحم پرې وفرمايي رب ستا او له اختلافه ئې وساتي او د پاره د دې (رحمت) پيدا کړي دي الله دوی .

رسول الله ﷺ فرمايل : **كُلُّ أُمَّتِي يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ أَبَى قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَنْ يَأْبَى قَالَ مَنْ أَطَاعَنِي دَخَلَ الْجَنَّةَ وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ أَبَى** .²

ترجمة : زما امتيان به ټول جنت ته ځي بغير د هغه کسانو څخه چې جنت ته له تلو څخه انکار وکوي صحابه وو پوښتنه وکوله چې جنت ته به له ننوتلو څخه څوک انکار کوي يا رسول الله ﷺ؟ رسول الله ﷺ وفرمايل : هغه کسان چې زما نا فرماني وکوي هغه جنت ته د ننوتلو څخه انکار کوي .

¹ سورة هود آية ۱۱۹

² متفق عليه

جنت الله ددې لپاره پيدا كړى دى چې رښتينو مؤمنانو ته ورباندې عزت وركړي تردې چې هر مؤمن بايد داسې عملونه وكوي او داسې كارونه وكوي چې په خپل ځان يې داسې عقیده جوړه شي چې څوك د لا إله إلا الله محمد رسول الله گواهي وركړي هغه به خامخا جنت ته ځي د جنت په اړه پورته تاسې صفتونه ولوستل او تاسې ته به دا ښكاره شوې وي چې جنت يو قيمتي شى دى او هېڅوك يو قيمتي شى چا ته بغير د قيمت څخه نه وركوي نو د جنت لپاره قيمت څه شى دى؟ اصل قيمت د جنت په نېكو عملونو كې كوښښ كول دي او جنت ته د تللو لپاره د هغه قيمت اداء كول دي په لاندې څو كړښو كې زه تاسې ته د جنت لاره واضح كول غواړم چې پدې لاره باندې يو څوك كولى شي جنت ته ننوزي په قرآن كريم او احاديثو كې ځينې داسې عملونه ښودل شوي دي چې هغه انسان وكوي الله او د هغه رسول ﷺ ورسره د جنت وعده كړېده هغه هم پدې معنى نه چې څوك دا عملونه وكوي هغه د جنت حقدار كيږي بلكه كله چې بنده دا عملونه وكوي الله په هغه باندې رحمت كوي او جنت ته يې ننباسي ځكه جنت يو داسې ځاى دى ، داسې نعمتونه دي هلته داسې يو ډول ژوند دى چې انسان ټول عمر په سجده پريوزي نو بيا هم هغه په خپل عبادت سره نشي گټلى ترڅو يې الله ورته په خپل رحم سره ورنه كړي .

جنت ته تلونكي څه كسان قرآن كريم ياد كړي دي او د څه كسانو لپاره په احاديثو كې جنت ياد كړل شوى دى زه به اول هغه كسان ياد كړم چې قرآن كريم ورته د جنت وعده وركړېده او بيا به په دوهمه برخه كې د مثال په توگه يو څه داسې كسان يادكړم چې په احاديثو كې ورته جنت ياد كړل شوى دى .

په قرآن كريم كې لاندې كسانو ته جنت ياد شوى

دی او له دوی سره د جنت وعده شوېده .

ایمان او نیک عمل کونکي

هغه کسان چې ایمان راوړي او بیا نېک اعمال کوي الله ورسره د جنت وعده کړېده الله فرمایي :
وَيُبَشِّرُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رَزَقُوا قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأَتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (25) .¹

ترجمة : او زېرى وركړه (اې محمده ﷺ) هغو كسانو ته چې ايمان ئې راوړى دى (په ټولو مؤمن به شيانو) او كړي ئې دي ښه (عملونه) په دې چې بېشكه دوى ته جنتونه دي چې بهيري لاندې (تر ما نيو او ونو) د هغو ويالې هر كله چې روزي وركړه شي دغو (جنتيانو) ته له جنتونو څخه څه مېوه لپاره د خوړلو نو وايي دا (جنتيان) دا همغسې مېوه ده چې راكړل شوې وه مونږ ته پخوا له دې نه او رابه وړه شي دوى ته مېوه هم رنگه (او په خوند كې سره بدله) او وي به دوى ته په دغو (جنتونو) كې ښځې ښې پاكې او دوى به وي په دغو (جنتونو) كې همېشه .

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا (124) .²

ترجمة : او هر هغه څوك چې عمل وكړي له (ځينو) نيكو كارونو له نارينه وو او له ښځو حال دا چې دى مؤمن وي نو دغه (نيكو كاران) داخل به شي په جنت كې او ظلم به ونشي په دوى (په اندازه) د نقيير (هم يعنې پر دوى په هېڅ شي كې هېڅ ظلم نه كيږي) .

¹ سورة البقرة آية ۲۵

² سورة النساء آية ۱۲۴

اطاعت کوونکی

هغه کس چې د الله او د رسول الله ﷺ اطاعت کوي له هغه سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي : لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرْجٌ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَنْ يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا (17) .¹

ترجمة : نشته پر رانده باندي هېڅ گناه او تكليف او نه په گود باندي هېڅ گناه او تكليف او نه په ناروغ باندي هېڅ گناه او تكليف (ځكه چې جهاد پر دغو معذورانو فرض نه دی) او هر هغه څوك چې اطاعت وكړي ومني حكم د الله او د رسول الله ﷺ نو داخل به ئي كړي (الله) دی په جنتونو كې چې بهيري له لاندې (د ونو او ماڼيو) د هغو (څلور قسمه) ويالې او هر هغه څوك چې گرځېدو (له احكامو د الله) نو (الله) به په عذاب كړي دی په عذاب ډېر دردناك سره.

هغه کسان چي پرهيزگاران وي

هغه کسان چي له الله نه ډاريري او ددې امله له گناهونو څخه ځان ساتي دوی به هم جنت ته ځي الله فرمايي :

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ * فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ .¹

ترجمة : بېشکه متقين به په داسې ځای کې وي چې هغه به په امن وي او په جنتونو او چينو کې به وي .

وَجَنَّةٌ عَرْضُهَا السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ .²

ترجمة : او داسې جنت چې پلنوالی يې دومره دی لکه د زمکې او اسمانونو د هغه کسانو لپاره تيار کړل شوی دی چې له الله څخه ډاريري .

لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ .³

ترجمة : (شته) له پاره د هغو کسانو چې متقيان دي (د الله احکام عملي کوي) په نزد د رب د دوی جنتونه چې بهيري لاندې له مانيو او ونو د هغوی ويالي

لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ .⁴

ترجمة : لیکن هغه کسان چې د خپل رب څخه ډاريري د هغوی لپاره جنتونه دي چې له لاندې د مانيو د هغه به ويالي بهيري .

¹ سورة الدخان آية ۵۱-۵۲

² سورة آل عمران آية ۱۳۳

³ سورة آل عمران آية ۱۵

⁴ سورة آل عمران آية ۱۹۸

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّى إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ (73) .¹

ترجمة : او بېول کيږي به هغه کسان چې وېرېدل به دوی له ربه خپله طرف د جنت ته ډلې ډلې تر هغه پورې چې راشي دوی جنت ته حال دا چې پرانیستلی شوې به وي دروازې د دغه (جنت) او وبه وایي دوی ته خزانچیان (متصرفان) د جنت سلام د وي پر تاسې پاک یی تاسې (له گناهونو) پس ننوځئ جنت ته په دې حال کې چې همېشه اوسېدونکي اوسئ (په ده کې) .

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ كَذَلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ (31) .²

ترجمة : جنتونه دي د همېشه اوسېدلو چې ننوزي به دوی (په) هغو کې چې بهیږي به لاندې (د ونو او مانیو) د دوی (څلور قسمه) ویالې چې وي به (تل) دوی ته په دغو باغونو کې هر هغه (نعمتونه) چې اراده یې کوي دوی په شان د دغې (جزاء) جزاء ورکوي الله پر هېزگارانو ته .

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ * آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ .³

ترجمة : بېشکه وېرېدونکي له الله او ځان ساتونکي له معاصیو به په جنت کې وي او په چینو کې به وي يعني څښونکي د اوبو د دې چینو به وي اخیستونکي به وي هغو نعمتونو لره چې ورکړي وي دوی ته رب د دوی

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَلَهَرٍ * فِي مَقْعَدٍ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِكٍ مُقْتَدِرٍ .¹

1 سورة الزمر

2 سورة النحل

3 سورة الذاریات

ترجمة : بېشكه وېرېدونكي به په جنتونو كې وي او په ويالو كې وي چې څېني له اوبو شرابو، شاتو ، شودو د هغو) په مجلس رشتيا (د جنت) كې په نزد د دباچا لوى قدرت لرونكي (چې هېڅوك يې نشي عاجزولى) .

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٍ النَّعِيمِ .²

ترجمة : بېشكه وېرېدونكي به د دوى د رب سره په جنتونو او نعمتونو كې وي .

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ * وَفَوَاكِهٍ مِمَّا يَشْتَهُونَ .³

ترجمة : بېشكه وېرېدونكي به په سيوريو او چينو (د جنت) كې وي او پداسې ميوو كې به وي چې د دوى زړه غواړي .

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازاً * حَدَائِقَ وَأَعْنَاباً .⁴

ترجمة : بېشكه خاص متقيانو ته (په آخرت كې) ځاى د خلاصې بري كاميابي دى باغونه (د ميوې) او د انگورو (ونې) .

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا .⁵

ترجمة : دغه (چې مخكې مو ذكر وكړ) جنت دى هغه چې په ميراث به وركوو مونږ له بندگانو خپلو هغه چاته چې وي پرهېز گار .

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ أُكُلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ

1 سورة القمر آية ٥٤-٥٥

2 سورة القلم آية ٣٤

3 سورة المرسلات آية ٤١-٤٢

4 سورة النبأ آية ٣١-٣٢

5 سورة مريم آية ٦٣

عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ (35) .¹

ترجمة : مثال (صفت) د جنت هغه چې وعده کړې شوې ده (په هغه سره) پرهېزگاران (دا دي چې) بهیري (همېشه) له لاندې (د باغونو او ماڼیو) د هغه (څلور قسمه) ویالې میوې د هغې (به همېشه بې انتهاء او بې انقطاع) وي او سوری د هغه (به هم همېشه وي بې زواله) دا (جنت) عاقبت (او مرجع) دی د هغو کسانو چې پرهېزگاري کوي او عاقبت (کې ځای) د کافرانو اور (د دوزخ) دی.

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ (83).²

ترجمة : دغه کور د آخرت (چې جنت دی) ورکوي مونږ دا د پاره د هغو کسانو چې نه لرې اراده د لویي (او تکبر) په زمکه کې او نه فساد ظلم کوي (پر خلقو) او عاقبت به خاتمه د پاره د پرهیز گارانو ده.

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٌ لِلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ.³

ترجمة : مثل صفت بیان د جنت هغه چې وعده ئې کړل شوې ده له پرهېزگارانو سره په هغه کې ویالې دي له اوبو چې نه به وي بد خوند (بدلېدونکي په مزه داوبو کې) او ویالې دي له شودو چې نه وي متغیرې (مزه ئې بلکه صاف او خوندوره ده) مزه د هغو او ویالې دي له شرابو چې مزه ورکونکي دي (هغه) څښونکیو ته او

¹ سورة الرعد

² سورة القصص

³ سورة محمد آية ١٥

ويالې دي له شاتو (گبين) صفا کړيو شويو (له خيريونو نه) (او شته) دوی ته په دغه (جنت) کې له هر راز (قسم) مېوو او مغفرت له (طرفه د) رب د دوی .

او داسې نور په مختلفو آيتونو کې د هغه کسانو سره د جنت وعده شوېده چې هغوی له الله څخه ډارېږي .

د الله په دين باندې ټينگ پاتې کيدونکي

هغه کسان چې ايمان راوړي او بيا په هر ډول حالاتو کې د الله په دين باندې ټينگ پاتې شي لدې کسانو سره هم الله د جنت وعده کړېده الله فرمايي : **إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ (30)** .¹

ترجمة: بېشکه هغه کسان چې وويل رب زمونږ الله دی بيا پدې خبره باندې ټينگ پاتې شول د رحمت ملائک به ورباندې ناليري (او ورته وايي به دا چې) تاسې مه ډارېږئ مه غمجن کېږئ د هغه جنت زېږی قبول کړئ چې لتاسې سره ئې وعده کېده .

عاجزي کونکي

هغه کسان چې عاجزي کوي او تکبر نه کوي او ځان ته په لوی نظر نه گوري او نه خپل ځان لوی ښکاره کوي دا عمل هم الله ته ډېر گران دی په يو حديث کې راغلي دي چې د چا په زړه کې يوه ذره کبر هم وي هغه به جنت ته نه ځي نو لدې عاجزي کونکو سره هم الله د جنت وعده کړېده الله فرمايي

: إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (23).¹

ترجمة : بېشکه هغه کسان چې ایمان ئې راوړی دی او کړي ئې دې ښه عملونه او عاجزي کوي دوی رب خپل ته دغه کسان صاحبان (اوسېدونکي) د جنت دي دوی به په دې جنت کې همېشه وي.

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا (35).²

ترجمة : بېشکه چې مسلمان سړي او مسلمانې ښځې او مؤمنان سړي او مؤمنانې ښځې او اطاعت کوونکي سړي او اطاعت کوونکې ښځې او رښتین سړي او رښتینې ښځې او صبر کوونکي سړي او صبر کوونکې ښځې او وېرېدونکي عاجزي کوونکي سړي او وېرېدونکي عاجزي کونکې ښځې او خیرات کوونکي سړي او خیرات کوونکې ښځې او روژه نیوونکي سړي او روژه نیوونکې ښځې او حفاظت کوونکي سړي ځای د شهوت خپل (له پردیوښځو) او ساتونکې ښځې (ځای د شهوت خپل له پردیو سړیو) او ذکر کوونکي سړي (الله لره) (په ذکر) ډېر او ذکر کوونکې ښځې (الله لره په ذکر ډېر) تیار کړی دی الله دغو (لسو وارو جامع الطاعاتو سړیو او ښځو ته) مغفرت او اجر ډېر لوی (جنت) .

په آیتونو کې غور کوونکي

هغه کس چې د الله آیتونه آوري نو په هغه کې غور او فکر کوي او د هغه په مطلب ځان پوهوي د هغه

¹ سورة هود

² سورة الاحزاب

کسانو لپاره هم جنت ياد کړل شوی دی الله فرمايي : **وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا (73) وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَرْوَاحِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا فُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا (74) أُولَئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا (75).**¹

ترجمة : او (بندگان د رحمن) هغه کسان دي کله چې پند ورکړل شي دوی ته په آیتونو د رب د دوی نو نه نسکورېږي پرې (لکه) کانه او رانده (بلکه سر په سجده ږدي آوري ئې او پرې عمل کوي) او هغه کسان دي چې وایي اې ربه زموږ راکړه مونږ ته (په فضل خپل سره) له ښځو زموږ څخه او له اولادو زموږ څخه (هغه څوک چې) یخوالی د سترگو زموږ پکې راځي او وگرځوه مونږ د پاره د متقیانو امام پېښوا دغه کسان (چې موصوف په دغو صفاتو سره وي) جزا به ورکړله شي دوی ته په هسکو مانیو (د جنت) په سبب د هغه چې صبر ئې کړی وو او وا به چولی شي پر دوی په دغه جنت کې تحیه دعاء او سلام .

مونځ کوونکي

هغه کسان چې مونځ کوي ، هغه کسان چې د مانځه پابندي کوي او په خپل وخت سره یې د ټولو شرطونو او ارکانو د پوره کولو سره کوي له هغوی سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي : **وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ (9) أُولَئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ (10) الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (11).**²

ترجمة : او هغه (کسان هم کامياب شول) چې دوی (همېشه) پر مونځونو خپلو ساتنه کوي (چې تل ئې سم اداء کوي سره له ټولو حقونو) هم دغه (مؤمنان چې پورتنی ياد شوي شپږ نېک صفات

¹ سورة الفرقان

² سورة المؤمنون

ولري) هم دوی دي وارثان (لا ئقان نه نور څوک) هغه (وارثان) چې ميراث به اخلي (جنت د) فردوس دوی به په دغه (جنت الفردوس) کې تل پاتې کېدونکي وي.

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ (34) أُولَٰئِكَ فِي جَنَّتٍ مُّكْرَمُونَ (35). ¹

ترجمة : او هغه کسان چې د خپلو مونځونو ساتونکي وو همدا کسان به په جنت کې په عزت کې وي .

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (277). ²

ترجمة : بېشکه هغه کسان چې ايمان ئې راوړی دی (په ټولو مؤمن به شيانو) او کوي دوی ښه عملونه او قائموي دوی (سم اداء کوي سره له ټولو حقونو په ترتيب) مونځ او ورکوي دوی زکوة شته دوی لره اجر (ثواب) د دوی په نزد د رب د دوی او نشته هېڅ ډول وېره په دوی باندې او نه به دوی (هېڅکله) غمجن کيږي (د ثواب په نقصان سره) .

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ (3) أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (4). ³

ترجمة : (دوی) هغه مؤمنان دي چې قائموي (سم اداء کوي سره له ټولو حقونو) د دوی مونځ او له ځينې د هغه ماله چې ورکړی دی مونږ دوی ته نفقه کوي (لگوي په لاره د الله کې) دغه کسان هم دوی دي مؤمنان په حقه سره شته دوی ته درجې په نزد د رب د دوی او مغفرت (بښنه) او رزق نېک

¹ سورة المعارج

² سورة البقرة آية ٢٧٧

³ سورة الانفال

(د عزت) .

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ (34) أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ (35) .¹

ترجمة : او هغه کسان چې د خپلو مونځونو ساتونکي وو همدا کسان به په جنت کې په عزت کې وي .

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (71) .²

ترجمة : او سري مؤمنان او ښځې مؤمنانې ځينې د دوی دوستان دي د ځينو نورو (او په ايمان کې ټول سره يو شان دي) حکم کوي دوی په نيکيو (چې د الله او د رسول اطاعت دی) او منع کوي له بدو چې (د الله او د رسول نه مخالفت دی) او دروي (له ټولو حقونو سره سم اداء کوي) مونځ او ورکوي دوی زکات او حکم مني د الله او (حکم مني) د رسول الله ﷺ دغه کسان ژر به رحم وکړي په دوی الله بېشکه چې الله ښه غالب قوي دی (د حکمونو په جاري کولو کې) ښه د حکمت خاوند (چې هر کار په تدبير او مصلحت سره کوي)

فَمَا أُوْتِيتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ (36) وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ (37) وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ (38) .³

ترجمة : پس هغه چې درکړل شوي دي تاسې ته (اې مخاطبانو) له څه څيزه (لکه اسباب د دنيا) لږ

¹ سورة المعارج

² سورة التوبة

³ سورة الشورى

خسيس ده (چې زائليږي) او هغه ثواب چې په نزد د الله دى خیر او غوره او ډېر باقي پاتې کېدونکى دى د پاره د هغو کسانو چې ايمان ئې راوړى دى او (خاص) پر رب خپل توکل کوي دوى او (بل د پاره د) هغو کسانو چې ځان ساتي دوى له غټو گناهونو او له فواحشو (قبائحو نورو گناهونو نه) او هرکله چې په غضب شي هم دوى بشنه کوي او (بل د پاره د) هغو کسانو چې اجابت کوي (د احکامو) د رب د دوى او قائموي (اداء کوي سره له ټولو حقوقو لمونځ او کار د دې (په) مشورت (سره) وي په منځ د دوى کې او له ځينو د هغو شيانو چې ورکړي دي مونږ دوى ته نفقه کوي (په لاره د الله کې) .

ددېنه علاوه په نورو ځايونو کې هم په قرآن کریم کې د هغه کسانو سره د جنت وعده شوېده چې هغوى مونځ کونکي وي .

د الله له عذابه ډارېدونکى

هغه کس چې له د الله له عذاب څخه ډارېږي او د الله د عذاب نه وېره يې په زړه کې وي د هغه کسانو سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي :
 وَالَّذِينَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُونَ (27) (ترجمة : او هغه کسان چې له عذاب د رب د دوى نه ډارېدل) او بيا د څه نورو کسانو ذکر کوي او بيا د ټولو په آخر کې فرمايي : أُولَٰئِكَ فِي جَنَّتٍ مُّكْرَمُونَ (35) .¹

ترجمة : همدا کسان به په جنت کې په عزت کې وي .

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ (40) فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ

(41).¹

ترجمة : او بېشکه هغه چې ووېرېدل د رب خپل نه
(او گناه يې پرېښوده) او منع يې کړو خپل نفس
له (ناروا) خواهشاتو نه بېشکه جنت د ورتلو
ځای (د دوی) دی.

له لویو گناهونو ځان ساتونکی

هغه کس چې له لویو گناهونو ځان ساتي له هغوی
سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمایي : **فَمَا أُوتِيتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَّاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ (36) وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ (37)** .²

ترجمة : پس هغه چې درکړل شوي دي تاسې ته (اې
مخاطبانو) له څه خپزه (لکه اسباب د دنیا) لږ
خسيس ده (چې زائلېږي) او هغه ثواب چې په نزد
د الله دی خیر او غوره او ډېر باقي پاتې
کېدونکی دی د پاره د هغو کسانو چې ایمان ئې
راوړی دی او (خاص) پر رب خپل توکل کوي دوی او
(بل د پاره د) هغو کسانو چې ځان ساتي دوی له
غټو گناهونو او له فواحشو (قبائحو نورو
گناهونو نه) او هرکله چې په غضب شي هم دوی
بښنه کوي.

مشوره کونکي

هغه مسلمانان چې په خپلو اجتماعي کارونو کې
يو له بل سره مشوره کوي هغوی ته هم جنت ياد
شوی دی الله فرمایي : **فَمَا أُوتِيتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَّاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ (36) وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ**

¹ سورة النازعات² سورة الشورى

كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ (37) وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَى بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ (38) . 1

ترجمة : پس هغه چې درکړل شوي دي تاسې ته (اې مخاطبانو) له څه خیزه (لکه اسباب د دنیا) لږ خسیس ده (چې زائلېږي) او هغه ثواب چې په نزد د الله دی خیر او غوره او ډېر باقی پاتې کېدونکی دی د پاره د هغو کسانو چې ایمان ئې راوړی دی او (خاص) پر رب خپل توکل کوي دوی او (بل د پاره د) هغو کسانو چې ځان ساتي دوی له غټو گناهونو او له فواحشو (قبائحو نورو گناهونو نه) او هرکله چې په غضب شي هم دوی بېنه کوي او (بل د پاره د) هغو کسانو چې اجابت کوي (د احکامو) د رب د دوی او قائموي (اداء کوي سره له ټولو حقوقو لمونځ او کار د دوی (په) مشورت (سره) وي په منځ د دوی کې او له ځینو د هغو شيانو چې ورکړي دي مونږ دوی ته نفقه کوي (په لاره د الله کې) .

د بدو په ځواب کې ښه کوونکی

رښتونی صبر ناک هغه کس وي چې څوک ورسره څه بد وکوي دی د هغه سره د بدو په بدل کې بد نه کوي بلکه د هغه سره نور هم ښه کوي دا عمل هم الله ته ډېر خوښ دی او ددې عمل کوونکي سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمایي : **وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَذَرُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ (22) جَنَّاتٌ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ (23) .** 2

ترجمة : او هغه کسان چې صبر کوي لپاره د طلب د رضا د رب خپل (په مالي او جاني مصائبو یا د

شرعي يا د جهاد په تګالیفو) او قائموي (سم اداء کوي له ټولو حقوقو په ترتیب سره) مونځ او نفقه کوي (لګوي یې په لاره د الله کې) ځینې له هغه (حلالو اموالو) نه چې ورکړي دي مونځ دوی ته هم په پټه او هم په ښکاره (خفیتاً او ظاهراً) او دفع کوي دوی په نیکی سره بدي دغه کسان موصوف په دغو صفاتو شته دوی ته (ښه) عاقبت د دار (د آخرت چې) جنتونه دي د تل اوسېدلو چې ننوزي به دوی په هغو کې او (ننوزي به پکې بل) هغه څوک چې صالح (مؤمن) وي له پلرونو د دوی او له ښځو د دوی او له اولادې د دوی (اګر که عمل ئې د هغو په درجه نه وي) او فرشتې به ورننوزي پر دوی (سره له تحائفو او زیری او رضوان) له هرې دروازې (مانیو د دوی ته).

ریښتیني

هغه کس چې په خپلو عملونو کړو وړو او خپلو خبرو کې رښتونی وي او درواغ نه وايي او چا ته دوکه نه ورکوي د هغه سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمایي: **قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمٌ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (119).**¹

ترجمة: وبه فرمایي الله (په قیامت کې) دا ورځ د دې ده چې نفع به رسوي صادقینو ته صدق د دوی (چې په دنیا کې یې کړی وي) (مقرر) دي دوی ته (هسې) جنتونه چې بهیږي له لاندې (ونو او مانیو د) د هغو ویالې (د اوبو، شودو، شرابو او شاتو) تل به وي دوی په هغه کې همېشه راضي شوی دی الله له دوی نه (په طاعت سره) او راضي دي دوی له الله څخه (په موندلو د ثواب)

دا (خلود او رضوان) بری دی ډېر لوی.

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا (35).¹

ترجمة : بېشکه چې مسلمان سړي او مسلماني ښځې او مؤمنان سړي او مؤمناني ښځې او اطاعت کوونکي سړي او اطاعت کوونکې ښځې او رښتیني سړي او رښتینې ښځې او صبر کوونکي سړي او صبر کوونکې ښځې او وېرېدونکي عاجزي کوونکي سړي او وېرېدونکې عاجزي کونکې ښځې او خیرات کوونکي سړي او خیرات کوونکې ښځې او روژه نیوونکي سړي او روژه نیوونکې ښځې او حفاظت کوونکي سړي (ځای د شهوت خپل (له پردیوښځو) او ساتونکې ښځې (ځای د شهوت خپل له پردیو سړیو) او ذکر کوونکي سړي (الله لره (په ذکر) ډېر او ذکر کوونکې ښځې (الله لره په ذکر ډېر) تیار کړی دی (الله دغو (لسو وارو جامع الطاعاتو سړیو او ښځو ته) مغفرت او اجر ډېر لوی (جنت) .

زکات ورکونکي

هغه کسان به هم جنت ته ځي چې په سمه او منظمه توګه سره زکات ورکوي زکات د يو مالدار سړي په مال کې د غريب حق دی هغه کسان چې په ايمانداري سره او يوازې د الله درضا لپاره دا حق ورکوي له هغوی سره هم په قرآن کریم کې د جنت وعده شوېده الله فرمايي : **وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ (4)**¹.

ترجمة : او هغه (کسان هم کامياب شول) چې دوی (تل) د زکوة اداء کوونکي دي (چې د مالي فعلي او قولي عباداتو جامع دی) .

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (277).²

ترجمة : بېشکه هغه کسان چې ايمان ئې راوړی دی (په ټولو مؤمن به شيانو) او کوي دوی ښه عملونه او قائموي دوی (سم اداء کوي سره له ټولو حقونو په ترتيب) مونځ او ورکوي دوی زکوة شته دوی لره اجر (ثواب) د دوی په نزد د رب د دوی او نشته هېڅ ډول وېره په دوی باندې او نه به دوی (هېڅکله) غمجن کيږي (د ثواب په نقصان سره) .

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (71).³

ترجمة : او سړي مؤمنان او ښځې مؤمنانې ځيني د دوی دوستان دي د ځينو نورو (او په ايمان کې

¹ سورة المؤمنون

² سورة البقرة آية ۲۷۷

³ سورة التوبة آية ۷۱

ټول سره يو شان دي) حکم کوي دوی په نيکیو (چې د الله او د رسول اطاعت دی) او منع کوي له بدیو چې (د الله او د رسول نه مخالفت دی) او دروي (له ټولو حقونو سره سم اداء کوي) مونځ او ورکوي دوی زکات او حکم مني د الله او (حکم مني) د رسول الله ﷺ دغه کسان ژر به رحم وکړي په دوی الله بېشکه چې الله ښه غالب قوي دی (د حکمونو په جاري کولو کې) ښه د حکمت خاوند (چې هر کار په تدبیر او مصلحت سره کوي)

هغه کس چې له شرک نه ځان ساتي

څوک چې په خپلو خبرو او کړو وړو کې له شرک نه او له شرکي کارونو او شرکي خبرو نه ځان ساتي له هغوی سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمایي :
وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا (68) .¹

ترجمة : او (بندگان د رحمان) هغه کسان دي چې نه بولي سره له الله معبود بل او نه وژني دوی نفس هغه چې حرام کړي دي الله (وژل دهغه) مگر په حق سره او نه کوي دوی زنا او هرچا چې وکړه (يو له دغو دریو امهات الذنوب نه) نو ملاقات به وکړي وبه ويني جزاء د گناه خپلې.

بيا پدې پسې الله د څه نورو کسانو ذکر کوي او بيا د دوی ټولو په اړه مخکې فرمایي : أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرَّةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا (75) .²

ترجمة : دغه کسان (چې موصوف په دغو صفاتو سره وي) جزا به ورکړله شي دوی ته په هسکو مانيو (د جنت) په سبب د هغه چې صبر ئې کړی وو او وا

¹ سورة الفرقان

² سورة الفرقان

به چولی شي پر دوی په دغه جنت کې تحية دعاء او سلام .

بښنه کوونکي

هغه کسان چې غصه شي او په مقابل لوري یې بښه برلاسی هم وي او ددې سره سره د هغه څخه د انتقام اخیستلو په ځای هغه معاف کړي لدې کسانو سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمایي :
 فَمَا أُوتِيتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَّاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ (36) وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ (37) وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ (38) .¹

ترجمة : پس هغه چې درکړل شوي دي تاسې ته (اې مخاطبانو) له څه څیزه (لکه اسباب د دنیا) لږ خسیس ده (چې زائلېږي) او هغه ثواب چې په نزد د الله دی خیر او غوره او ډېر باقی پاتې کېدونکی دی د پاره د هغو کسانو چې ایمان ئې راوړی دی او (خاص) پر رب خپل توکل کوي دوی او (بل د پاره د) هغو کسانو چې ځان ساتي دوی له غټو گناهونو او له فواحشو (قبائحو نورو گناهونو نه) او هرکله چې په غضب شي هم دوی بښنه کوي او (بل د پاره د) هغو کسانو چې اجابت کوي (د احکامو) د رب د دوی او قائموي (اداء کوي سره له ټولو حقوقو لمونځ او کار د دې (په) مشورت (سره) وي په منځ د دوی کې او له ځینو د هغو شيانو چې ورکړي دي مونږ دوی ته نفقه کوي (په لاره د الله کې) .

نیک عمل

هغه کس چې نېک وي او نېک کارونه کوي له هغه

سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي : إِنَّ الْأَبْرَارَ
لَفِي نَعِيمٍ (13).¹

ترجمة : بېشکه چې ابرار (نېکان - مؤمنان)
خامخا په نعمتونو (د جنت) کې دي.

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا (5) عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ
يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا (6).²

ترجمة : بېشکه ابرار (نیکان) څښي (په جنت کې)
له جامونو د شرابو څښي چې وي گډ له هغو سره
(جنتي) کافور چینه چې څښي به له هغې څخه
(نېک) بندگان د الله چې بیا ئې به (مؤمنان) دغې
(چینې) لره (هر چېرته چې ئې خوښه وي بېول)
وفا کوي (ابرار) په (هغه) نذر سره (چې ئې
واجب کړی وي په طاعت د الله کې پر ځانونو خپلو
باندي) او ویريږي (ابرار) له هغې ورځې چې شر
ئې ښکاره او تیت (څرگند) دی .

لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (26).³

ترجمة : (شته) د پاره د هغو کسانو چې نيکي ئې
کړې (ایمان ئې راوړی) نيکه (جزا جنت) او
زیادت (له اجره هم شته) او نه به پټوي مخونه
د دوی هېڅ تور گرد او غبار او نه هېڅ ذلت
(رسوایي) دغه (محسانان) صاحبان د جنت دي ، هم
دوی په دغه جنت کې تل اوسېدونکي دي.

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ (15) آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ

1 سورة الانفطار

2 سورة الدهر

3 سورة يونس آية ٢٦

مُحْسِنِينَ (16).¹

ترجمة : بېشکه وېرېدونکي له الله او خان ساتونکي له معاصيو به په جنت کې وي او په چينو کې به وي يعني څښونکي د اوبو د دې چينو به وي اخيستونکي به وي هغو نعمتونو لره چې ورکړي وي دوی ته رب د دوی بېشکه دوی وو پخوا له دې څخه! يعني په دنيا کې محسان او نيکي کوونکي.

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ (22) .²

ترجمة : بېشکه نيکان خلک په نعمتونو (د جنت) کې دي.

روژه نيونکي

له هغه کسانو سره هم د جنت وعده کړل شوېده چې هغوی روژه نيسي الله فرمايي : إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا (35) .³

ترجمة : بېشکه چې مسلمان سړي او مسلمانې ښځې او مؤمنان سړي او مؤمنانې ښځې او اطاعت کوونکي سړي او اطاعت کوونکې ښځې او رښتين سړي او رښتينې ښځې او صبر کوونکي سړي او صبر کوونکې ښځې او وېرېدونکي عاجزي کوونکي سړي او وېرېدونکې عاجزي کونکې ښځې او خيرات کوونکي سړي او خيرات کوونکې ښځې او روژه نيونکي سړي

¹ سورة الذاريات

² سورة المطففين آية ٢٢

³ سورة الاحزاب

او روژه نیوونکې ښځې او حفاظت کوونکي سړي ځای
 د شهوت خپل (له پردیوښځو) او ساتونکې ښځې
 (ځای د شهوت خپل له پردیو سړیو) او ذکر
 کوونکي سړي الله لره (په ذکر) ډېر او ذکر
 کوونکې ښځې (الله لره په ذکر ډېر) تیار کړی دی
 الله دغو (لسو وارو جامع الطاعاتو سړیو او ښځو
 ته) مغفرت او اجر ډېر لوی (جنت) .

درواغ نه ويونكى

هغه انسان چې په رښتيا سره ايمان راوړي او بيا په خپلو خبرو کې درواغ نه وايي هر وخت رښتيا وايي له هغه سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي : **وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا** ¹ . (72)

ترجمة : او (بندگان د رحمن) هغه کسان دي چې نه حاضريري نه شامليري په باطلو کې (يا نه وايي شاهدي په دروغو او کله چې تيريږي پر چټي (بېکاره) کار نو تيريږي ځان ترې ساتونکي (مخ گرځوونکي له لغوي نه) .

بيا پدې پسې الله د څه نورو کسانو ذکر کوي او بيا د دوى ټولو په اړه مخکې فرمايي :

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا نَحِيَّةً وَسَلَامًا ² . (75)

ترجمة : دغه کسان (چې موصوف په دغو صفاتو سره وي) جزا به ورکړله شي دوى ته په هسکو مانيو (د جنت) په سبب د هغه چې صبر ئې کړى وو او وا به چولى شي پر دوى په دغه جنت کې تحية دعاء او سلام .

جهاد کوونکی

هغه ڪسان ڇي د الله په لاره ڪي جهاد ڪوي او د الله په لاره ڪي قرباني وركوي او د الله د دين د پورته ڪيدلو لپاره سعی او ڪوشش ڪوي له هغوی سره هم په قرآن ڪريم ڪي په مختلفو ځايونو ڪي د جنت وعده شوېده الله فرمايي : **إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعَدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أَوْفَى بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (111).**¹

ترجمة : بېشكه ڇي الله اخیستی دي له مؤمنانو څخه نفسونو د دوی او مالونه د دوی (ڇي خپل ځان او مال په جهاد ڪي قربان ڪوي) په عوض د دې ڇي بېشكه شته (په بدل د دغه جهاد) دوی ته جنت (دغه اخیستل په دې شان دي ڇي جنگونه ڪوي دوی په لاره د الله ڪي نو (كله) وژني مؤمنان دا (كفار) او (كله د كفارو له لوري) وژل كيږي دغه مؤمنان وعده ده په دغه (الله) باندې وعده حقه په توریت (تورات) ڪي او په انجيل ڪي او په قرآن ڪي او څوك دي ښه وفا كوونكي په وعدې خپلي سره له الله څخه (بلكه هېڅوك نشته) نو خوشاله شي تاسي (اې مؤمنانو) په بيع ستاسي باندې هغه ڇي معامله كړې ده تاسي له الله سره په هغې (بيع او شري سره) او دغه (بيعه ڇي ده) هم دغه بری دی ډېر لوی.

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَأُ وَنَصَرُوا أُولَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (74).²

ترجمة : او هغه ڪسان ڇي ايمان ئي راوړی دی او هجرت ئي كړی دی او جهاد ئي كړی دی په لاره د

¹ سورة التوبة

² سورة الانفال

الله کي او هغه کسان چي خای ئي ورکړی دی (مهاجرینو ته) او مددگاري ئي کړېده (له رسول الله ﷺ او مهاجرینو سره) دغه موصوف په دغو صفاتو سره هم دوی دي مؤمنان په حقه (رشتیا) سره دوی لره دی مغفرت او رزق نیک (د عزت چي جنت دی)

لَكِنَّ الرُّسُولَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ وَأُولَئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (88) أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (89).¹

ترجمة : لیکن رسول الله ﷺ او هغه کسان چي ایمان لرونکي دي له ده سره جهاد ئي وکړ په مالونو خپلو او ځانونو خپلو او دغه کسان هم دوی لره دي ښېگنې (فايدې) او دغه کسان هم دوی دي په مراد رسېدلي تيار کړی دی الله دوی ته جنتونه چي بهیږي له لاندې (د مایو او ونو) د هغو (څلور قسمه) ویالې تل به وي دوی په دغو (جنتونو) کي دغه (ننوتل د جنت) بری دی لوی (په نفس او شیطان) .

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابِ أَلِيمٍ (10) تَوْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذَلِكَ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ (11) يَغْفِرُ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلُكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِينَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (12).²

ترجمة : اې هغو کسانو چي ایمان ئي راوړی دی (یعني اې مؤمنانو) آيا دلالت وکړم تاسې ته (در وښیم تاسې ته) په هسې تجارت سودا گري چي نجات درکوي خلاصوي تاسې له عذاب دردناک (پس دغه تجارت او سودا گري کوئ چي هغه دا ده) ښه ټینګ محکم مضبوط اوسئ په ایمان باندي چي لرئ ئي په

الله باندې او په رسول الله ﷺ او جهاد کوئ تاسې (اې مؤمنانو له اعداء الله سره) په لاره د الله کې په اموالو خپلو سره او په نفسونو خپلو سره دغه خیر بهتر دی تاسې ته که چېرې یی تاسې چې پوهېږئ و به ښې (الله) تاسې ته گناهونه د تاسې او داخل به کړي تاسې جنتونو کې چې بهیري له لاندې (د ونو او ماڼیو) د هغو ویالې او (داخل به مو کړي) په ځایونو ښایسته پاکیزه وو کې په جنتونو د همېشه هستوګنې کې دغه (مغفرت او ادخال جنت ته) بری لوی دی .

خپل نفس ساتونکی

هغه مسلمان چې خپل نفس له خواهشاتو څخه را منع کوي او هغه خپلو خواهشاتو ته نه پریري دې کس ته هم جنت یاد کړل شوی دی الله فرمایي :
 وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ (40) فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ¹
 (41) .

ترجمة : بېشکه هغه چې له رب خپل نه وډار شي او منع کړي خپل نفس (له خواهشاتو ناروا وو) څخه بېشکه جنت ځای د ورتلو (د هغوی) دی .

د الله د حدونو ساتونکي

هغه کسان چې د الله د معلومو کړل شویو حدونو څخه نه تیريږي او د ټولو حدونو ساتنه کوي او خپل ځان ددې ذمه وار ګڼي چې باید د الله له معلومو کړل شویو حدونو څخه باید تېر نشي لدې کسانو سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمایي :
 النَّابِئُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ

وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ (112).¹

ترجمة : (دوی) توبه کوونکي دي عبادت کوونکي شکر کوونکي (الله ته په اخلاص) بي تعلق پاتي کېدونکي دي (له دنيوي مزو نه) رکوع کوونکي دي سجده کوونکي دي حکم کوونکي دي په بشپړتيا او منع کوونکي دي له بدو کارونو او ساتونکي دي د حدونو د الله (يعني د هغه د احکامو) او زېري ورکړه (اي محمده ﷺ) مؤمنانو ته (چې موصوف دي پدې صفاتو سره د جنت)

په خپله گواهي درېدونکي

هغه کسان چې رشتيا گواهي ورکوي او بيا په خپله گواهي باندې ټينگ دريري د هغه کسانو سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي : وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ (33) وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ (34) أُولَئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ (35).²

ترجمة : او هغه کسان چې په خپلو گواهي باندې ولاړ وو او هغه کسان چې د خپلو مونځونو ساتونکي وو همدا کسان به په جنت کې په عزت کې وي .

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا (72) وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا (73) وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَرْوَاحِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا فَرَّةً أَعْيُنَ وَاجْعَلْ لَنَا لِمَتَّقِينَ إِمَامًا (74) أُولَئِكَ يُجْزَوْنَ الْعُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا (75).³

ترجمة : او (بندگان د رحمن) هغه کسان دي چې نه حاضريري نه شامليري په باطلو کې (يا نه

1 سورة التوبة

2 سورة المعارج

3 سورة الفرقان

وايي شاهدي په دروغو او کله چې تيريري پر چټي
 (بېکاره) کار نو تيريري ځان ترې ساتونکي (مخ
 گرځوونکي له لغوي نه) او (بنديگان د رحمن) هغه
 کسان دي کله چې پند ورکړل شي دوی ته په
 آيتونو د رب د دوی نو نه نسکوريري پرې (لکه)
 کانه او رانده (بلکه سر په سجده ږدي آوري ئې
 او پرې عمل کوي) او هغه کسان دي چې وايي اې
 ربه زمونږ راکړه مونږ ته (په فضل خپل سره) له
 ښځو زمونږ څخه او له اولادو زمونږ څخه (هغه
 څوک چې) يخوالي د سترگو زمونږ پکې راځي او
 وگرځوه مونږ د پاره د متقيانو امام پېشوا دغه
 کسان (چې موصوف په دغو صفاتو سره وي) جزا به
 ورکړله شي دوی ته په هسکو مانيو (د جنت) په
 سبب د هغه چې صبر ئې کړی وو او وا به چولی شي
 پر دوی په دغه جنت کې تحية دعاء او سلام .

د کفارو سره دوستي نه کوونکي

هغه کسان چې کفار دي د الله او د هغه د رسول دښمنان دي هغه کسان چې له هغوی سره دوستي کوي الله هغه نه خوښوي او الله ته هغه مسلمان بنده خوښ وي چې د کفارو سره دښمني کوي او ددې کس سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمایي: لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ أُولَئِكَ حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (22).¹

ترجمة: او نه به مومي ته (اې محمده او نه ښائيږي چې بيا مومي) يو قوم چې ايمان ئې راوړی وي په الله او په ورځې آخري (د قيامت) چې دوستي به کوي دوی له هغه چا سره چې مخالفت کوي له الله او له رسول د دغه (الله) نه اگر که وي (دغه مخالفين) پلرونه د دوی او زامن د دوی يا وروڼه د دوی يا (نور قبيله) خپلوان د دوی دغه (قوم چې له اعداء الله سره دوستي نه کوي) ليکلي دي (الله) په زړونو د دوی کې ايمان او قوي کړی ئې دي دوی په غيبي فيض مدد له نژده خپل څخه (او قوي کړي قوت ورکړی دی الله دوی لره په روح رحمت نصرت خپل سره يا په نور رڼا د زړه يا په قرآن عظيم الشان سره) او داخل به کړي دوی (الله) په جنتونو کې چې بهيږي له لاندې د (ونو او مانيو د هغو (خلور قسمه) ويالې تل به وي دوی په هغو (جنتونو) کې راضي شو الله له دوی څخه (په طاعت سره) او راضي شول دوی له الله څخه (په موندلو د جنت) دغه (خلق) دي لښکر د الله ، واورئ ! خبر دار شئ ! چې بېشکه لښکر د الله چې دی هم دوی دي په مراد رسېدونکي

بريالايان (کامياب) .

شهيد

هغه کس چې د الله په لاره کې يې د شهادت لوړه مرتبه نصيب شي له هغوی سره هم په قرآن کريم کې د جنت وعده شوېده الله فرمايي : **وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَنْ يُضِلَّ أَعْمَالُهُمْ (4) سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ (5) وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَفَهَا لَهُمْ (6) .**¹

ترجمة : او هغه کسان چې وژل شوي دي په لاره د الله کې پس له سره به ضائع نه کړي الله عملونه د دوی زر به سمه لياره وښيي دوی ته (الله په دنيا او په آخرت کې) او ښه به کړي حال ددوی (په دارينو کې) او داخل به کړي (الله) دوی په جنت کې چې معلوم کړی دی (الله) دغه (جنت) دوی ته .

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعَدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أَوْفَى بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (111) .²

ترجمة : بېشکه چې الله اخیستی دي له مؤمنانو څخه نفسونه د دوی او مالونه د دوی (چې خپل ځان او مال په جهاد کې قربان کوي) په عوض د دې چې بېشکه شته (په بدل د دغه جهاد) دوی ته جنت (دغه اخیستل په دې شان دي چې جنګونه کوي دوی په لاره د الله کې نو (کله) وژني مؤمنان دا (کفار) او (کله د کفارو له لوري) وژل کېږي دغه مؤمنان وعده ده په دغه (الله) باندې وعده حقه په توریت (تورات) کې او په انجیل کې او په قرآن کې او څوک دي ښه وفا کوونکی په وعدې خپلې سره له الله څخه (بلکه هېڅوک نشته) نو

¹سورة محمد

²سورة التوبة

خوشاله شی تاسې (ای مؤمنانو) په بیع ستاسې باندې هغه چې معامله کړې ده تاسې له الله سره په هغې (بیع او شری سره) او دغه (بیعه چې ده) هم دغه بری دی ډېر لوی.

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنْتِي بَعْضُكُم مِّنْ بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُودُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ (195).¹

ترجمة : پس قبولې کړې دوی لره (دا دعاوې) رب د دوی (په دې شان چې) بېشکه زه نه ضائع کوم عمل د هېڅ عمل کونکي له تاسې نه نارینه وي (دا عمل کونکي) یا ښځه وي (ځکه چې) ځینې ستاسې دي له ځینو نورو (او ماته په مکافات کې ټول سره یو یی) او هغه کسان چې هجرت کړی دی دوی (له پاره د دین) او ایستلی شوي دي دوی له کورونو خپلو (د الله په لاره کې) او ضرر رسولی شوی دی دوی ته په لاره زما کې او جنگونه ئې کړي دي (له کفارو سره) او وژل شوي دي (په غزا کې) نو خامخا به لرې کړم له دوی نه گناهونه د دوی او خامخا به داخل کړم دوی په جنتونو کې چې بهیږي له لاندې د (مانیو او ونو د) هغو ویالې (جزا د نیکو به ورکړو مونږ دوی ته) په جزا ورکولو (نیکو) سره له نژده د الله او الله په نزد د ده دی ښه ثواب (نېکه جزا).

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ (169)
فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (170).²

ترجمة : او له سره گمان مه کوئ! (ای محمده یا

¹سورة آل عمران آية ١٩٥

²سورة آل عمران آية ١٦٩-١٧٠

اې سامعه !) پر هغو كسانو چې وژل شوي دي دوى په لاره د الله (جهاد او طاعت) كې د مړو (مړه نه دي) بلكه ژوندي دي په نزد د رب خپل رزق ورته وركول كيږي (له جنتي خوراكونو او خښاكونو څخه) په دې حال كې چې خوشحال دي دوى په هغه شي باندې چې وركړي دي دوى ته الله له فضله خپله او خوشاليري دوى (په راتلو دى) هغو كسانو چې لا نه دي رسېدلې دوى تر هغو پورې وروسته د دوى نه په دې شان سره چې نه به وي (هېڅ قسم) وېره په دوى باندې او نه به دوى هېچرې غمجن كيږي .

هغه چې زنا نه كوي

هغه كسان چې په سمه توگه ايمان راوړي او له زنا څخه ځان وساتي چې ډېر بد عمل دى له هغه كسانو سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي :
وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا (68) .¹

ترجمة : او (بندگان د رحمان) هغه كسان دي چې نه بولي سره له الله معبود بل او نه وژني دوى نفس هغه چې حرام كړي دي الله (وژل دهغه) مگر په حق سره او نه كوي دوى زنا او هرچا چې وكړه (يو له دغو دريو امهات الذنوب نه) نو ملاقات به وكړي وبه وينې جزاء د گناه خپلې.

په دې سورت كې ددې آية نه وروسته د څه نورو كسانو ذكر الله كړى دى بيا يو څو آيتونه وروسته فرمايي :
أُولَئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا (75) .²

ترجمة : دغه كسان (چې موصوف په دغو صفاتو سره

وي) جزا به ورکړله شي دوی ته په هسکو مانيو (د جنت) په سبب د هغه چې صبر ئې کړی وو او وا به چولی شي پر دوی په دغه جنت کې تحية دعاء او سلام .

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَفْوَاجِهِمْ حَافِظُونَ (5) .¹

ترجمة : او هغه (کسان هم کامياب شول) چې دوی فروجو (خايونو د شهواتو) خپلو لره ساتونکي دي .

پدې آيتونو کې الله د رښتينو مؤمنانو ذکر کوي او د يو څه مؤمنانو د ذکر څخه وروسته بيا الله فرمايي **أُولَئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ (10) الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (11)** .²

ترجمة : هم دغه (مؤمنان چې پورتنې ياد شوي شپږ نېک صفات ولري) هم دوی دي وارثان (لا ئقان نه نور څوک) هغه (وارثان) چې ميراث به اخلي (جنت د) فردوس دوی به په دغه (جنت الفردوس) کې تل پاتې کېدونکي وي.

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَفْوَاجِهِمْ حَافِظُونَ (29) إِلَّا عَلَى أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ (30) .³

ترجمة : او هغه کسان چې د خپلو فرجونو ساتنه يې کوله بغير له خپلو بيبيانو او خپلو مملوکو وينزو نه (له دوی سره جماع کول گناه نه ده) له دوی سره جنسي ضرورت پوره کوونکي په ملامتي کې نه دي .

په دې سورت کې ددې آية نه وروسته د څه نورو

¹سورة المؤمنون

²سورة المؤمنون

³سورة المعارج

کسانو ذکر الله کړی دی بیا یو څو آیته وروسته
فرمایي : **أُولَٰئِكَ فِي جَنَاتٍ مُّكْرَمُونَ** (35).¹

ترجمة : دا یاد کړل شوي کسان په جنتونو کې دي
په عزت کې .

هغه کسان چې د الله ذکر ډېر کوي له هغوی سره هم
د جنت وعده شوېده الله فرمایي : **إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ
وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ
وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ
وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ
وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ
اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا** (35).²

ترجمة : بېشکه چې مسلمان سړي او مسلماني ښځې
او مؤمنان سړي او مؤمناني ښځې او اطاعت
کوونکي سړي او اطاعت کوونکې ښځې او رښتین سړي
او رښتینې ښځې او صبر کوونکي سړي او صبر
کوونکې ښځې او وېرېدونکي عاجزي کوونکي سړي او
وېرېدونکې عاجزي کونکې ښځې او خیرات کوونکي
سړي او خیرات کوونکې ښځې او روژه نیوونکي سړي
او روژه نیوونکې ښځې او حفاظت کوونکي سړي ځای
د شهوت خپل (له پردیو ښځو) او ساتونکې ښځې
(ځای د شهوت خپل له پردیو سړیو) او ذکر
کوونکي سړي الله لره (په ذکر) ډېر او ذکر
کوونکې ښځې (الله لره په ذکر ډېر) تیار کړی دی
الله دغو (لسو وارو جامع الطاعاتو سړیو او ښځو
ته) مغفرت او اجر ډېر لوی (جنت) .

اسراف نه کوونکي

هغه کس چې اسراف نه کوي او کله چې مصرف کوي
صرف په هغه ځای کې مصرف کوي چې ضرورت یې وي

¹سورة الفرقان

²سورة الاحزاب

او بيا د ضرورت مطابق مصرف کوي لدې کسانو سره
هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي : وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ
مُعْرِضُونَ (3) .¹

ترجمة : او هغه (کسان هم کامياب شول) چې دوی
له ناکارو (بدو اقوالو او بدو افعالو) څخه مخ
گرځوونکي دي.

پدې آيتونو کې الله د رښتینو مؤمنانو ذکر کوي
او د یو څه مؤمنانو د ذکر څخه وروسته بيا الله
فرمايي أُولَئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ (10) الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ
(11) .²

ترجمة : هم دغه (مؤمنان چې پورتنی یاد شوي
شپږ نېک صفات ولري) هم دوی دي وارثان (لا ثقان
نه نور څوک) هغه (وارثان) چې میراث به اخلي
(جنت د) فردوس دوی به په دغه (جنت الفردوس)
کې تل پاتې کېدونکي وي.

مهاجر

هغه کس چې د الله د رضا لپاره هجرت وکوي هغه چې
یوازې د الله د رضا لپاره خپل وطن پرېږدي او د
خپل دین او ایمان د سلامت ساتلو او دین ته د
خدمت کولو په موخه بل وطن ته لاړ شي د هغه کس
سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي : فَاسْتَجَابَ لَهُمْ
رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أَضِيعُ عَمَلٌ مِّنْكُمْ مَّنْ ذَكَرَ أَوْ أَنْتَى بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضِ الَّذِينَ
هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُودُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأَكْفِرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ
حُسْنُ الثَّوَابِ (195) .³

¹سورة المؤمنون

²سورة المؤمنون

³سورة آل عمران آية ۱۹۵

ترجمة : پس قبولي کړې دوی لره (دا دعاوې) رب د دوی (په دې شان چې) بېشکه زه نه ضائع کوم عمل د هېڅ عمل کونکي له تاسې نه نارینه وي (دا عمل کونکي) یا ښځه وي (ځکه چې) ځينې ستاسې دي له ځينو نورو (او ماته په مکافات کې ټول سره يو يئ) او هغه کسان چې هجرت کړی دی دوی (له پاره د دين) او ايستلی شوي دي دوی له کورونو خپلو (د الله په لاره کې) او ضرر رسولی شوی دی دوی ته په لاره زما کې او جنگونه ئې کړي دي (له کفارو سره) او وژل شوي دي (په غزا کې) نو خامخا به لرې کړم له دوی نه گناهونه د دوی او خامخا به داخل کړم دوی په جنتونو کې چې بهیږي له لاندې د (مانیو او ونو د) هغو ویالې (جزا د نيکیو به ورکړو مونږ دوی ته) په جزا ورکولو (نیکو) سره له نږدې د الله او الله په نږدې د ده دی ښه ثواب (نېکه جزا) .

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَأُ وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (74) .¹

ترجمة : او هغه کسان چې ایمان ئې راوړی دی او هجرت ئې کړی دی او جهاد ئې کړی دی په لاره د الله کې او هغه کسان چې ځای ئې ورکړی دی (مهاجرینو ته) او مددگاري ئې کړېده (له رسول الله او مهاجرینو سره) دغه موصوف په دغو صفاتو سره هم دوی دي مؤمنان په حقه (رښتیا) سره دوی لره دی مغفرت او رزق نیک (د عزت چې جنت دی) .

توبه ایستونکي

هغه کسان چې د خپلو گناهونو څخه توبه وباسي او په خپلو تېرو گناهونو پېښمان او په

راتلونکې کې د نه کولو ټنډې عزم وکوي لدې کسانو سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمایي : يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُم جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَنْتُمْ لَنَا نُورٌ نَا وَاعْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (8) .¹

ترجمة : اې هغو کسانو چې ايمان ئې راوړی دی (يعني اې مؤمنانو!) توبه وباسئ تاسې الله ته توبه خالصه رښتيا د زړه له کومې اميد دی چې رب ستاسې وبه رږوي له تاسې ځنې گناهونه ستاسې او داخل به کړي تاسې هغو جنتونو ته چې بهيري له لاندې د (ونو او مانيو د) هغو (خلور قسمه) ويالې (دا ننه ايستل ستاسې دې جنت ته) په هغه ورځ کې چې وبه نه شرموي الله نبي او هغو کسانو لره چې ايمان ئې راوړی دی له هغه سره رڼا د دوی به ځغلي وړاندې د دوی څخه او په ښي خوا د دوی وبه وايي دوی اې ربه زمونږ پوره کړه باقي ولره مونږ لره رڼا زمونږ او وبښه مونږ لره (گناهونه زمونږ) بېشکه ته پر هر شي باندي (چې اراده وفرمايي) ښه قادر يې (چې ځيني هم دغه اتمام د نور او مغفرت دی)

قناعت کونکي

هغه کسان چې په خپلو شتو باندي قناعت کوي او کله چې مصرف کوي نو اسراف نه کوي او بخل نه کوي کله چې وويني يو څوک دده مال ته ضرورت لري په هغه باندي مصرف کوي ددې کسانو سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمایي : وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا (67) .²

ترجمة : او (بندگان د رحمن) هغه کسان دي چې کله نفقه ورکوي مال لگوي نو نه اسراف کوي او نه تنگي (او بخل) کوي او وي (دغه ورکړه د دوی) په مينځ د دغه (اسراف او بخل) کې ميانه حاله .

په دې سورت کې ددې آية نه وروسته د څه نورو کسانو ذکر الله کړی دی بيا يو څو آيتونه وروسته فرمايي : **أُولَئِكَ يُجْزَوْنَ الْعُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا** (75) .¹

ترجمة : دغه کسان (چې موصوف په دغو صفاتو سره وي) جزا به ورکړله شي دوی ته په هسکو مانيو (د جنت) په سبب د هغه چې صبر ئې کړی وو او وا به چولی شي پر دوی په دغه جنت کې تحية دعاء او سلام .

دعا کونکي

هغه کسان چې له الله نه دعا گانې غواړي دې کسانو سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي : **وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا** (74) **أُولَئِكَ يُجْزَوْنَ الْعُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا** (75).²

ترجمة : او (بندگان د رحمن) هغه کسان دي چې وايي اي ربه زمونږ وبښه مونږ ته (په فضل خپل سره) له ښځو زمونږ څخه او له اولادو زمونږ څخه (هغه څوک چې) يځوالی د سترگو زمونږ پکې راځي او وگرځوه مونږ د پاره د متقيانو امام پېشوا دغه کسان (چې موصوف په دغو صفاتو سره وي) جزا به ورکړله شي دوی ته په هسکو مانيو (د جنت) په سبب د هغه چې صبر ئې کړی وو او وا به چولی

¹ سورة الفرقان

² سورة الفرقان

شي پر دوی په دغه جنت کې تحية دعاء او سلام .

په سحر کې بښنه غوښتونکي

الله ته دا عمل ډېر خوښ دی چې یو بنده د شپې په آخره برخه کې راپاڅیږي او له الله نه د خپلو گناهونو بښنه وغواړي هغه کسان چې دا عمل کوي له هغوی سره هم د جنت وعده شویده الله فرمایي :
قُلْ أُوذِيكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذَلِكُمْ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ (15) الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (16) الصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَالْقَانِتِينَ وَالْمُنْفِقِينَ وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ (17).¹

ترجمة: ووايه (اې محمده ﷺ دوی ته) آيا خبر درکړم تاسې ته په بهتر (خيز) له دغو (شپږو وارو دنيوي خوندونو؟) (شته) له پاره د هغو کسانو چې متقيان دي (د الله احکام عملي کوي) په نزد د رب د دوی جنتونه چې بهیږي لاندې له ماڼیو او ونو د هغوی ویالې چې تل به وي (دوی) په دې جنتونو کې او ښځې به وي پاکې او رضا مندي (لویه به وي له کریمه ربه دوی ته) له جانبه د الله او الله ښه لیدونکی دی (عالم په پټو او ښکاره احوالو) د بندگانو (نو هرچا ته به د خپل عمل جزا ورکړي) هغه (متقيان) چې وایي (اې ربه زمونږه! بې‌شکه مونږ ایمان راوړی دی (په ټولو مؤمن به شيانو باندې) نو مغفرت وکړه مونږ ته د گناهونو زمونږ او وساته مونږ له عذابه د اور (د دوزخ) هسې متقيان چې صبر کوونکي دي او صادقان دي او په ځای راوړونکي دي د حکم د الله او خیرات کونکي دي په رضا د الله او مغفرت غوښتونکي دي په آخر د شپو کې.

نفس مطمئنة

هغه مؤمن چې د خپل علم او تقوى په بنياد باندې هغه مقام ته ورسېږي چې نفس مطمئنه ورته ويل كيږي له هغوى سره هم د جنت وعده شوېده د نفس مطمئنه په تعريف كې علماء كرام فرمايي : **النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ هِيَ النَّفْسُ الرَّاضِيَةُ فَلَا تَفْرَحُ عِنْدَ الْمَلَمَاتِ وَلَا تَصْخَبُ فِي الْمَصَائِبِ وَلَا تَغَالِي فِي الْفَرْحِ وَالْبِهْجَةِ .** بل هي ساكنه تعريفت على حقيقة الدنيا وحجمها **فَتَلَقَّتْ** بالاخره النفس **المطمئنة هي المؤمنة المطمئنة بثواب الله، رَضِيَتْ عَنْ اللَّهِ وَرَضِيَ عَنْهَا، أَمَرَ بِقَبْضِهَا فَأَدْخَلَهَا الْجَنَّةَ وَجَعَلَهَا مِنْ عِبَادِهِ الصَّالِحِينَ .**

ترجمة : نفس مطمئنة هغه نفس دى چې له الله نه په هر حالت كې راضي وي كله چې ورباندې مشكلات راشي نو شكايت نه كوي او نه وير كوي او كله چې خوشحال شي نو لهويات نه كوي بلكه هغه خاموش وي د دنيا په اصلي ماهيت باندې پوه وي او هغه په آخرت پورې تړلى وي مطمئن او مؤمن نفس وي د الله په ثواب باندې مطمئن وي له الله نه راضي وي او الله د هغه نه راضي وي كله چې د الله خوښه شي د هغه په قبض كولو باندې امر وكوي او جنت ته يې ننباسي او د الله له نيكانو بندگانو څخه يې كړي .

دا نفس به هم جنت ته ځي الله فرمايي : **يَا أَيُّهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ (27) ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً (28) فَأَدْخُلِي فِي عِبَادِي (29) وَأَدْخُلِي جَنَّتِي (30) .**¹

ترجمة : اې نفس آرام نيونكيه (په ذكر زما شكر كيونكيه په نعمت زما او صبر كيونكيه په زحمت چې دركول كيږي زما له لوري) وگرځه په طرف د رب خپل حال دا چې راضي خوښ به ئې ته (له الله څخه او الله) راضي خوښ (به وي له تا

څخه) بيا ننوزه په (نيکانو) بندگانو زما کې او ننوزه په جنت زما کې (سره له نورو مقربانو).

صبر کوونکي

هغه کسان چې په مشکلاتو کې صبر کوي او څه چې ور پېښېږي دا د حق الله له لوري بولي او د هغې په اړه نورو خلکو ته شکايت نه کوي او نه د مصيبت په وخت کې هغه کارونه کوي چې الله او د هغه رسول ﷺ ورڅخه منع کړېده دې صبر کونکو ته هم د جنت وعده ورکړل شوېده الله فرمايي: **وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُم مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نِعَمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ (58) الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ (59)**.

ترجمة: او هغه (کسان) چې ايمان ئې راوړی دی او کړي ئې دي ښه (عملونه) خامخا ځای به ورکړو دوی ته له جنته په جگو مانيو کې چې بهیږي لاندې له (ونو او مانيو د) هغو ويالې (څلور) حال دا چې تل به اوسېږي په دغو (مانيو کې) ښه دی اجر د دغو عمل کوونکو (دا جنت) هغه (عمل کوونکي) چې صبر ئې کړی (په طاعت او مصيبت او له معصیت نه) او (خاص) په رب خپل توکل کوي.

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ (17) أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ (18).²

ترجمة: بيا وي (دغه ازاد کوونکي طعام ورکوونکي) له هغو کسانو چې ايمان ئې راوړی دی او وصيت کوي يو له بله په صبر سره (په طاعت او مصيبت او له معصيته) او وصيت کوي يو له

بله په مهرباني او شفقت سره دغه (صابران مهربانان مؤمنان) اصحاب خاوندان د ښي طرف د لوټي برخې دي.

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا نَحِيَّةً وَسَلَامًا (75)¹

ترجمة : دغه کسان (چې موصوف په دغو صفاتو سره وي) جزا به ورکړله شي دوی ته په هسکو مانيو (د جنت) په سبب د هغه چې صبر ئې کړی وو او وا به چولی شي پر دوی په دغه جنت کې تحية دعاء او سلام .

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ (22) جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ (23) .²

ترجمة : او هغه کسان چې صبر کوي لپاره د طلب د رضا د رب خپل (په مالي او جاني مصائبو يا د شرعي يا د جهاد په تکالیفو) او قائموي (سم اداء کوي له ټولو حقوقو په ترتيب سره) مونځ او نفقه کوي (لگوي په لاره د الله کې) ځينې له هغه (حلالو اموالو) نه چې ورکړي دي مونږ دوی ته هم په پټه او هم په ښکاره (خفيته او ظاهراً) او دفع کوي دوی په نيکي سره بدي دغه کسان موصوف په دغو صفاتو شته دوی ته (ښه) عاقبت د دار (د آخرت چې) جنتونه دي د تل اوسېدلو چې ننوزي به دوی په هغو کې او (ننوزي به پکې بل) اولادې د دوی (اگر که عمل ئې د هغو په درجه نه وي) او فرستې به ور ننوزي پر دوی (سره له تحائفو او زيري او رضوان) له هرې دروازې (مانيو د دوی ته) .

¹ سورة الفرقان

² سورة الرعد آية ۲۲-۲۳

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا (12) .¹

ترجمة : او جزاء به ورکړي دوی ته (الله) په سبب د صبر د دوی (ټول نعماء د) جنت او (جامې) ورېښمینی.

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ (11).²

ترجمة : مگر هغه کسان چې صبر کوي او کوي ښه عملونه دغه کسان شته دوی ته مغفرت او اجر ډېر لوی .

وړيو ته خوراک ورکونکی

هغه کس چې وړيو انسانانو ته خوراک ورکوي او په هغوی باندې خيراتونه او صدقې کوي له هغوی سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي: وَيُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا (8) إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكْرًا (9) إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا (10) فَوَقَاهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً وَسُرُورًا (11) وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا (12) .¹

ترجمة : او (نېکان) ورکوي طعام خواړه پر محبت مينې د دغه (الله يا د طعام) مسکين اړ (مجبور) ته او يتيم پلار مړي ته او اسير بندې ته وايي نيکان بېشکه چې مونږ طعام خواړه درکوو تاسې ته خاص د پاره (د ثواب) د الله نه غواړو مونږ له تاسې څخه جزاء بدل او نه شکر ايستل بېشکه مونږ وېرېزو له ربه خپله له عذابه د ورځې له يوه لورې د ډېرې غمجنې او له بله پلوې د ډېرې سختې نه نو وبه ساتي دوی لره الله (په سبب د حسناتو د دوی) له شره سختې د دغې ورځې او وربه کړي دوی ته تازگي او حسن د مخونو (او خوشالي د زړونو) او جزا به ورکړي دوی ته (الله) په سبب د صبر د دوی (ټول نعماء د) جنت او (جامې) ورېښمينې.

ڊپر ذکر کونکي

هغه ڪسان ڇي د الله ذکر ڊپر کوي له هغوی سره هم د جنت وعده شوبده الله فرماي: **إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا (35).**¹

ترجمة: بيشڪه ڇي مسلمان سري او مسلماني بڻجي او مؤمنان سري او مؤمناني بڻجي او اطاعت کونکي سري او اطاعت کونکي بڻجي او رشتين سري او رشتيني بڻجي او صبر کونکي سري او صبر کونکي بڻجي او وڀرڊونکي عاجزي کونکي بڻجي او خيرات کونکي سري او خيرات کونکي بڻجي او وڀرڊونکي عاجزي کونکي بڻجي او خيرات کونکي سري او روزه نيونکي بڻجي او حفاظت کونکي سري خاي د شهوت خپل (له پرديو بڻجو) او ساتونکي بڻجي (خاي د شهوت خپل له پرديو سريو) او ذکر کونکي سري الله لره (په ذکر) ڊپر او ذکر کونکي بڻجي (الله لره په ذکر ڊپر) تيار کري دى الله دغو (لسو وارو جامع الطاعاتو سريو او بڻجو ته) مغفرت او اجر ڊپر لوى (جنت) .

نذر پوره کونکي

هغه کسان چې څه نذر په ځان ومني او هغه پوره کړي دا نذر پوره کول هم الله ته يو خوښ عمل دی او لدې عمل کونکي سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي : **إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا (5) عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا (6) يُوفُونَ بِالْأَنْذَرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا (7)** .¹

ترجمة : بېشکه ابرار (نيکان) څښي (په جنت کې) له جامونو د شرابو څنې چې وي گډ له هغو سره (جنتي) کافور چينه چې څښي به له هغې څخه (نېک) بندگان د الله چې بيا ئې به (مؤمنان) دغې (چينې) لره (هر چېرته چې ئې خوښه وي په بېولو سره) وفا کوي (ابرار) په (هغه) نذر سره (چې) ئې واجب کړی وي په طاعت د الله کې پر ځانونو خپلو باندې) او ويريزي (ابرار) له هغې ورځې چې شر ئې ښکاره او تيت (څرگند) دی .

عبادت کونکي

هغه کسان چې د الله عبادت کوي او په هر قسم حالاتو کې د الله عبادت ورڅخه نه پاتې کيږي له هغوی سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي : **لَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنْ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ (16) فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءُ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (17)** .²

ترجمة : لرې کېږي ډډې د دوی له ځایونو د خوب (د پاره د تهجد) بولي دوی رب خپل (پټ له خلقو نه) له وېرې (د قهره د الله نه) او له طمعي (د رحمت د ده نه) او ځينې له هغو مالونو

¹ سورة الدهر (الانسان)

² سورة السجدة

چې ورکړي دي مونږ دوی ته لگوي (ئې په لاره د الله کې) پس نه دی معلوم هېڅ نفس ته (نه فرېستی او نه نبي ته) هغه شی چې پټ کړل شوی دی دوی ته له یخوالي د سترگو نه د پاره د جزاء د هغه عمل چې وو دوی چې کاوه به یې (پټ) .

التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ (112).¹

ترجمة : (دوی) توبه کوونکي دي عبادت کوونکي شکر کوونکي (الله ته په اخلاص) بې تعلق پاتې کېدونکي دي (له دنيوي مزو نه) رکوع کوونکي دي سجده کوونکي دي حکم کوونکي دي په شېګڼو او منع کوونکي دي له بدو کارونو او ساتونکي دي د حدونو د الله (يعني د هغه د احکامو) او زېری ورکړه (اې محمده ﷺ) مؤمنانو ته (چې موصوف دي پدې صفاتو سره د جنت)

په بل ځای کې په سورة فرقان کې د څو کسانو لپاره جنت یاد کړل شوی دی یوه ډله له هغوی نه هغه کسان دي چې هغوی عبادت کوي الله فرمایي :
وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا (64) .²

ترجمة : او (بندگان د رحمن) هغه کسان دي چې شپه تېروي رب خپل ته سجده کوونکي او درېدونکي.

بيا د څه نورو کسانو د يادولو نه وروسته الله فرمایي :
أُولَئِكَ يُجْزَوْنَ الْعُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا (75)³

1 سورة التوبة

2 سورة فرقان

3 سورة الفرقان

ترجمة : دغه کسان (چې موصوف په دغو صفاتو سره وي) جزا به ورکړله شي دوی ته په هسکو مانيو (د جنت) په سبب د هغه چې صبر ئې کړی وو او وا به چولی شي پر دوی په دغه جنت کې تحية دعاء او سلام .

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ (15) آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُحْسِنِينَ (16) كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ (17) .¹

ترجمة : بېشکه وېرېدونکي له الله او ځان ساتونکي له معاصيو به په جنت کې وي او په چينو کې به وي يعني څښونکي د اوبو د دې چينو به وي اخيستونکي به وي هغو نعمتونو لره چې ورکړي وي دوی ته رب د دوی بېشکه دوی وو پخوا له دې څخه! يعني په دنيا کې محسنان او نيکي کوونکي وو به دوی (په دغه وصف) چې په لږ برخه د شپې کې به اوده کېدل او په اکثره د شپې کې به يې عبادت کاوه .

آمر بالمعروف ناهي عن المنکر

هغه کس چې خلکو ته په نېکو کارونو باندې امر کوي او له بدو کارونو څخه يې منع کوي او پدې سره يې مطلب د الله رضا وي دا الله ته ډېر گران او خوښ عمل دی څوک چې دا کار کوي له هغوي سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي : وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (71) وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (72) .²

¹ سورة الذاريات

² سورة التوبة

ترجمة : او سري مؤمنان او ښځې مؤمنانې ځينې د دوی دوستان دي د ځينو نورو (او په ايمان کې ټول سره يو شان دي) حکم کوي دوی په نيکيو (چې د الله او د رسول اطاعت دی) او منع کوي له بديو چې (د الله او د رسول نه مخالفت دی) او دروي (له ټولو حقونو سره سم اداء کوي) مونځ او ورکوي دوی زکات او حکم مني د الله او (حکم مني) د رسول الله ﷺ دغه کسان ژر به رحم وکړي په دوی الله بېشکه چې الله ښه غالب قوي دی (د حکمونو په جاري کولو کې) ښه د حکمت خاوند (چې هر کار په تدبير او مصلحت سره کوي) وعده کړېده الله له نارينه وو مؤمنانو او له ښځو مؤمناتو سره د جنتونو چې بهيري له لاندې (د مانيو او ونو) د هغو (څلور قسمه) ويالې تل به وي دوی په دغو (جنتونو) کې او (وعده کړې ده الله) د ځايونو پاکو (چې ثابت دي) په جنتونو د تل اوسېدلو کې او رضاء له (جانبه د) الله ډېره لويه ده (له جنتونو او نعمتونو او نورو څخه) دغه (رضاء د الله) هم دغه بری دی ډېر لوی.

التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ (112).¹

ترجمة : (دوی) توبه کوونکي دي عبادت کوونکي شکر کوونکي (الله ته په اخلاص) بې تعلق پاتي کېدونکي دي (له دنيوي مزو نه) رکوع کوونکي دي سجده کوونکي دي حکم کوونکي دي په ښېگڼو او منع کوونکي دي له بدو کارونو او ساتونکي دي د حدونو د الله (يعني د هغه د احکامو) او زېری ورکړه (ای محمده ﷺ) مؤمنانو ته (چې موصوف دي پدې صفاتو سره د جنت)

مهاجرین او انصار

د اسلام په شروع کې چې له هر لوري نه اسلام او مسلمانانو ته سختي وه په هغه وخت کې چې چا د خپل دین د ساتنې لپاره هجرت کړی دی او هغه کسانو چې لدې مهاجرینو او مجاهدینو سره ئې مرسته کړېده له هغوی سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمایي : **وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَأُ وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (74).**¹

ترجمة : او هغه کسان چې ایمان ئې راوړی دی او هجرت ئې کړی دی او جهاد ئې کړی دی په لاره د الله کې او هغه کسان چې خای ئې ورکړی دی (ماجرینو ته) او مددگاري ئې کړېده (له رسول الله او مهاجرینو سره) دغه موصوف په دغو صفاتو سره هم دوی دي مؤمنان په حقه (رښتیا) سره دوی لره دی مغفرت او رزق نیک (د عزت چې جنت دی) .

وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (100).²

ترجمة : او هغه وړاندني اولني (ایمان لرونکي) له مهاجرینو نه او له انصارو نه او (نور) هغه کسان چې متابعت کړی دی دوی د (سابقانو) په احسان (نیکي) سره راضي شوی دی الله له دوی نه (په قبول د طاعت سره) او راضي شوي دي دوی له الله نه (په اعطاء د نعمت) او تیار کړی دی (الله) دوی ته جنتونه چې بهیري لاندې د (ونو او مانیو د) دوی (خلور قسمه) ویالې چې تل به وي دوی په هغو کې همېشه ، دغه (رضا او جنت) بری دی ډېر

¹ سورة الانفال

² سورة التوبة

توکل کونکي

هغه کسان چې په الله باندې توکل کوي له هغوی سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمایي : **وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نِعَمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ (58) الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ (59)** .¹

ترجمة : او هغه (کسان) چې ایمان ئې راوړی دی او کړي ئې دي ښه (عملونه) خامخا ځای به ورکړو دوی ته له جنته په جگو مانیو کې چې بهیږي لاندې له (ونو او مانیو د) هغو ویالې (څلور) حال دا چې تل به اوسیږي په دغو (مانیو کې) ښه دی اجر د دغو عمل کوونکو (دا جنت) هغه (عمل کوونکي) چې صبر ئې کړی (په طاعت او مصیبت او له معصیت نه) او (خاص) په رب خپل توکل کوي.

فَمَا أَوْتِيتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ (36) .²

ترجمة : پس هغه چې درکړل شوي دي تاسې ته (اې مخاطبانو) له څه خیزه (لکه اسباب د دنیا) لږ خسیس ده (چې زائلېږي) او هغه ثواب چې په نزد د الله دی خیر او غوره او ډېر باقي پاتې کېدونکی دی د پاره د هغو کسانو چې ایمان ئې راوړی دی او (خاص) پر رب خپل توکل کوي دوی.

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ (2) الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ (3)

¹ سورة العنكبوت

² سورة الشورى

أُولَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (4).¹

ترجمة : بېشكه خبره هم داده چې حقاني مؤمنان هغه كسان دي چې كله ياد كړل شي (دوى ته نوم د) الله نو ويريري زړونه د دوى او كله چې ولوستى شي پر دوى باندې آيتونه د الله نو زياتوي دغه (آيتونه) دوى لره ايمان (د دوى) او پر رب (پالونكي) خپل باندې توكل (اعتماد) كوي دوى (دوى) هغه مؤمنان دي چې قائموي (سم اداء كوي سره له ټولو حقونو) د دوى مونځ او له ځينې د هغه ماله چې وركړى دى مونږ دوى ته نفقه كوي (لگوي په لاره د الله كې) دغه كسان هم دوى دي مؤمنان په حقه سره شته دوى ته درجې په نزد د رب د دوى او مغفرت (بښنه) او رزق نېك (د عزت) .

د الله د رضا لپاره مصرف كاونكى

هغه كس چې د الله د رضا د حاصلولو لپاره خپل مال مصرف كوي او د الله په لاره كې مصرف كوي له هغه سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي : وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ (16) فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (17).²

ترجمة : او ځينې له هغو مالونو چې وركړي دي مونږ دوى ته لگوي (ئې په لاره د الله كې) پس نه دى معلوم هېڅ نفس ته (نه فرښتي او نه نبي ته) هغه شى چې پټ كړل شوى دى دوى ته له يخوايي د سترگو نه د پاره د جزاء د هغه عمل چې وو دوى چې كاوه به يې (پټ) .

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ (15) أَخْذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ

مُحْسِنِينَ (16) كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ (17) وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ (18) وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ (19).¹

ترجمة : بېشکه وېرېدونکي له الله او خان ساتونکي له معاصيو به په جنت کې وي او په چينو کې به وي يعني څښونکي د اوبو د دې چينو به وي اخيستونکي به وي هغو نعمتونو لره چې ورکړي وي دوی ته رب د دوی بېشکه دوی وو پخوا له دې څخه ! يعني په دنيا کې محسان او نيکي کوونکي وو به دوی (په دغه وصف) چې په لږ برخه د شپې کې به اوده کېدل او په اکثره د شپې کې به يې عبادت کاوه او په وخت د گهيځ (سحر وختي) کې دوی مغفرت غوښت له الله نه د گناهونو خپلو او په مالونو د دوی کې حق او برخه وه سوالگر لره او صبر کوونکي لره (يعني مسکين سوال نه کونکي لره).

إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَاعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ (18).²

ترجمة : بېشکه خيرات ورکوونکي سړي او خيرات ورکوونکي ښځې او هغه څوک چې قرضونه يې کړي دي له الله سره قرض نیک دوه چنډ به کړل شي دوی ته (ثواب د قرض د هغه) او وي به دوی ته اجر ثواب ډېر لوی (چې جنت دی).

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَذَرُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ (22) جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِّن كُلِّ بَابٍ (23) سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ (24).³

ترجمة : او هغه کسان چې صبر کوي لپاره د طلب

¹ سورة الذاريات

² سورة الحديد آية ١٨

³ سورة الرعد

د رضا د رب خپل (په مالي او جاني مصائبو يا د شرعي يا د جهاد په تكاليفو) او قائموي (سم اداء كوي له ټولو حقوقو په ترتيب سره) مونځ او نفقه كوي (لگوي په لاره د الله كې) ځينې له هغه (حلالو اموالو) نه چې وركړي دي مونږ دوى ته هم په پټه او هم په ښكاره (خفيته او ظاهراً) او دفع كوي دوى په نيكي سره بدي دغه كسان موصوف په دغو صفاتو شته دوى ته (ښه) عاقبت د دار (د آخرت چې) جنتونه دي د تل اوسېدلو چې ننوزي به دوى په هغو كې او (ننوزي به پكې بل) اولادې د دوى (اگر كه عمل ئې د هغو په درجه نه وي) او فرشتې به ور ننوزي پر دوى (سره له تحائفو او زيري او رضوان) له هرې دروازې (مانيو د دوى ته او ورته به وايي چې) سلامتيا د وي پر تاسې په سبب د صبر كولو ستاسې (په طاعت او مصيبت او له معصيته) نو ښه عاقبت د دار (د آخرت عاقبت د تاسې دى) .

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا (35).¹

ترجمة : بېشكه چې مسلمان سړي او مسلمانې ښځې او مؤمنان سړي او مؤمنانې ښځې او اطاعت كوونكي سړي او اطاعت كوونكې ښځې او رښتين سړي او رښتينې ښځې او صبر كوونكي سړي او صبر كوونكې ښځې او وېرېدونكي عاجزي كوونكي سړي او وېرېدونكي عاجزي كونكې ښځې او خيرات كوونكي سړي او خيرات كوونكې ښځې او روژه نيوونكي سړي او روژه نيوونكې ښځې او حفاظت كوونكي سړي ځای د شهوت خپل (له پرديوښځو) او ساتونكې ښځې (ځای د شهوت خپل له پرديو سړيو) او ذكر كوونكي سړي الله لره (په ذكر) ډېر او ذكر

کوونکې ښځې (الله لره په ذکر ډېر) تیار کړی دی
الله دغو (لسو وارو جامع الطاعاتو سړیو او ښځو
ته) مغفرت او اجر ډېر لوی (جنت) .

هغه کس چې کبر نه کوي

هغه رښتونی مؤمن چې هر وخت یې په نفس کې
عاجزي وي او کبر نه کوي له هغه سره هم د جنت
وعدده شوېده الله فرمایي: **وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ (15) تَتَجَافَى
جُنُوبَهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ (16)
فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءِ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (17)** .¹

ترجمة: او دوی تکبر نه کوي لري کېږي ډډې د
دوی له ځایونو د خوب (د پاره د تهجد) بولي
دوی رب خپل (پټ له خلقو نه) له وېرې (د قهره
د الله نه) او له طمعي (د رحمت د ده نه) او
ځینې له هغو مالونو چې ورکړي دي مونږ دوی ته
لگوي (ئې په لاره د الله کې) پس نه دی معلوم
هیڅ نفس ته (نه فرشتې او نه نبي ته) هغه شی
چې پټ کړل شوی دی دوی ته له یخوالي د سترگو
نه د پاره د جزاء د هغه عمل چې وو دوی چې
کاوه به یې (پټ) .

د الله ډېر حمد ویونکي

هغه کسان چې د الله حمد وایي له هغوی سره هم د
جنت وعدده شوېده الله فرمایي: **التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ
السَّائِحُونَ الرَّاکِعُونَ السَّاجِدُونَ الْأَمْرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ (112)** .²

ترجمة: (دوی) توبه کوونکي دي عبادت کوونکي
شکر کوونکي (الله ته په اخلاص) بې تعلق پاتې

¹ سورة السجدة

² سورة التوبة

کېدونکي دي (له دنيوي مزو نه) رکوع کوونکي دي سجده کوونکي دي حکم کوونکي دي په ښېگڼو او منع کوونکي دي له بدو کارونو او ساتونکي دي د حدونو د الله (يعني د هغه د احکامو) او زېږی ورکړه (اې محمده ﷺ) مؤمنانو ته (چې موصوف دي پدې صفاتو سره د جنت)

په زمکه کې فساد نه کوونکي

هغه کسان چې اصلاح کوونکي وي او په زمکه کې د فساد کولو هڅه نه کوي او په زمکه کې فساد نه کوي او هغه کسان چې په زمکه کې خپل ځان لوړ نه گڼي د هغه کسانو سره هم د جنت وعده شوېده الله فرمايي: **تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ** (83).¹

ترجمة: دغه کور د آخرت (چې جنت دی) ورکوي مونږ دا د پاره د هغو کسانو چې نه لرې اراده د لویي (او تکبر) په زمکه کې او نه فساد ظلم کوي (پر خلقو) او عاقبت ښه خاتمه د پاره د پرهیز کارانو ده.

ډېرې نیکي کوونکي

هغه کس چې په قیامت کې یې د نیکیو تله درنده شي او نېک علمونه یې تر گناهونو درانده شي هغه کسان به هم جنت ته ځي الله فرمايي: **فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ (6) فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ (7).**²

ترجمة: او هغه چې درنده شي تله یې (د نېکو عملونو) هغه به پداسې عیش کې وي چې خوشحالونکي به وي (دی به پکې خوشحال وي).

¹ سورة القصص

² سورة القارة

امانت او وعده ساتونکي

هغه کسان چې د خلکو په امانتونو کې خیانت نه کوي او خلکو ته د هغوی امانتونه په سمه توګه سپاري او له چا سره چې عهد وکوي د هغه هم ساتنه کوي او په وعدو کې یې وفایي او خیانت نه کوي لدې کسانو سره هم د جنت وعده شوېده لله فرمایي : **وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ (32) وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ (33) وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ (34) أُولَئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ (35)** .¹

ترجمة : او هغه کسان هم بې صبره او حارصین نه دي چې دوی امانتونو خپلو لره او وعدو خپلو لره ساتونکي دي (او په سر ئې رسوي) او هغه کسان چې هم دوی په شاهدي خپلې باندې سم ولاړ وي (نه یې پټوي او نه پکې کمښت یا زیادت کوي) او هغه کسان چې هم دوی پر مانځه خپل باندې ساتنه کوي (په خپلو وختونو یې اداء کوي) دغه کسان (چې موصوف په پورتنیو آتو صفاتو دي) په جنتونو کې به وي عزتمن .

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ (8) وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ (9) أُولَئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ (10) الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (11) .²

ترجمة : او هغه (کسان هم کامیاب شول) چې دوی امانتونه خپلو لره او عهدونو خپلو ته (که د خالق وي که د مخلوق) رعایت کوونکي دي (چې بیوفایي او خیانت پکې نه کوي) او هغه کسان چې دوی همېشه پر مونځونو خپلو ساتنه کوي (چې تل یې سم اداء کوي سره له ټولو حقونو) هم دغه (مؤمنان چې پورتنی یاد شوي شپږ نېک صفات

¹ سورة معارج

² سورة المؤمنون آية ۸-۱۱

ولري) هم دوی دي وارثان (لا ئقان نه نور څوک)
 هغه (وارثان) چې میراث به اخلي (جنت د) فردوس
 دوی به په دغه (جنت الفردوس) کې تل پاتې
 کېدونکي وي.

هغه کسان چې په احاديثو کې ورته جنت ياد کړل شوی دی :

د يني طالب

هغه کس چې د علم په طلب پسې سفر کوي رسول الله ﷺ د هغه کس لپاره هم جنت ياد کړی دی رسول الله ﷺ فرمايي : وَمَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَلْتَمِسُ فِيهِ عِلْمًا سَهَّلَ اللَّهُ لَهُ بِهِ طَرِيقًا إِلَى الْجَنَّةِ ، وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللَّهِ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ ، وَيَتَذَكَّرُونَهُ بَيْنَهُمْ إِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ ، وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ ، وَحَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ ، وَذَكَرَهُمُ اللَّهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ ، وَمَنْ بَطَأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرَعْ بِهِ نَسْبُهُ))¹.

ترجمة : څوک چې په يوه لاره باندې لاړل او پدې لاره کې يې د علم طلب کاوه الله به ده ته جنت ته لاره اسانه کړي کوم قوم چې په کوم کور کې را ټول شي د الله د کتاب تلاوت کوي او هغه په خپلو مينځونو کې يو بل ته تدريس کوي په هغوی باندې سکينة نازلېږي او هغوی په رحمت کې پټېږي ملائک په هغوی احاطه کوي او الله يې په خپل مجلس کې يادوي څوک چې د خپل عمل په واسطه وروسته شي د هغه نسب يې نشي مخکې کولی .

د جومات جوړونکي

هغه څوک چې د الله د رضا لپاره لوی يا وړوکی جومات جوړ کړي او صرف پدې نيت يې جوړ کړي چې دلته به خلک د الله عبادت کوي رسول الله ﷺ له ده سره هم د جنت وعده کړېده رسول الله ﷺ فرمايي : مَنْ بَنَى مَسْجِدًا يَبْتَغِي بِهِ وَجْهَ اللَّهِ بَنَى اللَّهُ لَهُ مِثْلَهُ فِي الْجَنَّةِ .²

ترجمة : چا چې جومات جوړ کړو او پدې سره يې د

الله رضا مطلب وه الله به ورته همداسې كور په جنت كې جوړ كړي .

د هر اوداسه نه وروسته مونځ كوونكي

هغه كس چې كله هم د شپې او يا د ورځې اودس وكوي دوه ركعته نفل كوي هغه هم جنت ته ځي رسول الله ﷺ حضرت بلال ته وويل : يَا بَلَالُ حَدِّثْنِي بِأَرْجَى عَمَلٍ عَمِلْتَهُ فِي الْإِسْلَامِ ، فَإِنِّي سَمِعْتُ ذَكَرَ نَعْلِكَ بَيْنَ يَدَيَّ فِي الْجَنَّةِ .

ترجمة : اې بلاله ماته هغه عمل وشايه چې ستا ورته ډېره تمه وي په اسلام كې څكه ما په جنت كې په خپله مخ كې ستا د پښو اواز واورېدو .

حضرت بلال ورته وفرمايل : مَا عَمِلْتُ عَمَلًا أَرْجَى عِنْدِي أَنِّي لَمْ أَطَهِّرْ طَهُورًا فِي سَاعَةِ لَيْلٍ أَوْ نَهَارٍ إِلَّا صَلَّيْتُ بِذَلِكَ الطُّهُورِ مَا كُتِبَ لِي أَنْ أَصْلِيَ . 1

ترجمة : ما هېڅ داسې عمل نه دی کړی چې زما ورته ډېره تمه وي مگر دا چې كله هم زه اودس وكوم د شپې په كوم ساعت كې او يا د ورځې مگر زه د هغه اوداسه نه وروسته خامخا دومره مونځ كوم چې الله ماته ليكلي وي .

له جگړې ، درواغو او بد اخلاقي ځان ساتونکي

هغه کس چې لانجه نه کوي هغه کس چې درواغ نه وايي او هغه کس چې اخلاق يې ښه وي د هغوی لپاره هم د جنت وعده شوېده رسول الله ﷺ فرمايلي دي چې زه ورته په جنت کې د کور ذمه وار یم رسول الله ﷺ فرمايي : **أَنَا زَعِيمٌ بِبَيْتٍ فِي رَيْضِ الْجَنَّةِ لِمَنْ تَرَكَ الْمِرَاءَ وَإِنْ كَانَ مُحِقًّا ، وَبَيْتٍ فِي وَسْطِ الْجَنَّةِ لِمَنْ تَرَكَ الْكُذْبَ وَإِنْ كَانَ مَازِحًا ، وَبَيْتٍ فِي أَعْلَى الْجَنَّةِ لِمَنْ حَسَنَ خُلُقُهُ** .¹

ترجمة : زه د جنت په ماحول کې د يو کور ضمانت کوم هغه چا ته چې لانجه يې پرېښوده اگر که په حق هم وي او زه د يو کور ضمانت کوم د جنت په مينځ کې د هغه چا لپاره چې درواغ يې پرېښودل اگر که په ټوکه کې هم وي او زه د جنت په لوړه برخه کې د يو کور ضمانت کوم د هغه چا لپاره چې اخلاق يې ښه وي .

په جمع مونځ کوونکي

هغه کس چې مونځونه په جمع سره کوي د هغه لپاره هم رسول الله ﷺ جنت ياد کړی دی رسول الله ﷺ فرمايي : **مَنْ غَدَا إِلَى الْمَسْجِدِ وَرَاحَ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُ نُزُلَهُ مِنَ الْجَنَّةِ كُلَّمَا غَدَا أُورَاحَ** .²

ترجمة : څوک چې په سحر کې او يا په ماښام کې جومات ته لاړو الله ورته په جنت کې مېلمستيا تياروي هر وخت چې دی په سحر يا ماښام کې ځي .

ډېرې سجدې کوونکي

¹ رواه ابو داود

² متفق عليه

هغه کس چې ډېرې سجدې کوي رسول الله ﷺ د هغه کس لپاره هم جنت ياد کړې دي حضرت ربیعة بن کعب الاسلمي فرمايي : **كُنْتُ أُبَيِّتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَيْتُهُ بِوَضُوئِهِ وَحَاجَّتِهِ ، فَقَالَ لِي : سَلْ ، فَقُلْتُ : أَسْأَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِي الْجَنَّةِ ، قَالَ : أَوْ غَيْرَ ذَلِكَ ؟ قُلْتُ : هُوَ ذَاكَ ، قَالَ : فَأَعْنِي عَلَى نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السُّجُودِ .**¹

ترجمة : ما به شپه د رسول الله ﷺ سره کوله ما به هغه ته د اوداسه اسباب او نور حاجتونه تيارول رسول الله ﷺ راته وويل : سوال وکه څه شي غواړي؟ ما ورته وويل : په جنت کې ستا ملگري غواړم بيا يې راته وويل : نور څه؟ ما ورته وويل دا بس .. بيا رسول الله ﷺ راته وويل : زما سره د خپل نفس باندې زما سره په ډېرو سجدو سره مرسته وکوه (يعني لما سره ډېرې سجدې وکوه پدې سره به تاته جنت درکړل شي) .

ښه حج کوونکی

هغه څوک چې حج وکوي او په ښه طريقه يې وکوي تردې چې حج يې قبول شي دا هم جنت ته د ننوتلو ذريعه کيږي رسول الله ﷺ فرمايي : **الْحَجُّ الْمَبْرُورُ لَيْسَ لَهُ جَزَاءٌ إِلَّا الْجَنَّةُ .**²

ترجمة : د قبول شوي حج لپاره بل اجر نشته مگر جنت دی .

آية الكرسي تلاوت کوونکی

هغه کس چې د هر مانځه نه وروسته آية الكرسي تلاوت کوي له هغه سره هم د جنت وعده شوېده

¹ رواه البخاري

² رواه البخاري

رسول الله ﷺ فرمایي : مَنْ قَرَأَ آيَةَ الْكُرْسِيِّ ذُبِرَ كُلُّ صَلَاةٍ مَكْتُوبَةٍ لَمْ يَمْنَعْهُ مِنْ دُخُولِ الْجَنَّةِ، إِلَّا الْمَوْتُ.¹

ترجمة : چا چې د هر فرض مانځه نه وروسته آية الكرسى تلاوت كوله هغه جنت ته له ننوتلو څخه صرف مرگ منع كوي (يعني دده او د جنت د ننوتلو په مينځ كې صرف مرگ دى كله چې مرگ واقع شي دى به جنت ته لار شي)

سيد الاستغفار ويونكى

سيد الاستغفار يوه دعاء ده هغه كسان چې دا وايي رسول الله ﷺ هغه ته هم جنت ياد كړى دى سَيِّدُ الْإِسْتِغْفَارِ أَنْ تَقُولَ اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ لَكَ بِذُنُوبِي فَاعْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ قَالَ وَمَنْ قَالَهَا مِنَ النَّهَارِ مُوقِنًا بِهَا فَمَاتَ مِنْ يَوْمِهِ قَبْلَ أَنْ يُمْسِيَ فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَمَنْ قَالَهَا مِنَ اللَّيْلِ وَهُوَ مُوقِنٌ بِهَا فَمَاتَ قَبْلَ أَنْ يُصْبِحَ فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ.²

ترجمة : سيد الاستغفار دادى چې ته ووايي اى زما الله ته زما رب يې د تا نه بغير بل معبود نشته تا زه پيدا كړى يم زه ستا بنده يم زه ستا په عهد او وعده ولاړ يم ترڅو چې زما وس وي زه په تا باندې پناه غواړم د شر د هغه څه نه چې ما كړي دي زه تاته ستا د نعمت سره رجوع كوم او د خپلو گناهونو سره او ته ماته زما گناهونه و بښه ځكه گناهونه صرف ته بښي رسول الله ﷺ فرمايل چا چې له يقين سره دا د ورځې وويل نو پدې ورځ چې مړ شي مخكې له ماښام نه نو دا له اهل الجنت څخه دى او چا چې د شپې له يقين سره وويل په همدې شپه كې تر صبا وړاندې

¹ سلسلة الاحاديث الصحيحة

² رواه البخاري

مړ شو جنت ته به ننوزي .

په ورځ کې ۱۲ رکعتہ سنت کوونکی

هغه څوک چې په شپه او ورځ کې دولس رکعتہ سنت مونځ کوي له هغه سره هم د جنت وعده شوېده او دا همدا سنت دي چې مونږ یې ۲ رکعتہ سحر ۶ رکعتہ ماسپښین ۲ رکعتہ ماشام ۲ رکعتہ ماسخوتن کوو رسول الله ﷺ فرمایي : مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يُصَلِّيَ لِلَّهِ كُلَّ يَوْمٍ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً نَّطُوعًا غَيْرَ فَرِيضَةٍ إِلَّا بَنَى اللَّهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ .¹

ترجمه : یو مسلمان بنده چې د الله لپاره دولس رکعتہ نفلي مونځ وکوي بغیر د فرض نه الله د هغه لپاره په جنت کې کور جوړوي .

له اوداسه نه وروسته دعاء کوونکی

هغه کس چې په سمه توګه اودس وکوي د هغه لپاره هم جنت یاد کړل شوی دی الله فرمایي : مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ يَتَوَضَّأُ فَيُبَلِّغُ - أَوْ فَيَسْبِغُ - الْوُضُوءَ ثُمَّ يَقُولُ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ إِلَّا فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَّةِ يَدْخُلُ مِنْ أَيِّهَا شَاءَ .²

ترجمه : هغه څوک چې اودس وکوي او خپل اودس په ښه توګه وکوي بیا ووايي أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ دده لپاره د جنت آته دروازی خلاص شي له کومې نه یې چې خوښه وي داخل د شي .

د اولاد په جدایي صبر کوونکی

هغه کس چې دده نه وړاندې دده اولاد وفات شي دی

په هغه باندې په سمه توگه صبر وكوي ددې صبر په بدل كې هم د انسان سره د جنت وعده شوېده رسول الله ﷺ فرمايي : من احتسب ثلاثاً من صلبه أدخله الله الجنة قالت امرأة واثنان قال واثنان .¹

ترجمة : هغه چې صبر وكوي په دريو كسانو باندې چې دده له صلب يعني دده له نسل نه يعني دده اولاد وفات شي الله به هغه جنت ته ننباسي يوې ښځې پوښتنه وكوله او كه دوه وي؟ رسول الله ﷺ وفرمايل هو او كه دوه هم وي .

د یتیم کفالت کوونکی

هغه کس چې د یو یتیم ساتنه وکوي او د هغه کفالت وکوي رسول الله ﷺ فرمایي **أَنَا وَكَافِلُ الْيَتِيمِ كَهَاتَيْنِ فِي الْجَنَّةِ ، وَأَشَارَ بِالسَّبَابَةِ وَالْوُسْطَى**.¹

ترجمة : زه او د یتیم ساتونکی به په جنت کې داسې وو لکه دا دوه گوتې سبابه او وسطی گوتې یې سره یو ځای ونيولې (یعنې په گوتو سره یې اشاره وکوله چې هغه څوک چې د یتیم پالنه کوي هغه به لما سره په جنت کې داسې ملگری وي لکه دا دوه گوتې چې سره یو ځای دی .

د بیمار پوښتنه کوونکی

هغه څوک چې بغیر د څه دنیايي غرض نه د کوم بیمار پوښتنې ته ورځي دې ته هم رسول الله ﷺ جنت یاد کړی دی حضرت ثوبان د رسول الله ﷺ ازاد کړل شوی غلام وو هغه فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي : **مَنْ عَادَ مَرِيضًا لَمْ يَزَلْ فِي خُرْفَةِ الْجَنَّةِ قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا خُرْفَةُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ جَنَاهَا**.²

ترجمة : څوک چې د بیمار پوښتنې ته ورغلو هغه به په خرفه الجنة کې وي چا ورڅخه پوښتنه وکوله چې دا خرفه الجنة څه شی دي یا رسول الله ﷺ هغه ﷺ وفرمایي : دا د جنت هغه ځای دی چې جنتیان پکې میوې شکوي . . یعنی هغه کس چې پدې نېک عمل کې آخته شي هغه داسې دی لکه د جنت له مېوو نه چې میوې راشکوي او په یوه حدیث کې ورسره د حتی يرجع (تردې چې بېرته را وگرځي) لفظ هم زیات شوی دی .

¹ صحیح البخاري

² رواه مسلم

له هر مانځه نه وروسته تسبيح ويونكي

هغه کس چې د هر مانځه نه وروسته لس ځله سبحان الله وايي او لس ځله الحمد لله وايي او لس ځله الله اکبر وايي لدې سره هم د جنت وعده شوېده رسول الله ﷺ فرمايي : **خِلَتَانِ لَا يُحْصِيهِمَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ إِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ ، أَلَا وَهَمًا يَسِيرٌ ، وَمَنْ يَعْمَلْ بِهِمَا قَلِيلٌ ، يُسَبِّحُ اللَّهَ فِي ذُبُرٍ كُلِّ صَلَاةٍ عَشْرًا ، وَيَحْمَدُهُ عَشْرًا ، وَيُكَبِّرُهُ عَشْرًا ، قَالَ فَأَنَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْقِدُهَا بِيَدِهِ ، قَالَ : فَمِثْلُكَ خَمْسُونَ ، وَمِائَةٌ بِاللِّسَانِ ، وَأَلْفٌ وَخَمْسُ مِائَةٍ فِي الْمِيزَانِ ، وَإِذَا أَخَذْتَ مَضْجَعَكَ تُسَبِّحُهُ ، وَتُكَبِّرُهُ ، وَتَحْمَدُهُ مِائَةً ، فَمِثْلُكَ مِائَةٌ بِاللِّسَانِ ، وَأَلْفٌ فِي الْمِيزَانِ ، فَأَيُّكُمْ يَعْمَلُ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ أَلْفَيْنِ وَخَمْسَ مِائَةٍ سَبِّحَةً ؟ قَالُوا : فَكَيْفَ لَا يُحْصِيهَا ؟ قَالَ : يَأْتِي أَحَدُكُمْ الشَّيْطَانُ وَهُوَ فِي صَلَاتِهِ فَيَقُولُ : اذْكُرْ كَذَا ، اذْكُرْ كَذَا ، حَتَّى يَنْفَنِلَ ، فَلَعَلَّهُ لَا يَفْعَلُ ، وَيَأْتِيهِ وَهُوَ فِي مَضْجَعِهِ ، فَلَا يَزَالُ يُؤْمُهُ حَتَّى يَنَامَ .¹**

ترجمة : دوه عادتونه دي چې يو مسلمان يې وساتي جنت ته ننوزي خبر دار هغه دواړه اسانه دي او هغه څوک چې عمل پرې کوي د هغه لپاره لږ دي (ډېر وخت نه نيسي او ډېر تکليف نه غواړي) د هر مانځه نه وروسته به لس ځله سبحان الله وايي او لس ځله به الحمد لله ووايي او لس ځله به الله اکبر ووايي صحابي فرمايي ما رسول الله ﷺ وليد چې په لاس يې حساب کول ويل يې دا يو سل او پنځوس دي په ژبه باندي او په تله کې دا يو زر پنځه سوه دي او کله چې تا ډډه ووهله سل ځله به د الله تسبيح ووايي سل ځله به الله اکبر ووايي او سل ځله به الحمد لله ووايي دا په ژبه باندي سل دي او د نيکو عملونو په تله کې زر دي پتاسې کې څوک داسې دي چې په شپه او ورځ کې دوه زره پنځه سوه گناهونه کوي؟ صحابه وو ورته وويل نو بيا داسې به څوک وي چې دا تسبيح

تحمید او تکبیر به نه پوره کوي؟ رسول الله ﷺ فرمایل : کله چې په تاسې کې یو کس په مانځه ودریږي شیطان ورته راځي د هغه ذهن بلې خوا ته د اړولو کوښښ کوي ورته وایي دا دریاد کړه ، دا دریاد کړه ، دا دریاد کړه تردې چې د هغه ذهن له مانځه نه بلې خوا ته واړوي او کله کېدای شي پدې ونه توانیږي او کله چې یو انسان د خوب لپاره ډډه ووهي هغه ورته راشي دده د ویده کولو کوښښ کوي تردې چې ویده یې کړي .

په ړوندوالي صبر کوونکی

هغه څوک چې سترگې یې ړندې وي او دی ورباندې صبر وکوي له هغه سره هم د جنت وعده شوېده حضرت ابو هريره فرمائي رسول الله ﷺ فرمایل يَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: مَنْ أَذْهَبْتُ حَبِيبَتِيهِ فَصَبَرَ وَاحْتَسَبَ لَمْ أَرْضَ لَهُ بِثَوَابِ دُونَ الْجَنَّةِ¹ .

ترجمة : الله فرمایي د چا چې زه دوه گرانې ترې بوزم (دوه سترگې یې ړندې کړم) هغه صبر وکوي او شکایت ونه کوي زه هغه ته د جنت نه بغیر په بل ثواب باندې نه خوشحالیږم (د هغه لپاره مې صرف د جنت ثواب خوښ دی) .

غریب ته مهلت ورکونکی

هغه کس چې په کوم غریب باندې یې قرض وي او د هغه په وس کې دومره څه نه وي چې دده قرض خلاص کړي نو دی هغه ته تر هغه وخته پورې صبر وکوي چې د هغه لاس فراخ شي دې کس ته هم د جنت وعده ورکړل شوېده حضرت ابوهرېره رضی الله عنه فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي : **كَانَ رَجُلٌ يُدَايِنُ النَّاسَ ، فَكَانَ يَقُولُ لِقَتَاهُ : إِذَا أَتَيْتَ مُعْسِرًا ، فَتَجَاوَزْ عَنْهُ لَعَلَّ اللَّهَ يَتَجَاوَزُ عَنَّا ، فَلَقِيَ اللَّهَ فَتَجَاوَزَ عَنْهُ .**¹

ترجمة : یو سړی وو له خلکو سره به یې قرضونه کول بیا به یې خپل نوکر ته ویل کله چې داسې چا ته په قرض پسې ورغلې چې د هغه لاس تنگ وو نو هغه ته تر قرض وړ تېرېږه کېدای شي الله مونږ ته تر گناهونو را تېر شي بیا د الله سره مخامخ شو الله تر گناهونو وړ تېر شو .

په تجارت کې اساني کوونکی

هغه کس چې په تجارت کې سختي نه کوي کله چې کوم شی اخلي او کله چې شی خرڅوي نرم اخلاق کوي او له سختي نه کار نه اخلي له هغه سره هم د جنت وعده شوېده رسول الله ﷺ فرمایي : **عَفَرَ اللَّهُ لِرَجُلٍ كَانَ قَبْلَكُمْ كَانَ سَهْلًا إِذَا بَاعَ ، سَهْلًا إِذَا اشْتَرَى ، سَهْلًا إِذَا اقْتَضَى .**²

ترجمة : الله یو کس ته بېښنه وکوله چې ستاسې نه وړاندې وو هغه به اساني کوله کله به یې چې کوم شی خرڅول او یا اخیستل او اساني به یې کوله کله به یې چې فیصله کوله .

سورة اخلاص زیات ویونکی

هغه کس چې سورة الاخلاص (قل هو الله احد) زيات وايي
لدي کس سره هم د جنت وعده شوېده حضرت ابو
هريره فرمايي زه د رسول الله ﷺ سره روان وم
چې له يو کس نه يې واورېدل هغه سورة الاخلاص
ويلو رسول الله ﷺ وفرمايل (دده لپاره واجب شو)
ما پوښتنه وکوله څه واجب شو؟ رسول الله ﷺ راته
وويل جنت .¹

په بل يو حديث کې رسول الله ﷺ فرمايي : مَنْ قَرَأَ (قُلْ
هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ) حَتَّى يَخْتِمَهَا عَشْرَ مَرَّاتٍ بَنَى اللَّهُ لَهُ قَصْرًا فِي الْجَنَّةِ «». فَقَالَ عُمَرُ
بْنُ الْخَطَّابِ إِذَا اسْتَكْبَرْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ -صلى الله عليه وسلم-
اللَّهُ أَكْثَرُ وَأَطْيَبُ .²

ترجمة : چا چې قل هو الله احد وويل تردې چې لس
ځله يې ختم کړو الله ورته په جنت کې قصر جوړوي
حضرت عمر ورته وويل : که چا زياته وويل يا
رسول الله ﷺ ؟ رسول الله ﷺ ورته وويل : الله زياتونکى
او نور هم ښه ثواب ورکونکى دى .

له لاري ضرر لري کونکی

هغه څوک چې د مسلمانانو له لاري څخه داسې شي لري کړي چې دوی ته ضرر رسوي ددې کس سره هم د جنت وعده شوېده رسول الله ﷺ فرمایي: **إِنَّ شَجَرَةَ كَأَنَّتْ تُؤْذِي الْمُسْلِمِينَ فَجَاءَ رَجُلٌ فَقَطَعَهَا فَدَخَلَ الْجَنَّةَ** .¹

ترجمة: بېشکه یوه ونه وه مسلمانانو ته به یې ضرر رسولو یو کس راغلو هغه ونه یې پرې کړه هغه ددې عمل له امله جنت ته ننوتلو .

دخپلو جینکو پالونکی

هغه څوک چې په ښه طریقه سره د خپلو خویندو او یا خپلو لورانو پالنه وکوي لدې سره هم د جنت وعده شوېده حضرت ابو سعید الخدری فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي: **لَا يَكُونُ لِأَحَدِكُمْ ثَلَاثُ بَنَاتٍ، أَوْ ثَلَاثُ أَخَوَاتٍ، فَيَحْسِنُ إِلَيْهِنَّ إِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ** .²

ترجمة: پتاسې کي د کوم یو چې درې لوراني یا درې خوراني وي له هغوی سره نیکی وکوي دا کس جنت ته ننوزي .

سلام خپرونکی او له مسلمانانو سره مینه کونکی

هغه کس چې په مسلمانانو باندې سلام اچوي که هغوی پېژني او که یې نه پېژني او له مسلمانانو سره مینه کوي ددې کس سره هم د جنت وعده شوېده حضرت ابو هريره فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي: **لَا تَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى تُؤْمِنُوا وَلَا تُؤْمِنُوا حَتَّى تَحَابُّوا** .³

¹ رواه مسلم
² سنن الترمذي

أَدُلُّكُمْ عَلَى شَيْءٍ إِذَا فَعَلْتُمُوهُ تَحَابَبْتُمْ أَفْشُوا السَّلَامَ بَيْنَكُمْ .¹

ترجمة : تاسې جنت ته تر هغه وخته پورې نه ننوزئ تردې چې تاسې ايمان راوړئ او تاسې ايمان تر هغه وخته پورې نه راوړي ترڅو يو د بل سره مينه وکړئ او زه داسې شی تاسې ته وښايږم چې په هغې سره ستاسې په مينځ کې مينه زياته شي؟ په خپل مينځ کې سلام عام کړئ .

د خاوند اطاعت کونکې ښځه

هغه ښځه چې په روا کارونو کې د خاوند اطاعت کوي او د هغه سره ښه رويه کوي دې ښځې ته هم جنت ته د تلو زيری ورکړل شوی دی حضرت ام سلمه فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل :

أَيُّمَا امْرَأَةٍ مَاتَتْ وَرَوْجُهَا عَنْهَا رَاضٍ دَخَلَتْ الْجَنَّةَ .²

ترجمة : کومه ښځه چې پداسې حالت کې وفات شي چې خاوند يې له دې څخه رضا وي دا به جنت ته ننوزي .

له خلکو څخه سوال نه کوونکی

هغه کس چې له خلکو څخه د شيانو سوال نه کوي او کوم شی چې ورسره وي هغه په کار راوړي او چې ورسره نه وي نو الله ته صبر کوي ددې کس سره هم د جنت وعده شوېده له حضرت ثوبان څخه روایت دی رسول الله ﷺ فرمایي: مَنْ يَكْفُلُ لِي أَنْ لَا يَسْأَلَ النَّاسَ شَيْئًا وَاتَّكَفَلَ لَهُ بِالْجَنَّةِ؟ فَقَالَ ثُوبَانُ: أَنَا، فَكَانَ لَا يَسْأَلُ أَحَدًا شَيْئًا.¹

ترجمة: څوک داسې شته چې ماته ددې ضمانت راکړي چې دی به له خلکو څخه هېڅ شی نه غواړي زه به ورته د جنت ضمانت وکوم؟ حضرت ثوبان ورته وویل: زه بیا به حضرت ثوبان هېڅ شی له چا څخه نه غوښتل.

د مور پلار سره ښه رویه کوونکی

هغه کس چې مور پلار یې ژوندي وي او دی ورسره ښه رویه کوي د هغوی د خوشحاله ساتلو فکر کوي او د هغوی په خدمت کې کوښښ کوي لدې کس سره هم د جنت وعده شوېده حضرت ابو هريره فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي: رَغِمَ أَنْفُهُ، ثُمَّ رَغِمَ أَنْفُهُ، ثُمَّ رَغِمَ أَنْفُهُ، قِيلَ: مَنْ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: مَنْ أَدْرَكَ وَالِدَيْهِ عِنْدَ الْكِبَرِ أَحَدَهُمَا أَوْ كِلَيْهِمَا ثُمَّ لَمْ يَدْخُلِ الْجَنَّةَ.²

ترجمة: تاواني شو بیا تاواني شو بیا تاواني شو... چا ورڅخه پوښتنه وکوله څوک یا رسول الله؟ رسول الله ﷺ وفرمایي: هغه چې مور پلار یې پداسې حال کې وو چې بوډا گان وو یو او یا دواړه بیا هم دی د هغوی د خدمت له امله جنت ته لار نشي.

¹ سنن ابی داود

² رواه مسلم

د ښه زړه لرونکی

هغه کس چې ښه زړه ولري او په زړه کې د چا لپاره څه ډول کینه او دښمني ونه ساتي او د ټولو مسلمانانو لپاره خیر غوښتونکی وي نه له چا سره دښمني کوي او نه له چا سره کینه کوي او نه د چا د نعمتونو له وجې له هغه څخه سوزي بلکه کوم شی چې ده ته الله ورکړې وي پرې خوشحاله وي او چې نورو مسلمانانو ته یې ورکړي وي په هغې هم خوشحال وي او د بل چا نعمتونه ورته سخت نه تماميږي دا کس هم جنتي وي حضرت انس بن مالک فرمایي مونږ له رسول الله ﷺ سره ناست وو رسول الله ﷺ وفرمایل : **يَطْلُعُ عَلَيْكُمُ الْآنَ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ** (تاسې ته اوس یو جنتي کس راځي) ددې خبرې نه وروسته یو کس راغلو چې له انصارو څخه وو له ږېرې مبارکې نه یې د اوداسه اوبه څڅېدلې خپلې خپلې یې په چپ لاس کې نیولې وې کله چې صبا شو رسول الله ﷺ بیا په همدې ډول خبره وکوله بیا هماغه کس په هماغه حالت کې را ننوتلو کله چې دریمه ورځ شوه رسول الله ﷺ بیا هماغه ډول خبره وکوله بیا هماغه کس په هماغه حالت کې را ننوتلو کله چې رسول الله ﷺ له مجلس نه پاڅېدو حضرت عبد الله بن عمرو بن العاص پدې کس پسې شو دې کس ته یې وویل ما د خپل پلار سره څه خبرې وکولې (خوله مې ورسره ووهله) اوس مې قسم کړی دی چې زه به خپل پلار ته تر دریو شپو پورې نه ورځم کله چې ته خپل کور ته ځي ما به له ځان سره بوزې چې زه لتا سره شپه وکوم؟ هغه کس ورته وویل : هو حضرت انس بن مالک فرمایي بیا حضرت عبد الله ﷺ مونږ ته قصه کوله چې ده له هغه کس سره دری شپې وکولې هغه د شپې مانځه ته نه پاڅېدو خو صرف کله به چې په بستره باندې وښورېدو او یا به په اړخ واوښتو

نو الله به يې ياد کړو او تکبير به يې وويلو
 تردې چې د سحر مانځه ته به پاڅېدو حضرت عبد
 الله فرمايي خو ده به چې کله خبرې کولې صرف ښې
 خبرې به يې کولې کله چې درى شپې تېرې شوې او
 زه نېږدې وم چې دده عمل سپک وگڼم ورته مې
 وويل : اې عبد الله زما او د پلار په منځ کې مو
 هېڅ ډول غصه او تيزې خبر نه وې شوې خو صرف
 خبره دا وه چې ما له رسول الله ﷺ څخه واوريډل
 چې هغه درى ځله ويل : اوس تاسې ته يو جنتي کس
 را ننوزي او پدې دريو واړو وارونو باندې ته
 را ننوتلې ما وغوښتل چې زه لتا سره پاتې شم
 ترڅو ووينم ستا عمل څه دى بيا زه هم ستا په
 عمل پسې اقتداء وکوم خو اوس ما ته وليدې چې
 ته خو څه ډېر عمل هم نه کوې دې مقام ته ته
 څه شي ورسولې چې رسول الله ﷺ ستا په اړه د جنت
 گواهي ورکوي؟ هغه کس راته وويل زما اعمال
 همدا وو چې تا وليدل کله چې زه ترې روان شوم
 بېرته يې ور وغوښتم راته يې وويل : زما
 عملونه همدا وو چې تا وليدل خو يوه خبره بله
 هم شته چې زه په زړه کې د هېڅ مسلمان لپاره
 کينه او دشمني نه لرم او چا ته چې الله څه ډول
 نعمت ورکړى وي زما ورسره کينه نه کيږي حضرت
 عبد الله ورته ووي بس دا هغه شى دې چې ته يې
 دې مقام ته رسولی يې او دا مونږ نشو کولى .¹

له حیواناتو سره نیکی کوونکی

هغه کس چې له غیر ناطقه حیواناتو سره ښه رویه کوي هغوی ته هم جنت یاد شوی دی له حضرت ابي هريره څخه روایت دی هغه فرمایي رسول الله ﷺ فرمایل : **أَنَّ رَجُلًا رَأَى كَلْبًا يَأْكُلُ الثَّرَى مِنَ الْعَطَشِ ، فَأَخَذَ الرَّجُلُ خُفَّهُ ، فَجَعَلَ يَغْرِفُ لَهُ بِهِ حَتَّى أَرَوَاهُ ، فَشَكَرَ اللَّهُ لَهُ ، فَأَدْخَلَهُ الْجَنَّةَ .**¹

ترجمة : یو سړي یو سپی ولیدو چې لنده خاوره یې د تندې له امله خورله هغه سړي خپله موزه را واخیسته په هغه کې یې اوبه ورکړې تردې چې د هغه تنده یې ورماته کړه الله ته دده دا عمل خوښ شو او دا کس یې جنت ته دا خل کړو .

د سحر او ماسخوتن مונځ کوونکی

هغه کس چې د سحر او ماسخوتن مونځ د پابندي سره کوي رسول الله ﷺ دې کس ته هم جنت یاد کړی دی د حضرت ابي بکر بن ابو موسی څخه روایت دی هغه له خپل پلار نه روایت کوي چې رسول الله ﷺ فرمایل : **مَنْ صَلَّى الْبُرْدَيْنِ دَخَلَ الْجَنَّةَ .**²

ترجمة : څوک چې دواړه یخ مونځونه وکوي هغه به جنت ته ننوزي .

¹ متفق علیه

² متفق علیه

د فرج او ژبي ساتونکی

هغه څوک چې خپله شرمگاه او خپله ژبه له ناروا څخه ساتي د هغه لپاره رسول الله ﷺ د جنت ضمانت کړی دی له حضرت سهل بن سعد نه روایت دی له رسول الله ﷺ نه روایت دی چې هغه فرمایي: مَنْ يَضْمَنْ لِي مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ وَمَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ أَضْمَنْ لَهُ الْجَنَّةَ .¹

ترجمة: څوک چې ماته ضمانت وکوي د هغه چې د دوو ږيرو په مینځ کې ده او د هغه چې د دوو پښو په مینځ کې دی زه ورته د جنت ضمانت ورکوم .

سبحان الله و بحمده ويونکی

هغه څوک چې سبحان الله و بحمده ډېر وايي رسول الله ﷺ د هغه لپاره هم جنت ياد کړی دی له حضرت جابر بن څخه روایت دی هغه فرمایي رسول الله ﷺ فرمایي: مَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ غُرِسَتْ لَهُ نَخْلَةٌ فِي الْجَنَّةِ .²

ترجمة: چا چې سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ وويل د هغه لپاره په جنت کې خورما نېال کيږي .

نيڪ عملونه ڪوونڪي

شپڙ داسي نيڪ عملونه دي چي هغه ٿول ڻوڪ وڪوي
 د هغه لپاره هم رسول الله ﷺ جنت ياد ڪري دي
 حضرت عبادۃ بن صامت فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل
 : " اَضْمِنُوا لِي سِتًّا مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَضْمِنَ لَكُمْ الْجَنَّةَ إِذَا حَدَّثْتُمْ - وَأَوْفُوا
 إِذَا وَعَدْتُمْ وَأَدُّوا إِذَا أَوْثَقْتُمْ - وَاحْفَظُوا فُرُوجَكُمْ وَغَضُّوا أَبْصَارَكُمْ - وَكُفُّوا
 أَيْدِيَكُمْ ¹ .

ترجمة : ماته د شپڙو شيانو ضمانت راڪري زه
 تاسي ته د جنت ضمانت درڪوم ^۱ . رشتيا وياست
 ڪله چي خبري ڪوي .

۲ . وفا ڪوي ڪله مو چي وعده ڪوله .

۳ . ٻيڙهه يي ورڪوي ڪله چي درته امانت درڪول
 ڪيڊو .

۴ . د خپلو فرجونو ساتنه ڪوي .

۵ . خپل نظرونه ٻڙهه سائي (چي په ناروا باندي
 ونه لگيري) .

۶ . خپل لاسونه خلکو ته له ضرر ورڪولو نه سائي
 .

په بل روايت ڪي حضرت ابو هريره فرمايي رسول
 الله ﷺ وفرمايل مَنْ أَصْبَحَ مِنْكُمْ الْيَوْمَ صَائِمًا ؟ ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ :
 أَنَا ، قَالَ : فَمَنْ تَبَعَ مِنْكُمْ الْيَوْمَ جَنَازَةً ؟ ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : أَنَا ، قَالَ :
 فَمَنْ أَطْعَمَ مِنْكُمْ الْيَوْمَ مِسْكِينًا ؟ ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : أَنَا ، قَالَ : فَمَنْ
 عَادَ مِنْكُمْ الْيَوْمَ مَرِيضًا ؟ ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ : أَنَا ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : مَا اجْتَمَعَ فِي امْرِئٍ إِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ .¹

ترجمة : نن چا روژه نيولي ده ؟ حضرت ابو بکر ورته ما بيا رسول الله ﷺ وفرمايل : څوک نن د کوم مسلمان جنازې ته ورغلي دي؟ حضرت ابو بکر ورته وويل : زه رسول الله ﷺ وفرمايل : چا نن مسکين ته خوراک ورکړی دی؟ حضرت ابو بکر صديق وفرمايل : ما رسول الله ﷺ وفرمايل : چا نن د بيمار پوښتنه کړېده حضرت ابو بکر صديق ورته وويل : ما بيا رسول الله ﷺ وفرمايل دا شيان چې په يو مؤمن کې جمع شي هغه به جنت ته ننوزي .

په بل يو حديث کې رسول الله ﷺ فرمايي : أَيُّهَا النَّاسُ أَفْشُوا السَّلَامَ وَأَطْعِمُوا الطَّعَامَ وَصَلُّوا وَالنَّاسُ نِيَامَ تَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ بِسَلَامٍ .²

ترجمة : اي خلکو سلام خپور کړئ خلکو ته خوراک ورکړي پداسې وخت کې مونځ وکوئ چې خلک ويده وي تاسې به په امن سره جنت ته ننوزئ .

د ښځو لپاره په يو حديث کې رسول الله ﷺ فرمايي : إِذَا صَلَّتِ الْمَرْأَةُ خَمْسَهَا وَصَامَتْ شَهْرَهَا وَحَفِظَتْ نَفْسَهَا وَأَطَاعَتْ زَوْجَهَا دَخَلَتْ جَنَّةَ رَبِّهَا .³

ترجمة : کومه ښځه چې خپل پنځه مونځونه وکوي ، خپله مياشت يې روژه ونيسي او خپل نفس وساتي او د خپل خاوند مطابعت وکوي هغه به د خپل رب جنت ته ننوزي .

د الله لپاره مينه کوونکی

1 رواه مسلم
2 سنن الترمذي
3 رواه ابن حبان

هغه کس چې د الله لپاره له بل چا سره مينه کوي له هغوی سره هم د جنت وعده شوېده رسول الله ﷺ فرمايي : **إن المتحابين في الله لثرى** غرفهم في الجنة كالکوکب الطالع الشرقي أو الغربي فيقال من هؤلاء فيقال هؤلاء المتحابين في الله عز وجل .¹

ترجمة : بېشکه هغه کسان چې له يو بل سره د الله لپاره محبت کوي د هغوی کوټې په جنت کې لکه ستوري داسې ښکاره کيږي چې په شرق يا غرب کې را ختلی وي ويل کيږي به چې دا څوک دي؟ په ځواب کې به ورته ويل کيږي دا هغه کسان دي چې له يو بل سره يې د الله لپاره محبت کاوه .

د بازار دعاء ويونکی

د حضرت عبد الله بن عمر څخه روايت دی رسول الله ﷺ فرمايل : **څوک چې بازار ته ننوزي او دا دعاء ووايي : لا إله إلا الله وحده لا شريك له له الملك وله الحمد يحيى ويميت وهو حي لا يموت بيده الخير وهو على كل شيء قدير** الله ورته زر زره نيکي وليکي او زر زره گناهونه ترې لرې کړي او په جنت کې ورته کور جوړ کړي .

د مانځه په صفونو کې خاليگاه ډکونکی

هغه کس چې د جمع په مانځه کې خالي ځای ډکوي او نه پریردي چې په صفونو کې خالي ځايونه پاتې شي دا هم ډېر غوره عمل دی او ددې عمل کونکي ته هم په جنت کې کور جوړيږي حضرت عائشه فرمايي رسول الله ﷺ فرمايل : **إن الله وملائكته يصلون على الذين يصلون الصفوف ومن سد فرجه بنى الله له بيتا في الجنة ورفع بها**

ترجمة : بېشکه الله او د هغه فرېستې درود لېږي په هغه چا باندې چې صفونه سره نېلوي او چا چې د صف خالي ځايونه ډک کړل الله به ورته په جنت کې کور جوړ کړي او ده ته به يوه درجه ور لږه کړي .

د څاښت په وخت ۱۲ رکعتۀ مونځ کوونکی

هغه څوک چې د څاښت په وخت کې ۱۲ رکعتۀ نفلي مونځ کوي دده لپاره هم په جنت کې يوه بنگله جوړېږي حضرت انس بن مالک فرمايي ما له رسول الله ﷺ څخه واورېدل چې فرمايل يې : من صلى الضحى ثنتي عشرة ركعة بنى الله له قصرًا من ذهب في الجنة .²

ترجمة : چا چې د څاښت په وخت کې ۱۲ رکعتۀ مونځ وکولو الله به ورته په جنت کې د سرو زرو بنگله جوړه کړي .

¹ رواه ابن ماجه

² رواه ابن ماجه

ماخذونه

1. القرآن الكريم
2. البرهان في علوم القرآن
3. الإتيان في علوم القرآن
4. تفسير القرطبي
5. تفسير ابن كثير
6. تفسير الطبري
7. تفسير المنار
8. كابل في تفسير
9. صحيح البخاري
10. صحيح مسلم
11. سنن الترمذي
12. سنن النسائي
13. سنن أبي داود
14. سنن ابن ماجه
15. سنن الدارمي
16. سنن الدارقطني
17. شرح النووي على مسلم
18. فتح الباري شرح صحيح البخاري
19. حاشية السندي على ابن ماجه
20. عون المعبود
21. تحفة الأحوذى
22. مرقاة المفاتيح شرح مشكاة المصابيح
23. السيرة النبوية (ابن هشام)
24. كتاب الشفا بتعريف حقوق المصطفى

25. زاد المعاد
26. البداية والنهاية
27. جامع العلوم والحكم
28. سير أعلام النبلاء
29. بداية المجتهد ونهاية المقتصد
30. بيان المختصر شرح مختصر ابن الحاجب
31. بدائع الصنائع في ترتيب الشرائع
32. تحفة المحتاج في شرح المنهاج
33. جمع الوسائل في شرح الشامل
34. رد المحتار على الدر المختار
35. حلية الأولياء وطبقات الأصفياء
36. فتح القدير
37. البحر الرائق شرح كنز الدقائق
38. الأشباه والنظائر على مذاهب أبي حنيفة
النعمان
39. القواعد النورانية الفقهية
40. أنوار البروق في أنواع الفروق
41. مدارج السالكين بين منازل إياك نعبد وإياك
نستعين
42. الجواب الكافي لمن سأل عن الدواء الشافي
43. موعظة المؤمنين من إحياء علوم الدين
44. القاموس المحيط
45. لسان العرب
46. النهاية في غريب الحديث والأثر
47. مختار الصحاح
48. الحاوي للفتاوي

د مؤلف چاپ شوي آثار

1. د حضرت محمد د نبوت معجزې
پښتو
2. ښځه ځاله
پښتو
3. آښانه سوخته
فارسي
4. په اسلام کې د انسان حقوق
انګليسي
5. دين يې دام دی د دنیا په لار کې اېښی
پښتو
6. فرار از کزار
فارسي
7. له کزاره تېښته
پښتو
8. زور دين نوی مسلمان
پښتو
9. دم ډمکو جې او لیکوال
پښتو
10. اديان پشت در
فارسي
11. له دروازې تر شا دینونه
پښتو
12. د انصاف او اعتدال لاره
پښتو
13. کفري الفاظ
پښتو
14. کل بچه
فارسي
15. معلومات عمومي
فارسي
16. د حج لارښود
پښتو

او انگلیسی

17. محمد رسول الله سیرت اخلاق او پیژندنه

پښتو

18. د اسلامي تاریخ له پانو څخه اول

پښتو

19. د اسلامي تاریخ له پانو څخه دوهم

پښتو

20. د اسلامي تاریخ له پانو څخه دریم

پښتو

21. د اسلامي تاریخ له پانو څخه څلرم

پښتو

22. د اسلامي تاریخ له پانو څخه پنځم

پښتو

23. د اسلامي تاریخ له پانو څخه شپږم

پښتو

24. د اسلامي تاریخ له پانو څخه اوم

پښتو

25. د اسلامي تاریخ له پانو څخه آتم

پښتو

26. د اسلامي تاریخ له پانو څخه نهم

پښتو

27. د اسلامي تاریخ له پانو څخه لسم

پښتو

28. د فقهې کتابونو له پانو څخه اول

پښتو

29. د فقهې کتابونو له پانو څخه دوهم

پښتو

30. د فقهې کتابونو له پانو څخه درېم

پښتو

31. د فقهې کتابونو له پانو څخه څلورم

پښتو

32. د فقهي کتابونو له پاڼو څخه پنځم پښتو
33. د علم حديث مطالعه او انگليسي پښتو
34. د فقهي کتابونو له پاڼو څخه شپږم پښتو
35. کلمه طيبة پښتو
36. الدعاء پښتو
37. اللهم عربي، پښتو، انگليسي
38. المسجد پښتو
39. قرآني معلومات لمری برخه پښتو
40. سلام پښتو
41. د فقهي کتابونو له پاڼو څخه اومه برخه پښتو
42. د وخت ا هميت (لمری برخه) پښتو
43. د وخت ا هميت (دوهمه برخه) پښتو
44. د وخت ا هميت (دریمه برخه) پښتو
45. الحکمة ۱ پښتو
46. الحکمة ۲ پښتو
47. الحکمة ۳ پښتو
48. الحکمة ۴ پښتو
49. حتمي سفر (مرگ) پښتو
50. حتمي سفر (شهادت) پښتو

- پښتو
51. حتمي سفر (قتل)
- پښتو
52. حتمي سفر (ځانکدن)
- پښتو
53. حتمي سفر (کفن ، غسل ، جنازه)
- پښتو
54. حتمي سفر (قبر)
- پښتو
55. حتمي سفر (د قيامت وړې نښې)
- پښتو
56. حتمي سفر (د قيامت لويې نښې)
- پښتو
57. حتمي سفر (قيامت)
- پښتو
58. حتمي سفر (جنت)
- په لاس کې
- ستاسې